# कल्याणा



महागौरी





राजा चित्रकेतुको भगवान् शेषके दर्शन

ॐ पूर्णमदः पूर्णिमदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥ वन्दे वन्दनतुष्टमानसमितप्रेमप्रियं प्रेमदं पूर्णं पूर्णकरं प्रपूर्णनिखिलैश्वर्यैकवासं शिवम्। सत्यं सत्यमयं त्रिसत्यविभवं सत्यप्रियं सत्यदं विष्णुब्रह्मनुतं स्वकीयकृपयोपात्ताकृतिं शङ्करम्॥ गोरखपुर, सौर कार्तिक, वि० सं० २०७५, श्रीकृष्ण-सं० ५२४४, अक्टूबर २०१८ ई० पूर्ण संख्या ११०३ - राजा चित्रकेतुको भगवान् शेषके दर्शन

## मणालगौरं शितिवाससं स्फ्रुरिकरीटकेयुरकटित्रकङ्कणम्।

प्रसन्नवक्त्रारुणलोचनं वृतं ददर्श सिद्धेश्वरमण्डलैः प्रभुम्॥ राजा चित्रकेतुने देखा कि भगवान् शेषजी सिद्धेश्वरोंके मण्डलमें विराजमान हैं। उनका शरीर कमलनालके समान गौरवर्ण है। उसपर नीले रंगका वस्त्र फहरा रहा है। सिरपर किरीट, बाँहोंमें बाजूबंद, कमरमें करधनी

और कलाईमें कंगन आदि आभूषण चमक रहे हैं। नेत्र रतनारे हैं और मुखपर प्रसन्नता छा रही है। तदृर्शनध्वस्तसमस्तिकिल्बिषः स्वच्छामलान्तःकरणोऽभ्ययान्म्निः।

प्रवृद्धभक्त्या प्रणयाश्रुलोचनः प्रहृष्टरोमानमदादिपुरुषम् भगवान् शेषका दर्शन करते ही राजर्षि चित्रकेतुके सारे पाप नष्ट हो गये। उनका अन्त:करण स्वच्छ

और निर्मल हो गया। हृदयमें भक्तिभावकी बाढ़ आ गयी। नेत्रोंमें प्रेमके आँसू छलक आये। शरीरका एक-एक रोम खिल उठा। उन्होंने ऐसी ही स्थितिमें आदिपुरुष भगवान् शेषको नमस्कार किया।

[ श्रीमद्भागवतमहापुराण ]

राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। (संस्करण २,००,०००) कल्याण, सौर कार्तिक, वि० सं० २०७५, श्रीकृष्ण-सं० ५२४४, अक्टूबर २०१८ ई० विषय-सूची पृष्ठ-संख्या विषय विषय पुष्ठ-संख्या १- राजा चित्रकेतुको भगवान् शेषके दर्शन ...... ३ १४- भक्तकी साधना [गद्य-काव्य] ( श्रीछैलबिहारीजी गुप्त 'छैल') ... २२ १५- सरयू रामायणके हनुमान् (डॉ० श्री ए० बी० साईप्रसादजी) ..... २३ २– कल्याण...... ५ ३- महागौरी [आवरणचित्र-परिचय] ...... ६ १६ - विरह (श्रीइन्दरचन्दजी तिवारी) ......२६ ४- श्रीराम और भरतका अनिर्वचनीय प्रेम १७- संत-वचनामृत (वृन्दावनके गोलोकवासी संत पूज्य श्रीगणेशदास भक्तमालीजीके उपदेशपरक पत्रोंसे) ....... २७ (ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका) ......७ ५- नकद धर्म (श्रीनन्दलालजी टाँटिया)......८ १८- नथ [संत-चरित] (श्रीशिवचरणजी चौहान) ......२८ ६ - कैकेयीका सती होनेका प्रयास १९- अन्तकालमें क्या करें ? (श्रीरूपचन्दजी शर्मा) .............. २९ (मानस-मर्मज्ञ पं० श्रीरामिकंकरजी उपाध्याय) ......९ २०- श्रीरामचरितमानसमें शक्तितत्त्वनिरूपण (श्रीराधानन्दसिंहजी) ..... ३० ७- 'हे देव परम महादेव प्रभू' (श्रीशिवकुमारसिंहजी 'शिवम') ..... १० २१ - निवेदिता [कहानी] (श्रीशंकरलालजी माहेश्वरी) ...... ३२ ८- सबका कल्याण हो! २२- संत-संस्मरण (परमपूज्य देवाचार्य श्रीराजेन्द्रदासजी महाराजके गीताभवन, ऋषिकेशमें हुए प्रवचनसे साभार) ...... ३४ (नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार) ... ११ ९- प्रकृति (श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ वीतराग २३- व्यक्तिका कल्याण और सुन्दर समाजका निर्माण स्वामी श्रीदयानन्दिगरिजी महाराज)......१४ (ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज) .......... ३५ १०- शरणागतिका तत्त्व [साधकोंके प्रति—] २४- गोषु दत्तं न नश्यति (पं० श्रीरामस्वरूपदासजी पाण्डेय) ...... ३६ (ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज) ....... १५ २५- साधनोपयोगी पत्र......३८ २६ - व्रतोत्सव-पर्व [कार्तिकमासके व्रत-पर्व].....४० ११- परब्रह्म परमेश्वरके अवतारतत्त्वका रहस्य (श्रीजगदीशप्रसादजी गुप्ता) ......१८ २७- श्रीभगवन्नाम-जपको शुभ सूचना.....४१ २८- श्रीभगवन्नाम-जपके लिये विनीत प्रार्थना ......४४ १२- बालरूप रामकी झाँकी [कविता] (श्रीसनातन कुमारजी वाजपेयी)......१९ २९- कृपानुभूति .....४६ १३- दुर्गासप्तशतीमें 'नमस्तस्यै' पदकी पुनरावृत्तिका रहस्य ३०- पढ़ो, समझो और करो.....४७ (श्रीकैलाश पंकजजी श्रीवास्तव)......२० ३१ - मनन करने योग्य ......५० चित्र-सूची १- महागौरी ......(रंगीन).. आवरण-पृष्ठ ५- कैकेयीको प्रणाम करते श्रीराम ...... (इकरंगा) ....... ९ २- राजा चित्रकेतुको भगवान् शेषके दर्शन ( ") ...... मुख-पृष्ठ ६ - भगवान् विष्णुके दशावतार ......( '' ) ........१८ ३- महागौरी ...... (इकरंगा) ..... ६ ७- देवताओंद्वारा भगवती विष्णुमायाकी ४- श्रीरामको प्रणाम करते भरत......( '' ) ......८ स्तृति ...... ( '' ) ...... २० जय पावक रवि चन्द्र जयति जय। सत्-चित्-आनँद भूमा जय जय॥ जय जय विश्वरूप हरि जय। जय हर अखिलात्मन् जय जय॥ \_\_\_\_ पंचवर्षीय शुल्क एकवर्षीय शल्क जगत्पते । गौरीपति विराट् जय ₹ २५० ₹ १२५० विदेशमें Air Mail) वार्षिक US\$ 50 (₹3000) ( Us Cheque Collection पंचवर्षीय US\$ 250 (₹15000) Charges 6\$ Extra संस्थापक - ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका आदिसम्पादक —नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनमानप्रसादजी पोहार सम्पादक — राधेश्याम खेमका, सहसम्पादक — डॉ० प्रेमप्रकाश लक्कड़ केशोराम अग्रवालद्वारा गोबिन्दभवन-कार्यालय के लिये गीताप्रेस, गोरखपुर से मुद्रित तथा प्रकाशित website: gitapress.org e-mail: kalyan@gitapress.org 09235400242/244 सदस्यता-शुल्क —व्यवस्थापक — 'कल्याण-कार्यालय', पो० गीताप्रेस — २७३००५, गोरखपुर को भेजें। Online सदस्यता-शुल्क -भुगतानहेतु-gitapress.org पर Online Magazine Subscription option को click करें। अब 'कल्याण' के मासिक अङ्क kalyan-gitapress.org पर नि:शुल्क पढ़ें।

संख्या १० ] कल्याण हैं। जिस दिन तुम अपनेको इनसे परे समझकर इनमें याद रखो — तुम्हारी निन्दा करनेवालों में अधिकांश सच्चे हैं और अनजानमें ही तुम्हारा हित कर रहे हैं। होनेवाली चेष्टाओंके द्रष्टा बन जाओगे, उसी दिन तुम पर जो तुम्हारी प्रशंसा करते हैं, उस प्रशंसामें अधिकतर इस कल्पित सुख-दु:खसे भी परे हो जाओगे। तुम्हारे अत्युक्ति होती है और उससे तुम्हारी हानि होती है। अखण्ड नित्य आनन्दमय स्वरूपमें ये विकारी सुख-अतएव निन्दासे घबराओ मत, न निन्दा करनेवालोंसे द्वेष दु:ख हैं ही नहीं। करो और न उनको अपना बैरी समझो। धीरतासे विचार याद रखो-तुम्हारे आत्मस्वरूपमें कोई भी विकार नहीं है, वह सर्वथा विशुद्ध है। व्यावहारिक करो कि वे तुम्हारे उन दोषोंको, जिनका तुम्हें पता नहीं है, खोज-खोजकर निकालते और तुम्हारे सामने रखते जगत्में कर्म करते समय तुम्हारी यदि इस आत्म-हैं। अपने उन दोषोंको देखो, उन्हें दूर करनेकी चेष्टा स्वरूपमें स्थिति रहेगी तो व्यवहारमें यथायोग्य आचरण करो एवं निन्दा करनेवालोंका उपकार मानो। इसी प्रकार करते हुए भी तुम उससे अलग ही रहोगे। तथापि प्रशंसा सुनकर फुल न जाओ, संकोच करो, अपनी व्यावहारिक जगत्में इतना ख्याल तो अवश्य होना असली स्थितिपर-जिसको तुम अच्छी तरह जानते चाहिये कि व्यवहार आदर्श हो, शास्त्रानुमोदित हो, हो-विचार करो और उससे अधिक कही जानेवाली तथा आत्मस्वरूपकी स्थितिसे विचलित करनेवाला बातें तुम्हारे लिये अहितकर हैं। इस बातका निश्चय न हो। करके प्रशंसकोंसे दूर रहो। उन्हें अधिक मुँह मत याद रखो — व्यावहारिक जगत्में तुमको जैसे लगाओ, पर तिरस्कार भी न करो और निन्दनीय काम दूसरोंके द्वारा होनेवाली निन्दा-स्तुतिसे उद्विग्न नहीं न करके कौशलसे एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दो, होना चाहिये, वैसे ही तुम्हें यथासाध्य दुसरोंकी निन्दा-जिसमें तुम्हारी प्रशंसा होनी बन्द हो जाय। स्तुतिमें प्रवृत्त भी नहीं होना चाहिये। कहीं आवश्यकतावश याद रखो-आत्माका निन्दा तथा प्रशंसासे कोई किसीकी सच्ची स्तुति करनी पड़े तो इतनी आपत्तिकी बात नहीं; परन्तु किसीकी निन्दा करके तो कभी सम्बन्ध ही नहीं है। निन्दा-प्रशंसा होती है नाम तथा रूपकी। नाम और रूप दोनों ही तुम नहीं हो। जीभको गन्दा करना ही नहीं चाहिये। निन्दामें पापकी— मलकी ही बात आयेगी और वह तुम्हारी जीभसे आत्मस्वरूप तुमपर इनका आरोप किया गया है। ये बदलनेवाले हैं और अनित्य हैं। इनकी निन्दा-स्तृतिसे लगकर उसे तो गन्दा करेगी ही, जीभके द्वारा अन्दर मन:प्रदेशमें जाकर वहाँ भी गन्दगी फैलायेगी। तुम्हारा वास्तवमें कुछ भी बिगड़ता-बनता नहीं है। अतः इनके सम्बन्धमें लोग कुछ भी कहें-सुनें, तुम याद रखों - वे लोग बड़े ही भाग्यवान् हैं और सच्चे परमार्थसाधक हैं, जो किसीके द्वारा निन्दा सुनकर उसकी ओर ध्यान ही मत दो। निरन्तर ध्यान रखो अपने मुल परमात्मस्वरूपकी ओर—जो नित्य है, शाश्वत है, उद्विग्न नहीं होते, प्रशंसा सुनकर हर्षित नहीं होते और निन्दा-स्तुतिसे परे है और सदा तुमसे अभिन्न है। स्वयं न तो जिन्हें किसीमें दोष दीखता है, न जिनकी याद रखो-जबतक मिथ्या अभिमानवश तुम जीभ क्षणभरके लिये भी किसीकी निन्दा करनेमें प्रवृत्त शरीर और नामको अपना स्वरूप माने हुए हो, तभीतक होती है और न जिनके कान ही किसीकी निन्दा सुनना तुम्हें स्तुति-निन्दा और मानापमानसे सुख-दु:ख होते पसन्द करते हैं। 'शिव'

महागौरी \_\_\_\_\_ आवरणचित्र-परिचय इस कठोर तपस्याके कारण इनका शरीर एकदम

## दद्यान्महादेवप्रमोददा॥ महागौरी शुभं माँ दुर्गाजीकी आठवीं शक्तिका नाम महागौरी है— **'महागौरीति चाष्टमम्'**। इनका वर्ण पूर्णतः गौर है। इस

श्वेते वृषे समारूढा श्वेताम्बरधरा शुचि:।

गौरताकी उपमा शंख, चन्द्र और कुन्दके फूलसे दी गयी है। इनकी आयु आठ वर्षकी मानी गयी है—' अष्टवर्षा भवेद

इनकी चार भुजाएँ हैं। इनका वाहन वृषभ है। इनके ऊपरके दाहिने हाथमें अभय-मुद्रा और नीचेवाले दाहिने हाथमें त्रिशूल है। ऊपरवाले बायें हाथमें डमरू और नीचेके बायें

गौरी'। इनके समस्त वस्त्र एवं आभूषण आदि भी श्वेत हैं।

हाथमें वर-मुद्रा है। इनकी मुखमुद्रा अत्यन्त शान्त है। अपने पार्वतीरूपमें इन्होंने भगवान् शिवको पति-रूपमें प्राप्त करनेके लिये बड़ी कठोर तपस्या की थी।

इनकी प्रतिज्ञा थी कि ' व्रियेऽहं वरदं शम्भुं नान्यं देवं महेश्वरात्।' (नारद-पांचरात्र)। गोस्वामी तुलसीदासजीके

अनुसार भी इन्होंने भगवान् शिवके वरणके लिये कठोर संकल्प लिया था—

हुआ था-

काला पड़ गया। इनकी तपस्यासे प्रसन्न और सन्तुष्ट होकर जब भगवान् शिवने इनके शरीरको गंगाजीके

पवित्र जलसे मलकर धोया तब वह विद्युत् प्रभाके समान अत्यन्त कान्तिमान्—गौर हो उठा। तभीसे

इनका नाम महागौरी पड़ा। इन्हीं महागौरीके ही शरीरसे तीनों लोकोंकी आधारभूता और शुम्भादि दैत्योंका

नाश करनेवाली भगवती महासरस्वतीका प्राकट्य

गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-

पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥ दुर्गापूजाके आठवें दिन महागौरीकी उपासनाका

विधान है। इनकी शक्ति अमोघ और सद्य: फलदायिनी है। इनकी उपासनासे भक्तोंके सभी कल्मष धुल जाते हैं। उसके पूर्वसंचित पाप भी विनष्ट हो जाते हैं। भविष्यमें

पाप-संताप, दैन्य-दु:ख उसके पास कभी नहीं आते। वह सभी प्रकारसे पवित्र और अक्षय पुण्योंका अधिकारी हो जाता है।

माँ महागौरीका ध्यान-स्मरण, पूजन-आराधन

भक्तोंके लिये सर्वविध कल्याणकारी है। हमें सदैव इनका ध्यान करना चाहिये। इनकी कृपासे अलौकिक

सिद्धियोंकी प्राप्ति होती है। मनको अनन्यभावसे एकनिष्ठकर मनुष्यको सदैव इनके ही पादारविन्दोंका

ध्यान करना चाहिये। ये भक्तोंका कष्ट अवश्य ही

दूर करती हैं। इनकी उपासनासे आर्तजनोंके असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं। अत: इनके चरणोंकी

शरण पानेके लिये हमें सर्वविध प्रयत्न करना चाहिये। पुराणोंमें इनकी महिमाका प्रचुर आख्यान किया गया

है। ये मनुष्यकी वृत्तियोंको सत्की ओर प्रेरित करके असतुका विनाश करती हैं। हमें प्रपत्तिभावसे सदैव

हमारी। Hinadaiismस्रोशंscond Sarvenatittpsक्रुश्वादिधाgg/dhaइत्तका शास्त्राक्षाक्षाना नगादिशेME BY Avinash/Sha

श्रीराम और भरतका अनिर्वचनीय प्रेम संख्या १० ] श्रीराम और भरतका अनिर्वचनीय प्रेम (ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका) भगवत्प्रेम सर्वथा अनिर्वचनीय है। भगवानुके प्रेमी भगवान्के सिवा किसीका ज्ञान नहीं रहता। भी उसका वर्णन नहीं कर सकते, फिर मैं तो उसपर जब भरतजी महाराज चित्रकूटमें भगवान् कहूँगा ही क्या। प्रेम वाणीके द्वारा नहीं बतलाया जा श्रीरामचन्द्रजीसे मिले, उस समय उनका प्रेम ऐसा अलौकिक था कि तुलसीदासजी महाराजने उसका वर्णन सकता, वह तो हृदयका गम्भीरतम भाव है। जिसके हृदयमें प्रेमकी जागृति होती है, उसमें कुछ बाहरी चिह्न करनेमें अपनेको सर्वथा असमर्थ पाया। वे कहते हैं— प्रकट होते हैं, वही बतलाये जाते हैं। वे लक्षण भी मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी। साधन-अवस्थाके होते हैं। हृदयमें प्रेम उत्पन्न होनेपर किबकुल अगम करम मन बानी॥ कभी-कभी रोमांच हो जाता है, कभी अश्रुपात होने पूरन दोउ भाई। पेम परम लगता है, वाणी गद्गद हो जाती है और कण्ठ रुक मन बुधि चित अहमिति बिसराई॥ जाता है—यही प्रेमके बाहरी चिह्न हैं। जब वह प्रेम और सुपेम प्रगट को करई। कहहु भी प्रगाढ़ हो जाता है, तब वह प्रेमीको भीतर-ही-भीतर केहि छाया कबि मित अनुसरई॥ प्रेममुग्ध कर देता है और उस प्रेम-समाधिमें प्रेमी अपने-अरथ आखर बलु साँचा। आपको भी भूल जाता है। जैसे घीमें जब कचौड़ी सेंकी अनुहरि ताल गतिहि नटु नाचा॥ जाती है तो जबतक वह कच्ची रहती है तबतक तो सनेह भरत रघुबर को। छलकती है और उसमें क्रिया होती है, और जब वह जहँ न जाइ मनु बिधि हरि हर को॥ एकदम पक जाती है तब स्थिर—अचल हो जाती है, सो मैं कुमित कहीं केहि भाँती। उसमें कोई क्रिया नहीं होती, इसी प्रकार साधनकालका बाज सुराग कि गाँडर ताँती ॥ प्रेम बाहर छलकता है तथा प्राय: उपर्युक्त लक्षण प्रकट (रा०च०मा० २।२४१।१-६) हो जाया करते हैं। किंतु जब हृदय प्रेमसे परिपूर्ण हो जब भगवान् लंकासे लौटकर अयोध्यामें आये और जाता है तब मनुष्य मूकके सदृश चुप हो जाता है, वह भरत-शत्रुघ्नसे मिले, उस समय भी उनका प्रेम सर्वथा उस प्रेममें निमग्न हो जाता है; और जब प्रेममें निमग्न अवर्णनीय था। कहीं ग्रन्थोंमें तो नहीं देखा, सुनी हुई हो जाता है तब भगवान्की प्राप्ति हो जाती है। एवं जिस बात है कि उस समय वहाँ विभीषण और सुग्रीव भी समय भगवानुकी प्राप्ति हो जाती है, उस समय उसकी उपस्थित थे। वे इनके प्रेमको देखकर एकदम रोने लगे जो अलौकिक स्थिति होती है, उसका वर्णन स्वयं ही कि 'श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न—ये चारों भाई हैं, नहीं कर सकता; क्योंकि उस स्थितिमें उसे अपने-इनमें परस्पर कितना प्रेम है। हम लोग भी रावण तथा आपका ज्ञान नहीं रहकर केवल भगवानुका ही ज्ञान बालीके भाई थे, पर हम अपने भाइयोंका वध करवाकर रहता है। वह जब भगवान्के मुखारविन्दको देखता है यहाँ आये हैं।' वे इनके आदर्श प्रेम-व्यवहारको देखकर तो उसके नेत्रोंकी दृष्टि भगवान्के मुखचन्द्रपर इस प्रकार बड़े लज्जित और दुखी हुए। पर अब मन-ही-मन स्थिर हो जाती है, जैसे चकोर पक्षीकी दृष्टि पूर्णिमाके पश्चात्ताप करनेके अतिरिक्त और कर ही क्या सकते थे। चन्द्रमाको देखकर स्थिर हो जाती है। वह भगवान्के रामायणमें सुतीक्ष्णका प्रेम बहुत ही विचित्र है। स्वरूपको देखकर इतना मुग्ध हो जाता है कि उसे भगवान् श्रीरामसे जिस समय स्तीक्ष्णजी मिलते हैं, उस

समय उनमें जिन प्रेमभाव-तरंगोंका उदय होता है, वे भाई, भाई'-इस प्रकार रट लगाते हुए तुरंत विमानसे सर्वथा अवर्णनीय हैं। उतर पडे-

यानादवतताराश्

भ्रातभ्रात:

दर्शन होते हैं, उस समय उसके नेत्रोंकी पलकें नहीं पडतीं; वह पलक मारने-जितना भी दर्शनका वियोग सहन नहीं कर सकता। उसके लिये तो पलक पडना भी महान् विघ्न है। वह नेत्रोंद्वारा देखता है, हाथोंसे स्पर्श

जिस समय प्रेमीको प्रेमास्पद भगवान्के साक्षात्

करता है, कानोंसे भगवान्की मधुर वाणी सुनता है, वह सभी इन्द्रियोंसे मानो भगवानुकी मधुर प्रेम-सुधाका पान करता रहता है। भगवानुके अलौकिक स्वरूपके सौन्दर्य और लावण्यका कोई वर्णन नहीं कर सकता। शास्त्रोंके आधारपर तो भगवान्के स्वरूपका दिग्दर्शनमात्र कराया जाता है, किंतु भगवान्का प्रत्यक्ष दर्शन होनेके समय प्रेमीके द्वारा उस स्वरूपका वर्णन कदापि सम्भव नहीं है।

उस समय वह इतना मुग्ध हो जाता है कि उसकी वाणी ही गद्गद हो जाती है। पद्मपुराण पातालखण्डमें आया है कि भगवान्

श्रीराघवेन्द्र जब लंकासे वायुयानद्वारा आ रहे थे, उस समय श्रीहनुमानुजीके द्वारा संदेश पाकर भरतजी उनके सम्मुख जाने लगे और जब भगवान्ने देखा कि मेरा भाई

भरत जटा-वल्कलादिसम्पन्न त्यागी तपस्वीका वेष

धारण किये पैदल ही आ रहा है, तब वे बार-बार 'भाई,

(पद्म० पाताल० २।२८) उन्हें भूमिपर उतरते देख भरतजीके हर्षसे आँस्

बहने लगे और वे दण्डकी भाँति धरतीपर पड़ गये। भगवान्ने अपनी दोनों भुजाओंसे उठाकर उन्हें हृदयसे

लगा लिया। उस समय भगवान् श्रीराम और भरत दोनों ही प्रेममें मुग्ध हो गये तथा दोनोंकी ही वाणी गद्गद

भाग ९२

विरहक्लिन्नमानसः।

पुनर्भातभ्रातभ्रातवंदन्मुहु:॥

हो गयी।

## नकद धर्म

स्वामी रामतीर्थकी एक कथा है, जो उनकी पुस्तक 'नकद धर्म'में संग्रहीत है। एक कंजूस व्यक्ति था। वह जो धन कमाता था, उसे स्वयं और स्वयंके परिवारपर खर्च करनेके बजाय एक घड़ेमें रखकर जमीनमें दबा देता था। धरतीमें गड़े उस धनको देखकर उसे परम संतोष मिलता था, अपने परिवारके लोगोंके कष्टकी तरफ उसका

( श्रीनन्दलालजी टाँटिया )

जरा भी ध्यान कभी नहीं जाता था। एक बार उसके बेटेको उस घड़ेमें रखे धनके बारेमें पता चल गया। उसने

घड़ेमेंसे सारा धन निकाल लिया और उसकी जगह घड़ेमें पत्थर रख दिये। कुछ दिनोंके पश्चात् उस व्यक्तिने जमीनके अन्दर दबे घड़ेको निकाला, उसमें धनकी जगह पत्थर देखकर उसे बड़ा धक्का पहुँचा और वह रोने लगा। तब उसके बेटेने उसे समझाया कि जमीनके अंदर दबा हुआ धन पत्थरके समान ही अनुपयोगी होता है। उसके लिये

रोना और अफसोस करना व्यर्थ है। बेटेकी बात उस व्यक्तिकी समझमें आ गयी कि मनुष्यको अपने धनका सद्पयोग करना चाहिये न कि जमीनमें गाड़कर उसे पत्थर बनाना चाहिये — यही नकद धर्म है। ['कहाँ गये वे लोग'से]

कैकेयीका सती होनेका प्रयास

## ( मानस-मर्मज्ञ पं० श्रीरामिकंकरजी उपाध्याय )

कैकेयीका सती होनेका प्रयास

दशरथजीकी मृत्युके बाद कैकेयीने मन-ही-मन कि आपकी भूलके कारण ही रामराज्य नहीं बन पाया,

उपेक्षाकी दृष्टिसे देखेंगे और तब कैकेयीके अहंने कहा कि अब अपने इस कलंकको मिटानेका एक ही उपाय है कि मैं महाराजके साथ सती हो जाऊँ। इससे लोग मेरे दोषोंको भूल जायँगे और उन्हें यही याद रहेगा कि कैकेयी तो बड़ी सती थीं, उन्होंने अपने पतिके साथ अपने प्राणोंका

सती होनेका निर्णय लिया। सती होनेके पीछे कैकेयीजीकी

मनोभावना क्या थी ? वस्तुत: जब वे भरतजीके द्वारा भी तिरस्कृत हो गयीं तो उन्हें ऐसा लगा कि अब समाजमें

एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं बचा, जिसके मनमें मेरे प्रति

रंचमात्र भी प्रेम हो या अपनत्वका भाव हो। अगर मैं

जीवित रहूँगी तो सारे समाजके लोग मुझे घृणा और

संख्या १० ]

परित्याग कर दिया। इससे पुरानी भूलोंका परिमार्जन हो जायगा तथा मैं सतीके रूपमें याद की जाऊँगी। लेकिन भरतजीने तो माँको सती नहीं होने दिया, अग्निमें नहीं जलने दिया और उन्होंने कैकेयीजीको मानो याद दिला दिया कि अन्य माताएँ जो सती होना चाहती हैं, उनकी भावनाको तो मैं समझ सकता हूँ कि उनके मनमें पतिके प्रति बड़ी प्रीति है, पर आप क्यों सती होना चाहती हैं? और साथ-ही-साथ उन्होंने पूछ लिया कि मैंने तो सुना है कि स्त्रियाँ जब सती होती हैं तो पतिके साथ पतिलोक जाती हैं, तो क्या महाराजके साथ रहकर उनको और कष्ट देना बाकी है, जो उनके लोकमें जाना चाहती हो? वे आपको यहींपर छोड़कर चले गये। उन्होंने आपको देखना भी पसन्द नहीं किया। आप सती होकर स्वर्गमें जायँगी तो क्या पिताजी आपको वहाँ देखना पसन्द करेंगे ? भरतजीने कहा—आप यदि जलना ही चाहती हैं तो जलनेसे मैं आपको नहीं रोकता। मैं नहीं कहता कि मत

(रा०च०मा० २।२७३।१, २।२५२।६) कुटिल कैकेयी मन-ही-मन ग्लानि (पश्चाताप)-से गली जाती है। किससे कहें और किसको दोष दें? वे पृथ्वी तथा यमराजसे याचना करती हैं, किंतु धरती बीच फटकर समा जानेके लिये रास्ता नहीं देती और विधाता मौत नहीं देते। यह तीव्रतम पश्चात्ताप उनके अन्त:करणमें उत्पन्न हुआ। उन्होंने देख लिया कि लोभ और क्रोधका कितना भयंकर परिणाम हुआ। कैकेयीजी जब चित्रकूट गयीं तो भगवान् श्रीराम तीनों माताओंके बीच सबसे पहले

पिताजीकी मृत्यु हुई, ऐसी स्थितिमें अगर आप अपनी भूलको

समझकर ग्लानि और पश्चात्तापपूर्वक श्रीरामको लौटा

लायें और उन्हें सिंहासनपर बैठानेकी चेष्टा करें तो ग्लानि

और पश्चात्तापका उदय होगा, गोस्वामीजी कहते हैं-गरइ गलानि कुटिल कैकेई। काहि कहै केहि दूषनु देई॥

अविन जमिह जाचित कैकेई। मिहन बीचु बिधि मीचुन देई॥

जलिये। मैं चाहता हूँ कि आप जलिये, लेकिन आपका कल्याण उस आगमें जलनेमें नहीं है। आपका कल्याण तो पश्चात्तापकी अग्निमें जलनेमें है। आप अगर अपने-कैकेयीजीके चरणोंमें प्रणामकर उनके सीनेसे लिपट आपको पश्चात्तापकी अग्निमें जलायेंगी तो आपके गये। गोस्वामीजीने लिखा है—'*प्रथम राम भेंटी कैकेई।*' अपराध जलकर नष्ट हो जायँगे। इसका अभिप्राय यह है (रा०च०मा० २।२४४।७)

तीनों माताओंके बीच श्रीराम जब कैकेयीजीके

तीव्र लोभकी निरर्थकताको देखा। अरे. जिस भरतके हृदयसे लग गये तो वे रोने लगीं। उन्हें लगा—अरे, लिये मैंने इतना लोभ किया, उसने मुझसे कैसा व्यवहार

रामपर क्रोध करके मैंने वनवास दे दिया था. पर इसका किया, मेरी भर्त्सना की, मेरे राज्यके प्रस्तावको अस्वीकार व्यवहार आज भी मेरे प्रति वैसा ही है। पहले वह अपनी किया, जिसके कारण मैं विधवा हो गयी, मुझपर कितना

माताकी अपेक्षा मुझे अधिक चाहता था, यह तो एक साधारण बात थी, लेकिन जब मैंने इसे इतना कष्ट दिया

तब भी मेरे प्रति इसका पुराना भाव है। आज भी अपनी

माताकी अपेक्षा मुझे अधिक महत्त्व देता है और भगवान्

राम तो कैकेयी अम्बाके हृदयसे लगकर कहने लगे—

केवल तुम्हीं जानती हो। अगर तुमने मुझे वन न भेजा

माँ, तुम बिलकुल मत घबराना, मेरे हृदयकी बात तो

होता तो भरतका चरित्र-भरतका प्रेम समाजके सामने कैसे आता? यह दिव्य औषधि कैसे प्रकट होती? इसलिये तुम दु:ख न करो। और कैकेयीने अपने मनके

— 'हे देव परम महादेव प्रभू'-

## ( श्रीशिवकुमारसिंहजी 'शिवम')

```
पद्यानुवाद किया है। यहाँ उसमेंसे एक स्तृति दी जा रही है—संपादक ]
```

हे देव परम महादेव प्रभू, अभिवादन मम स्वीकार करो।

कैलास के बासी सदाशिव नाथ, स्वदासन्ह अंगीकार करो॥ परमेश्वर पंचमुखी परखी, भरि भाव सुभाव सुधार करो।

हम दासन्ह तामस भाव हरो, भरि मन्त्र प्रभाव उद्धार करो॥

हे देवोंमें श्रेष्ठ महादेव! आप कृपाकर मेरा

अभिवादन स्वीकार करें। हे कैलासमें रहनेवाले नाथ सदाशिव! आप अपने दासोंको अपने अंग-संग रखें।

हे श्रेष्ठ पारखी, पंचमुखी परमेश्वर! हममें सुन्दरतम भाव भरकर हमारे स्वभावका सुधार कर दो। हम दासोंके तामसी भावोंका निवारणकर हममें अपने

मन्त्रका प्रभाव भर दो। हमारा उद्धार करो। विषपान कियो तुम नीलसुकण्ठ, सुहेतुहिं देवन्ह के हितकारी।

तुम रूप अनेक सहस्र मुखी, परिव्याप्त परमअणु शक्ति खरारी॥

साथ हमारे अन्तर्मनमें ग्लानि उत्पन्न होना, यह रोगको विनष्ट करनेकी सबसे पहली शर्त है। [ प्रेषक—श्रीअमृतलालजी गुप्ता ]

बड़ा कलंक लगा, समाजसे तिरस्कृता हो गयी और

अन्तमें उस भरतने राज्यको अस्वीकारकर त्यागका

जीवन स्वीकार कर लिया। उन्हें लोभकी व्यर्थता स्पष्ट दिखायी देने लगी और भगवान् रामके हृदयसे लगनेके

बाद क्रोधको व्यर्थता स्पष्ट दिखायी देने लगी। परिणाम

यह हुआ कि सन्निपात शान्त हो गया और रामराज्यकी

स्थापना हुई। गोस्वामीजीने मानो बताया कि बुराइयोंके

[पुराण-वाङ्मयमें श्रीशिवमहापुराणका अत्यन्त महिमामय स्थान है। शिवके उपासक इस पुराणको शैवभागवत मानते हैं। लेखकने इस पुराणका अवधी भाषामें दोहा-चौपाई-छन्दसमन्वित गेय शैलीमें 'शिवायन' नामसे

शिव-शक्ति संयोगहिं सृष्टि रच्यो, असुरारि वृषभध्वज तुम त्रिपुरारी॥

भाग ९२

अपने भक्तोंके हितहेतु आपने विषपान कर

लिया, जिसके प्रभावसे आपके कण्ठका रंग ही नीला पड़ गया। आप देवोंके हितहेतु उनके हितकारी

हैं। आपके असंख्य रूप हैं। आप सहस्रों मुखोंवाले हैं। आप अणुमें ही नहीं, परमाणुमें भी परिव्याप्त हैं। अण्-परमाणुमें आपकी ही शक्ति है। बाल

चन्द्रमाको आप अपने मस्तकमें धारण करते हैं

तथा सुकुमारि गिरिजा (पार्वती)-को उनकी तपस्याका फल देते हुए उन्हें अपनी वामांगा शक्ति बना ली

है, जिनके संयोगसे आपने इस समस्त सृष्टिकी रचना की। आप वृषभध्वज हैं तथा तीनों पुरियोंके

मालिक त्रिपुरासुरके शत्रु हैं। आप असुरों (राक्षसों)-भिक्षाता सम्मन्त्राहरू अने प्रमान के अने मान कि सम्मन्त्र के अने सम्मन

संख्या १० ] सबका कल्याण हो! सबका कल्याण हो! ( नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार ) हिन्द्-शास्त्रोंकी दुष्टिसे संसारके समस्त प्राणी एक अपने वर्णाश्रमके अनुसार—स्वाँगके अनुसार अभिनय करनेवाले नटकी भाँति—जो कुछ भी व्यवहार करे, भगवान्के स्वरूप हैं, भगवान्के निवासस्थान हैं या भगवान्के उसके सारे भाव होते हैं भगवानुमें ही; क्योंकि उसके सनातन अंश—उनकी प्रिय संतान हैं। तीनों सिद्धान्त भिन्न-भिन्नसे प्रतीत होनेपर भी वस्तुत: एक ही सत्यका प्रतिपादन अनुभवमें एक भगवानुके अतिरिक्त और कुछ रहता ही करते हैं। यदि ज्ञानकी दुष्टिसे कहा जाय तो इसी तत्त्वको नहीं। इसीपर गीता(६। ३०)-में श्रीभगवान् कहते हैं-यों कहा जाता है कि एक ही अखण्ड आत्मा विभिन्न सर्वभृतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः। स्थूल-सूक्ष्म जीवोंके रूपोंमें वैसे ही प्रकाशित है, जैसे एक सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मिय वर्तते॥ ही अखण्ड महाकाश समस्त देशों, नगरों, गाँवों, मकानों (गीता ६।३१) और कोठरियोंके रूपमें प्रकट है। इसीलिये सर्वत्र भगवद्दर्शन 'जो पुरुष एकत्व (एकमात्र भगवद्भाव)-में स्थित अथवा सर्वत्र आत्मदर्शन करनेवाले पुरुष हिन्दू-शास्त्रकी होकर सब भूत-प्राणियोंमें स्थित मुझ भगवान्को भजता दृष्टिसे महात्मा माने जाते हैं-है, वह योगी सब प्रकारसे व्यवहार-बर्तावमें लगा हुआ भी वस्तुत: मुझ भगवान्में ही लगा रहता है।' बहुनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान् मां प्रपद्यते। ऐसा महापुरुष सर्वत्र समस्त जीवोंमें समबुद्धि वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः॥ होकर सबके सुख-दु:खकी अनुभूति अपने-आपकी (गीता ७।१९) 'बहुत जन्मोंके अन्तमें जो ज्ञानप्राप्त पुरुष सब तुलनासे करता है। भगवान् फिर कहते हैं-वासुदेव ही हैं, इस प्रकार मुझको (भगवान्को) भजता आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन। है, वह महात्मा अति दुर्लभ है।' सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः॥ भगवान्ने गीता (७।७)-में कहा है-(गीता ६।३३) 'जो पुरुष अपनी उपमासे सबमें सबके सुख मत्तः परतरं नान्यत् किंचिदस्ति धनञ्जय। मिय सर्विमिदं प्रोतं सूत्रे मिणगणा इव॥ अथवा दु:खको सम देखता है, वह योगी परमश्रेष्ठ माना 'अर्जुन! मेरे अतिरिक्त किंचिन्मात्र भी दूसरी वस्तु गया है।' नहीं है। यह सम्पूर्ण (जगत्) सूत्रमें (सूतेकी) मणियोंकी मतलब यह कि अपने एक ही शरीरके सभी भाँति मुझमें ही पिरोया हुआ है।' अवयवोंमें आत्मभाव समान होनेके कारण उनमें होनेवाले सुख-दु:खको मनुष्य समान देखता है। चोट चाहे पैरमें इस प्रकार जो सर्वत्र और सर्वदा श्रीभगवान्को देखता है, उसे सर्वत्र, सबमें, सब समय भगवान् ही लगे चाहे सिरमें-दु:ख मनमें समान होता है; इसी मिलते हैं। भगवान्ने गीता (६।३०)-में कहा है-प्रकार आराम चाहे पैरको मिले चाहे मुखको—सुख भी समान ही होता है। बर्ताव-व्यवहारमें भले ही पूरा-पूरा यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मिय पश्यति। भेद रहे और वह रहना अनिवार्य है। पैर और सिरके तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥ अथवा हाथ और मुँहके न तो काम एक-से होते हैं और 'जो सर्वत्र मुझ भगवान्को देखता है और सबको मुझ भगवान्में देखता है, उसके लिये न मैं कभी परोक्ष न उनके साथ व्यवहार ही एक-सा हो सकता है, परंतु होता हूँ और न वह मेरे लिये परोक्ष होता है।' 'आत्मौपम्य समता' सबमें एक-सी है। इस प्रकार सर्वभृतप्राणियोंमें भगवान्को और भगवान्में हिन्दू-सिद्धान्तके अनुसार इस प्रकार जानने-माननेवाला सर्वभूत प्राणियोंको देखनेवाला, व्यावहारिक जगत्में पुरुष किसीके साथ कैसे वैर कर सकता है और कैसे

भाग ९२ \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* \* हैं। आत्माके रूपसे जो परमात्मा एक हिन्दूमें है, ठीक किसीका अनिष्ट-चिन्तन कर सकता है? भगवान्ने उसीको विशिष्ट पुरुष बतलाया है, जिसकी सुहृद्, मित्र, वही मुसलमान या ईसाईमें है और सृष्टिकर्ता भगवान्के शत्रु, उदासीन, मध्यस्थ, द्वेष्य, बन्धु, साधु और पापकर्मियोंमें रूपमें हिन्दू जिस भगवान्की संतान हैं, मुसलमान और भी समबुद्धि है।' अर्थात् इन सभीके अन्दर जो एक ईसाई भी उसीकी हैं। इसी प्रकार यदि हिन्दू भगवान्के भगवान्को विराजित देखता है, या इन सभीके रूपमें जो स्वरूप हैं तो मुसलमान या ईसाई भी भगवानुके स्वरूप एक भगवानुके दर्शन करता है, वह सर्वश्रेष्ठ है। हैं। जो मनुष्य भगवान्की पूजा करे और भगवत्स्वरूप असलमें उसकी बुद्धिमें न शत्रु है न मित्र है, न बुरा है ही किसी जातिविशेषके व्यक्तिसे द्वेष करे, उसका बुरा न भला; सब श्रीभगवान्के ही रूप हैं। ऐसा माननेपर भी चाहे, उसकी पूजा भगवान् कैसे ग्रहण करेंगे। जो व्यक्ति व्यवहारमें उसे स्वधर्मोचित कर्तव्यका पालन करना पड़ता एक अंगको पूजे और दूसरेको काटे, उस अंगका अंगी वह पुरुष उससे कैसे प्रसन्न होगा? जो व्यक्ति माताके है। इसलिये यह बात तो रहती ही नहीं कि हिन्दू किसीको विधर्मी मानकर उससे द्वेष करे। हिन्दू, मुसलमान, पारसी, एक बच्चेसे प्यार करे और दूसरेके गलेपर छूरी फेरे, ईसाई इत्यादि भेद वस्तुत: व्यवहारमें हैं, आत्मामें नहीं हैं। उससे माता प्रसन्न कैसे होगी? आत्मा न हिन्दू है न मुसलमान। वह तो नित्य-शुद्ध-बुद्ध इस दृष्टिसे किसीको भी जान-बूझकर कष्ट सिच्चदानन्दस्वरूप है। उसमें भेदकी कल्पना ही नहीं है। पहुँचाने या किसीका अहित करनेकी इच्छा या चेष्टा अतएव भेद स्वरूपतत्त्वमें नहीं है। भेद व्यवहारमें है। कदापि नहीं करनी चाहिये। मनुष्यकी तो बात ही क्या आजकल व्यवहारमें तो अभेदकी चेष्टा होती है और मनमें है-पश्-पक्षी, कीट-पतंगको भी कष्ट पहुँचाने या भेद बढ़ते रहते हैं; इसीलिये इतना कलह और विद्वेष है। उनका अहित करनेकी कल्पना नहीं करनी चाहिये। नहीं तो, मुसलमान अपने निर्दोष धर्मका पालन करें और सबके साथ वैसा ही बर्ताव करना चाहिये, जैसा हम हिन्दू अपनेका करें, किसीको क्यों आपत्ति होनी चाहिये दूसरोंसे अपने प्रति चाहते हैं। जो बातें अपनेको बुरी और क्यों किसीके हृदयमें वेदना पहुँचानेके लिये धर्मके लगती हों, उन्हें दूसरोंके साथ नहीं करनी चाहिये। नामपर कोई अनुचित क्रिया ही होनी चाहिये। यदि सबमें 'आत्मनः प्रतिकृलानि परेषां न समाचरेत्।' 'आत्मौपम्य एकता' का भाव रहे तो सभी परस्पर एक-सबमें और सब कुछ भगवान् ही हैं, इस तत्त्व-दूसरेके सहायक और विश्वासपात्र रक्षक तथा सेवक होंगे। सिद्धान्तको ध्यानमें रखनेवाला पुरुष तो ऐसा करेगा ही। परस्पर एक-दूसरेको सुख पहुँचायेंगे। किसीको दु:ख जो लौकिक सुख-शान्ति चाहता है, उसे भी वस्तुत: पहुँचानेकी इच्छा या चेष्टा तभी होती है, जब हम उसे पहले अपने बर्तावको सुधारना चाहिये। व्यवहारमें चार पराया समझते हैं और उसके लाभमें अपनी हानि तथा बातोंका सावधानीके साथ त्याग करना चाहिये-१. उसके सुखमें अपना दु:ख मानते हैं।आज भारतवर्षमें सच्ची किसीका असम्मान न हो, २. किसीके साथ कपटका धार्मिकताका अभाव होनेसे यही बात हो गयी है और इसीसे व्यवहार न हो, ३. किसीके साथ द्वेषका बर्ताव न हो और परस्पर वैर-विरोध और द्वेष-दु:खकी प्रवृत्ति बढ़ रही है। ४. किसीका अहित करनेकी चेष्टा न हो। इसके विपरीत लहसूनके बीजसे केसर उत्पन्न नहीं होती, इसी सम्मान, सत्य, प्रेम और हितका बर्ताव होना चाहिये। ऐसा प्रकार बुराईसे भलाई नहीं पैदा होती। हम यदि किसीके बर्ताव होगा तो अपने-आप ही बदलेमें यही चीजें प्राप्त साथ बुरा बर्ताव करेंगे तो बीज-फल-न्यायसे वही बुराई होने लगेंगी, जिससे जीवनमें सुख-शान्ति आयेगी और हमें अनन्तगुनी होकर मिल जायगी। पारमार्थिक लाभ भी निश्चय ही होगा। भगवानुके न्यायमें हमारे यहाँके भेदसे कोई भेद अब प्रश्न यह है कि आजके वातावरणमें ऐसे नहीं होगा। भगवान् जैसे हिन्द्रके हैं, वैसे ही मुसलमानके भावोंकी रक्षा कैसे हो और कैसे आचरणमें इनका प्रयोग हो,

| संख्या १०] सबका क   | ल्याण हो! १३   |
|---|--|
| ********************************                          | **************************************               |
| जबिक एक पक्ष उन्मत्त होकर दूसरेको हर तरहसे कष्ट           | युद्ध कर। मुझमें अर्पण किये हुए मन-बुद्धिवाला तू     |
| पहुँचाने और उसका अहित करनेपर उतारू है। इसका उत्तर         | निस्सन्देह मुझको ही प्राप्त होगा।'                   |
| यह है कि वास्तवमें तो किसीका अहित किसी दूसरेके द्वारा     | भगवत्प्रीतिका यह भाव समझमें न आ सके तो               |
| हो ही नहीं सकता—दूसरा निमित्त भले ही बने। पर इस           | समाज तथा देशकी—समाज तथा देशके धर्मकी, जिससे          |
| सिद्धान्तको मानते हुए भी व्यवहारके क्षेत्रमें प्रतिपक्षके | समाज सुखी रह सकता है, रक्षाके लिये त्यागकी           |
| हितकी भावनासे, मनमें किसी प्रकारका दुर्भाव यथा-साध्य      | भावनासे किसीका बुरा चाहे बिना ही वीरत्वका बाना       |
| न आने देकर ऐसी अवस्थाका निर्माण करना चाहिये—              | धारण करके अन्याय, अधर्म तथा अत्याचारको मिटानेके      |
| ऐसी स्थिति पैदा कर देनी चाहिये, जिससे उक्त पक्षको         | लिये अत्याचारीका बलपूर्वक सामना करना चाहिये।         |
| अपने असत् प्रयत्नमें सफलताकी आशा न रहे और वह              | अन्याय और अत्याचारका कायरतापूर्वक सहन करना भी        |
| निराश होकर उस बुरे प्रयत्नसे अपनेको अलग कर दे और          | अपराध है। समाजके अच्छे पुरुष यदि यह अपराध            |
| ऐसा करनेमें बाहरसे यदि कहीं कठोर धर्मसंगत उपाय            | करने लगें तो सारा समाज अत्याचारमय हो जा सकता         |
| काममें लाने पड़ें तो कोई आपत्ति नहीं है। अवश्य ही उस      | है। अतएव भगवान्की कृपाशक्तिपर विश्वास रखकर           |
| समय दो बातोंका ध्यान रहे—जो कुछ किया जाय                  | अत्याचारका विरोध अवश्य करना चाहिये।                  |
| भगवान्को स्मरण रखते हुए और भगवान्की सेवाके लिये           | असलमें पापकर्म करनेवालेका पतन किसीको करना            |
| किया जाय। उसमें कहीं भी द्वेष या रोष नहीं होना चाहिये।    | नहीं पड़ता। उसका पापरूप कर्म ही उसे गिरा देता है,    |
| कहीं भी बदला लेनेकी या किसीको कष्ट पहुँचाकर सुखी          | परंतु जबतक किसीको समाजमें रहना है, तबतक              |
| होनेकी भावना नहीं होनी चाहिये। अर्जुनका महान् भीषण        | समाजसेवाका उसपर दायित्व है और उस दायित्वकी           |
| संग्राम-कर्म गीताके इसी सिद्धान्तपर स्थिर था। संग्राम था, | रक्षाके लिये ही उसे पापकर्मका बलपूर्वक विरोध करना    |
| बड़ा भीषण कर्म था, परंतु भगवान्की आज्ञा थी और अर्जुन      | चाहिये और शीघ्र-से-शीघ्र उस पापका नाश होकर पापकर्मी  |
| भगवान्के आज्ञानुसार <b>'करिष्ये वचनं तव'</b> की प्रतिज्ञा | विशुद्ध बन जाय—इस भावनासे उसे समुचित शिक्षा भी       |
| करके बड़ी सावधानीके साथ अपनेको भगवान्का                   | देनी चाहिये। घृणा पापसे करनी चाहिये, पापीसे नहीं।    |
| आज्ञाकारी सेवक मानकर ही संग्रामरूप कर्म कर रहे थे।        | नाश पापका करना चाहिये, पापीका नहीं। उसे तो निष्पाप   |
| इसीसे उनका वह कर्म भी भगवत्पूजन ही था।                    | और विशुद्ध बनाना है, सावधानीके साथ कड़वी दवा         |
| भगवान्की निर्भ्रान्त आज्ञाके दो श्लोक यहाँ उद्भृत किये    | देकर! सम्भव है इस दवा देनेमें वह आपको शत्रु समझे।    |
| जाते हैं। भगवान् अपने प्रिय भक्त अर्जुनको आज्ञा करते हैं— | पागल मनुष्य अत्यन्त स्नेहीको भी मार बैठता है, ऐसे ही |
| मिय सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा।                | आपपर भी वह प्रहार कर बैठे! परंतु आपको तो शान्ति      |
| निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः॥                | तथा सावधानीके साथ ही—अपनेको बचाते हुए—उसके           |
| (गीता ३।३०)   | प्रति उसे नीरोग करनेकी क्रिया करनी है। इसमें हित और  |
| 'भगवान्में लगाये हुए चित्तसे सब कर्मोंको मुझ              | प्रेमकी भावना होनेके कारण इससे भी जीवनमें सुख-       |
| भगवान्में निक्षेप करके आशा और ममताको छोड़कर               | शान्ति और पारमार्थिक लाभकी प्राप्ति होगी। हमारी तो   |
| तथा मनकी जलनको मिटाकर युद्ध कर।'                          | यही भावना रहनी चाहिये कि सभी सुखी हों, सभी तन-       |
| तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।                 | मनसे नीरोग हों, सभी सदा मंगलोंका साक्षात्कार करें और |
| मर्व्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ॥                | दु:खका भाग किसीको भी न मिले।                         |
| (गीता ८।७)  | सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।            |
| 'अतएव सब समय निरन्तर मेरा स्मरण कर और                     | सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥     |
| <del></del>   | <b>&gt;+-</b>  |

ही बिना किसी दूसरी प्रेरणाके हुआ कर्म इत्यादि। इसी

( श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ वीतराग स्वामी श्रीदयानन्दगिरिजी महाराज ) प्रकृति इस संसारकी उस शक्तिका नाम है, जो कि बिना किसी यत्नके संसारको उत्पन्न करके स्थिर रखती हुई बहती जाती है और समयपर संहार करती है अर्थात् उत्पत्ति, स्थिति और संहारकी वह शक्ति जो कि बिना किसी प्रत्यक्ष प्राणीके यत्नके अपने-आप अपने ही नियमों और अधिनियमों (Principles)-के अधीन संसारको चलाती रहती है। यद्यपि इस प्रकृतिके तल (तह)-में छिपी हुई चेतन शक्ति इसको क्रियायुक्त करती है, किन्तु इस चेतन शक्तिको ढकनेवाली यह प्रकृति शक्ति ही सब कुछ करती-कराती हुई दृष्टिगोचर होती है। इसमें सत्त्वगुण ज्ञानरूपमें और रजोगुण क्रियारूपमें तथा तमोगुण अन्धकार या जड्रूपमें जाननेमें आते हैं। चेतन तो ढका रहता है। कार्य करती हुई स्वयं यही प्रतीत होती है। इसलिये इसका नाम प्रकृति है अर्थात् प्रकर्षपूर्णं कृति, जो कि बड़े व्यवस्थित प्रकारसे, नियमोंके अधीन, अपने-आप ही होती जाती है, चलती जाती है; और काम करती जाती है। समयपर सूर्यका उदय-अस्त, ग्रहोंका उदय-अस्त और ऋतुओंका परिवर्तन— सब उसीके अनुसार शनै:-शनै:, बिना किसी यत्नके होता हुआ दीखता है, यही सब प्रकृतिका खेल है। इसका बन्ध इतना कठोर है कि मनुष्यको इसकी

उत्पन्न करना, स्थित रखना और मारना या नाश करना-रूप कार्य कर रही है। प्रकर्ष अर्थात् स्वयंमें अपने-आप करनेकी प्रवृत्ति-यही स्वाभाविक बन्धन है, जोकि एक व्यक्तिमें भी सत्त्व, रज, तमरूपसे बुद्धि, अहंकार और दस इन्द्रियाँ, मन और शब्द, स्पर्श, रूप, रस-गन्ध — ये पाँच तन्मात्राएँ और इनके द्वारा पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश—इन पाँच भूतोंको उपजाती हुई चार प्रकारके जीवों (१-अण्डज, २-जरायुज, ३-स्वेदज, ४-उद्भिज)-को उत्पन्न करती है।(१) अण्डज वे हैं जो कि अण्डोंसे उत्पन्न होते हैं, (२) दूसरे जरायुसे उत्पन्न होनेवाले हैं। मनुष्य और पशु इसी श्रेणीमें

लीला प्रिय प्रतीत होकर बाँधती है और उत्पन्न करती जाती है, संसारमें बसाये और बनाये रखती है, दु:ख दिखाकर मारती और नष्ट करती है। इस प्रकृतिके जन्म,

मरण, कर्मोंके फलभोग और सब प्रकारके दु:खों एवं

आते हैं, (३) तीसरे जो स्वेदज हैं, वे पसीनेसे उत्पन्न होते हैं, जैसे कि जूँ आदि और (४) चौथे उद्भिज हैं, जो कि पृथ्वीसे उत्पन्न होनेवाले हैं, जैसे वृक्ष आदि। सभी प्रकारकी वनस्पति इसी श्रेणीमें सम्मिलित है। इस प्रकार प्रकृति चार प्रकारकी सृष्टिको उत्पन्न करती है और फिर स्थित करके अन्तमें विनाश करती हुई सदा बहती रहती है। जिस व्यक्तिके कर्म बिना उसके बहुत सोचे-

प्रकार यह जो जगत्की मूल प्रकृति है, इसका भी यही

तात्पर्य है कि किसी भी दूसरी जानी-बूझी, प्रेरणाके बिना

ही स्वयं अपने भावसे ही करती-कराती, चलती-चलाती

सारे जगत्में एक व्यक्तिसे लेकर अनन्त व्याक्तियोंको

बन्धनोंसे छूटनेका रास्ता केवल भगवानुका ही सहारा या विचारे दु:ख-सुख देनेवाले बन जाते हैं, उनको भी लोग शरण हो सकता है, नहीं तो यह अपने तीन गुणोंके यह कह देते हैं कि इसकी तो ऐसी ही प्रकृति है। इसका अन्दर बँधे हुए मनुष्य या किसी भी जीवको कभी भी ऐसा ही स्वभाव है। इस बेचारेके वशकी है ही नहीं। छ्टनेकी इच्छा नहीं करने देती। प्रकृतिका अर्थ स्वभाव इस सारेका तात्पर्य है कि बिना किसीके वशके अपने-भी है, जैसे कि यह कहनेमें आता है कि किसी मनुष्यकी आप करने-करानेवाली शक्ति सब जगतुमें प्रकृति कही प्रकृति ऐसी है कि उस रूपमें उसके जाने-बूझे बिना ही जाती है। जो सब जगत्का काम चलानेवाली है, उसका कोई काम या कर्म बनते हैं, जो कि स्वभावरूपमें ही नाम परा-प्रकृति है। इसको ग्रन्थोंमें अव्यक्त भी कहते किये हुए कहे जाते हैं। स्व शब्दका अर्थ है 'अपना', हैं। जो एक व्यक्तिमें या छोटी-छोटी वस्तुओंमें है या ᡨᡏᢚᡕᡁᢋᡲᡣ<sup>ᡷ</sup>Ďᡝ᠍ᢄᡶᠯᢆᠨᡆ᠈ᢣᡛᡎᡳᡓᢅᡥᡅᡏᡌ᠍ᢃᢃᠯᢃᡷᢆᡄᢃᠪᠺᡈᠬᡆᡵᠰᠮᢆᢝᡎᠮᢥᢜ᠌ᡚᢅᢄ᠅ᡧᠮᠮᡰᢜ᠘ᠪᡃ**ᢥᡊ᠂ᡓ᠈ᢥ**ᡯᢗᠯᠮᡓᡲᢥᢧᢒᢥ संख्या १० ] शरणागतिका तत्त्व साधकोंके प्रति-शरणागतिका तत्त्व (ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज) (१) नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत। श्रीमद्भगवद्गीतामें शरणागति-भावका एक प्रमुख स्थितोऽस्मि गतसंदेहः करिष्ये वचनं तव॥ स्थान है। भगवदुपदेशका आरम्भ और उपसंहार—दोनों 'हे अच्युत! आपकी कृपासे मेरा मोह नष्ट हो गया ही शरणागतिमें हुए हैं। भगवान् श्रीकृष्ण और अर्जुन और मैंने स्मृति प्राप्त कर ली है; अब मैं संशयरहित सदा साथ-साथ रहते थे, परंतु अर्जुन जबतक भगवान्के होकर स्थित हूँ; अत: आपकी आज्ञाका पालन करूँगा।' शरण नहीं हो गये, तबतक भगवान्के श्रीमुखसे इस प्रकार भगवान्की आज्ञा 'मामेकं शरणं व्रज' श्रीमद्भगवद्गीताका प्राकट्य नहीं हुआ।<sup>१</sup> के उत्तरमें अर्जुन 'करिष्ये वचनं तव' कहकर उसे श्रीमद्भगवद्गीतामें 'सर्वगृह्यतमम्' पद (अध्याय (शरणागतिको) स्वीकार कर लेते हैं और ठीक उसके १८, श्लोक ६४ में) एक ही बार आया है। अर्जुनको पश्चात् ही श्रीमद्भगवद्गीताका उपदेश समाप्त हो जाता सर्वगुह्यतम (सम्पूर्ण गोपनीयोंसे अति गोपनीय) उपदेश है। गीताकी समाप्ति शरणागतिमें होती है। देते हुए भगवान् कहते हैं-अब इस प्रश्नपर विचार करना है कि हमें शरणागित कैसे प्राप्त हो ? इसके लिये हमें सबसे पहले मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे॥ दृढ़तापूर्वक यह निश्चय करना होगा कि श्रीभगवान् हैं। भगवान् हैं, वे हमारे हैं और हम उनके हैं-इसे (१८।६५) (अर्जुन!) 'तू मुझमें मनवाला हो, मेरा भक्त बन, दुढ़तापूर्वक स्वीकार कर लेना ही शरणागित है। भगवान्के मेरा पूजन करनेवाला हो और मुझको प्रणाम कर। ऐसा शरण होनेके लिये न कोई निर्बल है, न कोई अनिधकारी करनेसे तु मुझे ही प्राप्त होगा, यह मैं तेरे प्रति सत्य है और न कोई पराधीन ही है। भगवान हमारे लिये प्रतिज्ञा करता हूँ; क्योंकि तू मेरा अत्यन्त प्रिय है।' अमुक कार्य कर दें, हमारी कामनाएँ पूरी कर दें, —ऐसी ऐसा कहनेके बाद भगवान् आज्ञा देते हैं-जगह हम पराधीन हैं। कामनाकी पूर्तिमें हम पराधीन सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। और निष्काम होनेमें स्वाधीन हैं। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥ प्रश्न हो सकता है कि हम भगवान्को अपना स्वामी क्यों मानें ?—उन्हें सुख देनेके लिये, उनका प्रेम (१८।६६) '(अर्जुन!) सम्पूर्ण धर्मोंको अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्य-प्राप्त करनेके लिये, उनकी प्रसन्नता प्राप्त करनेके लिये। कर्मींको त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान् यदि हम किसीसे कहें कि 'मैं आपका ही हूँ' तो वह सर्वाधार परमेश्वरकी ही शरणमें आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण बहुत प्रसन्न हो जाता है। भगवान् भी हमसे यही चाहते हैं और इससे बहुत प्रसन्न होते हैं। इसीलिये भगवान्ने पापोंसे मुक्त कर दुँगा, तू शोक मत कर।' इसके बाद जब भगवान् अर्जुनसे पूछते हैं कि 'क्या तेरा अज्ञानजनित अर्जुनसे सर्वगृह्यतम (सम्पूर्ण गोपनीयोंसे अति गोपनीय) मोह नष्ट हो गया?' (१८।७२) तब इसके उत्तरमें बात यही कही कि 'तू केवल मेरी शरणमें आ जा।' अर्जुन कहते हैं-यह भगवान्के हृदयकी बात है, इसलिये वे उसे प्रकटमें १. श्रीमद्भगवद्गीताका उपदेश आरम्भ होनेसे पहले अर्जुन भगवान्से प्रार्थना करते हैं— कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पुच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः। यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥ 'कायरतारूप दोषसे उपहत हुए स्वभाववाला तथा धर्मके विषयमें मोहितचित्त हुआ मैं आपसे पूछता हूँ कि जो साधन निश्चित कल्याणकारक हो, वह मेरे लिये कहिये; क्योंकि मैं आपका शिष्य हूँ, इसलिये आपके शरण हुए मुझको शिक्षा दीजिये।'

भाग ९२ (सबके सामने) न कहकर एकान्तमें कहते हैं। जो ही पाना पडेगा; क्योंकि उसका वियोग अवश्यम्भावी है। भगवान्का हो जाता है, वह भगवान्को अत्यन्त प्रिय अतएव हमें भगवान्को ही अपनाना चाहिये; क्योंकि वे लगता है। पराये घरकी लडकी विवाहके बाद अपने अपने हैं, दूसरा कोई भी अपना नहीं है। मीरा कहती पतिको अपना स्वामी समझकर—'मैं आपकी ही हूँ' हैं— ऐसा मान लेती है, तो वह उसके घरकी स्वामिनी बन मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई। जाती है, गृहलक्ष्मी बन जाती है। उसने अपने-आपको संसारमें माता, पिता, पत्नी, पुत्र, भाई, बहन दे दिया तो घरका सब कुछ उसका हो गया। ऐसे ही आदिका जो सम्बन्ध है, वह इसी बातके लिये है कि यदि हम भगवान्के शरण हो जायँ तो भगवान्का भी हम उनकी सेवा करें। हमारे पास शरीर, इन्द्रियाँ, वस्तु, सब कुछ हमारा ही हो जाय। किंतु हमारा भाव लेनेका धन, घर, जमीन आदि जो भी सांसारिक पदार्थ हैं, उनके नहीं होना चाहिये। आत्मसमर्पणमें शर्त नहीं होती। द्वारा हमें उन सबकी सेवा करनी है। वे सब आपकी श्रीभगवान्का यह स्वभाव है कि जो किसी सेवाको चाहते हैं, आपको नहीं। आपके पास संसारकी दूसरेका सहारा नहीं लेता, केवल भगवान्का ही सहारा जो वस्तुएँ हैं, संसार उन्हें ही चाहता है; अतएव उन्हें संसारकी मानकर संसारके अर्पण कर दें। भगवान् हमको लेता है, वह उन्हें प्रिय होता है। मानसकी पंक्ति है— चाहते हैं, अतएव हमें अपने-आपको भगवान्के चरणोंमें एक बानि करुनानिधान की। सो प्रिय जाकें गति न आन की।। जब हम किसी दूसरेका सहारा लेते हैं, तब अर्पित कर देना चाहिये। सांसारिक पदार्थ देकर हम भगवान् मानो यह कहते हैं कि दूसरेका सहारा लेकर भगवान्को प्रसन्न नहीं कर सकते। अतएव संसारकी देख लो, उससे यदि तुम्हारा काम बनता हो तो बना लो। वस्तु संसारको और भगवानुकी वस्तु भगवानुको दे देनी परंतु इससे अभीतक किसीका कोई काम नहीं बना। चाहिये। इसीको शरणागति कहते हैं। सांसारिक वस्तुओंको बहुतोंका सहारा ले चुके, पर कोई भी टिक नहीं सका; 'अपना' मानना और संसारसे सेवा लेनेकी कामना करना क्योंकि वे सब-के-सब विनाशी हैं। भगवान् और हम भगवान्से विमुख होना है। इसी प्रकार सांसारिक (जीवात्मा) दोनों ही अविनाशी हैं। अनन्त सृष्टियाँ वस्तुओंको अपना न मानना और संसारकी सेवा करना उत्पन्न होकर नष्ट हो गयीं, पर भगवान् अनादिकालसे भगवान्के सम्मुख होना है। संसारको अपना न मानकर वे ही हैं। इसी प्रकार अनन्त जन्म ले चुकनेपर भी हम उसकी सेवा करनेसे संसारके लोग भी प्रसन्न हो जाते (जीवात्मा) वही हैं-हैं, भगवान् भी प्रसन्न हो जाते हैं और हमारा कल्याण भी हो जाता है। भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते। संसारमें सेवा करनेके लिये ही सब अपने हैं, अपना (गीता ८।१९) 'वही वह भूतसमुदाय उत्पन्न हो-होकर लीन मानने और सेवा लेनेके लिये कोई भी अपना नहीं है। होता है।' प्याऊपर कोई पथिक आ जाय तो उसे पानी पिला देना (२) ही हमारा कर्तव्य है, उससे कोई काम लेना नहीं। वह मन-बुद्धि-इन्द्रियाँ, शरीर और सारा पांचभौतिक अपने इच्छानुसार बैठे या चला जाय। पथिक अधिक संसार प्रतिक्षण बदलता रहता है, परंतु जीवात्मा और संख्यामें आ जायँ या कम संख्यामें, पानी पिला देनेके परमात्मा कभी नहीं बदलते। संसार बदलनेवाला और सिवा हमारा उनसे कोई मतलब नहीं। ऐसे ही संसारमें नाशवान् है तथा हम न बदलनेवाले और अविनाशी हैं— माता, पिता, सास, ससूर, देवर, जेठ आदि जितने हमारे ऐसी स्थितिमें संसारके साथ हमारा निर्वाह कैसे हो सम्बन्धी हैं, उनकी सांसारिक वस्तुओंद्वारा सेवा करना सकता है ? संसारके साथ अपनापन कर लेनेसे हमें दु:ख ही हमारा कर्तव्य है। सेवा करके उसमें अपना कोई

## परब्रह्म परमेश्वरके अवतारतत्त्वका रहस्य ( श्रीजगदीशप्रसादजी गुप्ता )

परम कृपाल् योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण कुरुक्षेत्रमें यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अपने प्रिय भक्त तथा मित्र अर्जुनको निमित्त करके सभी अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

प्राणियोंके हितके लिये उन्हें श्रीमद्भगवद्गीताका उपदेश

देते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण कर्मयोगके उत्तम रहस्यको

अर्जुनसे कहकर कहने लगे कि उन्होंने सृष्टिके आदिमें यह योग सूर्यसे कहा था। यह सुनकर अर्जुनमें यह

स्वाभाविक जिज्ञासा हुई—'आपका जन्म तो अभीका है और सूर्यका जन्म बहुत पुराना है। मैं इस बातको कैसे

समझूँ?' अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः॥

> (गीता ४।४) इस प्रकार अर्जुनके पूछनेपर भगवान् श्रीकृष्ण

अपने और उनके (अर्जुनके) बहुत जन्म होनेकी बात और उन सबको मैं ही जानता हूँ, तुम नहीं (गीता

४।५) कहकर अपने अवतार-तत्त्वके रहस्यका वर्णन करते हैं-



अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।

धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।

पुरुषोंका उद्धार करनेके लिये एवं पापकर्मींके करनेवालोंका

विनाश करनेके लिये और धर्मकी अच्छी तरह स्थापना

करनेके लिये मैं युग-युगमें प्रकट हुआ करता हूँ।

(गीता ४।६-८)

अर्थात् मैं अजन्मा और अविनाशीस्वरूप होते हुए भी तथा समस्त प्राणियोंका ईश्वर होते हुए भी अपनी

प्रकृतिको अधीन करके अपनी योगमायासे प्रकट होता हैं। हे भारत! जब-जब धर्मकी हानि और अधर्मकी वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूपको रचता हूँ अर्थात् साकाररूपसे लोगोंके सम्मुख प्रकट होता हूँ। साधू-

यह शंका होती है कि भगवान तो सर्वसमर्थ हैं, फिर सन्तोंकी रक्षा करना, दुष्टोंका विनाश करना और धर्मकी स्थापना करना—ये काम क्या वे अवतार लिये

बिना नहीं कर सकते?

इसका समाधान यह है कि भगवान् अवतार लिये बिना ये काम नहीं कर सकते, ऐसी बात नहीं है। यद्यपि भगवान् अवतार लिये बिना अनायास ही यह सब कुछ कर सकते हैं और करते भी हैं, तथापि जीवोंपर विशेष कृपा करके अपने दर्शन, स्पर्श और भाषणादिके द्वारा स्गमतासे लोगोंको उद्धारका स्अवसर देनेके लिये एवं

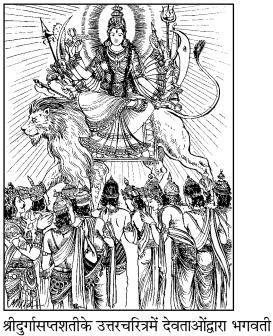
करानेके लिये भगवान् साकाररूपसे प्रकट होते हैं। उन अवतारोंमें धारण किये हुए रूपका तथा उनके गुण, प्रभाव, नाम, माहात्म्य और दिव्य कर्मींका श्रवण, कीर्तन और स्मरण करके लोग सहज ही संसार-समुद्रसे पार हो सकते हैं। ये काम बिना अवतारके नहीं हो सकते।

अपने प्रेमी भक्तोंको अपनी दिव्य लीलादिका आस्वादन

स्वामी अखण्डानन्द सरस्वतीजीने अपने गीता-प्रवचनमें भगवानुके अवतारतत्त्वको जनसाधारणको निम्न Hinduism Discord Server https://dsc.ngg/dhatma | प्रसिद्धारे समझाया Leove BY Avinash/Sha

| संख्या १०] बालरूप राग                               | मकी झाँकी १९  |  |
|---|---|--|
| <u></u>   |   |  |
| एक बार अकबरने बीरबलसे पूछा—'तुम्हारे ईश्वरके        | परमब्रह्मनिष्ठ सन्त श्रीउड़ियाबाबाजी महाराजने अपने        |  |
| पास कोई अच्छा आदमी नहीं है क्या? जब जरूरत           | उपदेशमें इसी प्रकारका एक प्रसंग सुनाया कि श्रीमन्महाप्रभु |  |
| पड़ती है तो उन्हें स्वयं ही संसारमें आना पड़ता है।  | श्रीगौरांगदेवजी महाराजसे उनके किसी शिष्यने पूछा कि        |  |
| अपने किसी आदमीको क्यों नहीं भेज देते?' बीरबल        | महाराज! परमात्मा निराकारसे साकार कैसे हो गये? यह          |  |
| बोले कि इसका उत्तर हम आपको समयपर देंगे। उन्होंने    | सुनकर श्रीमहाराजजी रोने लगे और कहा कि इस धर्मप्राण        |  |
| अकबरके छोटे पुत्रकी एक मूर्ति बनवायी, उसको कपड़े    | भारत–भूमिपर ऐसा कौन है, जो ऐसा बेतुका प्रश्न करता         |  |
| पहनाये और आयाको सिखा–समझा दिया। जब सब               | है ? अरे, जब परमात्मामें सारी शक्तियाँ हैं, तब क्या वे    |  |
| लोग नावपर जल-क्रीडा करने गये तब आयाने सिखानेके      | निराकारसे साकार नहीं हो सकते ? यदि भक्त विपत्तिमें है     |  |
| अनुसार बनावटी बच्चेको पानीमें इस प्रकार गिरा दिया,  | तो क्या भगवान् साकार होकर उसकी रक्षा करनेको नहीं          |  |
| जैसे वह गफलतसे उसके हाथसे छूट गया हो। नदीमें        | आ सकते ? भगवान् या तो धर्मकी पुन: स्थापनाके लिये          |  |
| गिरते ही अकबरने आव देखा न ताव, न किसीको कहा,        | या धर्मपर आघात करनेवालोंके मूलोच्छेदके लिये अवतार         |  |
| स्वयं पकड़नेके लिये कूद पड़े। जब लाये तो वह मोमका   | लेते हैं अथवा भक्तकी भक्तिसे अभिभूत होकर दर्शन देकर       |  |
| पुतला था, पुत्र नहीं। अब तो अकबर बहुत नाराज हुए     | उसका कल्याण करनेके लिये अवतरित होते हैं।                  |  |
| कि यह क्या बदतमीजी है? बीरवलने विनयपूर्वक           | भगवदवतार-रहस्यको पूज्यपाद गोस्वामी श्रीतुलसी-             |  |
| कहा—हुजूर, यह आपके प्रश्नका उत्तर है। यहीं हम       | दासजीने अपने मानसमें इस प्रकार स्पष्ट किया है—            |  |
| सब आपके कर्मचारी आपकी आज्ञापर कूद पड़नेवाले,        | जब जब होइ धरम कै हानी । बाढ़िह असुर अधम अभिमानी॥          |  |
| मर जानेवाले थे, लेकिन आपने हम लोगोंमें-से किसीको    | करिं अनीति जाइ निंहं बरनी । सीदिहं बिप्र धेनु सुर धरनी॥   |  |
| भी हुक्म नहीं दिया और बच्चेको बचाने स्वयं कूद पड़े। | तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥   |  |
| हमारे ईश्वर भी ऐसे ही सहृदय हैं, जब वे देखते हैं कि | बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।                  |  |
| कहीं उनकी आवश्यकता है, तब वे अपने किसी              | निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥                    |  |
| आदमीको न भेजकर स्वयं आते हैं, अवतरित होते हैं।      | (रा०च०मा० १।१२१।६—८, १।१९२)                               |  |
| <b></b>   | <b></b>   |  |
| बालरूप रामकी झाँकी                                  |   |  |
|   | •   |  |
| (श्रीसनातन कुमारजी<br> क्क्ष  रूप लखि आज            | <del></del>   |  |
| क्षि  नीरट नील प्रयोज नील प्रणा                     | कतरँ लोट परि लिएट धरि तन                                  |  |
| <sup>१६३</sup> तन द्युति अमल अमोल।                  | पनि ह्वै जात अबोल।  |  |
| 🞇 पीत झँगा घुँघरारी लटकनि,                          | कबहुँ काग लखि दौरि परत हरि,                               |  |
| 📽 कोमल कलित कपोल॥ रूप०॥                             | केलि करत अनमोल॥ रूप०॥ 🐉                                   |  |
| क्ष रतनारे नैननि की निरखनि,                         | राम राम कहि टेरै जननी, 🍪                                  |  |
| 🎎 अधर अमिय रस घोल।<br>ݵ पावन पद पैजनियाँ रुन—झुन,   | भाजत सुनत न बोल। 🎇<br>मुदित मातु उठि धाय उठावति, 🎎        |  |
| कानन कंडल लोल॥रूप०॥                                 | वारत पान अतोल॥ रूप०॥                                      |  |
| 🐯 घुटुरन के बल चलत अजिर महँ,                        | लिख छवि सजनी भई बावरी,                                    |  |
| 🕮 मधुर तोतरे बोल।                                   | निकसत तनिक न बोल। 🎏                                       |  |
| 🕸 उठत गिरत किलकत हँसि कबहुँक,                       |   |  |
| 🎇 इत उत करत किलोल॥रूप०॥                             | आज बिकी बिनु मोल॥ रूप०॥ 🎇                                 |  |
|   | <b>&gt;</b>   |  |

## दुर्गासप्तशतीमें 'नमस्तस्यै' पदकी पुनरावृत्तिका रहस्य ( श्रीकैलाश पंकजजी श्रीवास्तव )



विष्णुमायाकी अत्यन्त सुन्दर स्तुति की गयी है। 'नमो देव्ये """'' से प्रारम्भ इस स्तुतिमें आगे प्रत्येक छन्दमें

देवीके विभिन्न भाव-रूपों यथा—चेतना, बुद्धि, निद्रा,

क्षुधा, स्मृति, भ्रान्ति, श्रद्धा, लज्जा, शक्ति आदिकी स्तुति की गयी है। प्रत्येक छन्दके अन्तमें 'नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ' शब्दोंसे देवीको प्रणाम किया गया

है। इस स्तुतिका तन्मयतापूर्वक पाठ करनेसे एक विशिष्ट सुखद अनुभूति होती है। प्रत्येक बार इस

बारम्बार प्रणामसे भक्त साधकके अन्तरमें एक विशेष भावका संचार होता है, जिसे शब्दोंमें व्यक्त करना

सम्भव नहीं है। इस स्तुतिका पाठ स्वतन्त्ररूपसे (तन्त्रोक्त

देवीसूक्तके रूपमें) भी प्रचलित है। इसकी काव्य-रचना

ही अपने-आपमें इतनी सौन्दर्य एवं सौष्ठवपूर्ण है कि यदि कोई इसका पाठ आध्यात्मिक या भक्तिभाव समझे

बिना भी करे तो उसे एक अनुपम आनन्दकी अनुभूति होती है। वैसे यह बात सम्पूर्ण सप्तशतीके सम्बन्धमें ही सत्य है, किंतु तत्त्वदर्शी ऋषियोंने इन मन्त्रोंमें आये

**'नमस्तस्यै'** आदिके तात्पर्यको यथार्थ रूपसे समझा तथा अनुभव किया है। अपितु यह कहना अधिक ठीक होगा कि जगदम्बाने ही अपनी प्रिय संतानोंके लिये स्वयं ये रहस्य खोल दिये हैं। उन मन्त्रोंके द्रष्टाओंने कृपापूर्वक

इन तत्त्वोंको अपनी दिव्य वाणीद्वारा प्रकट करके सर्वसाधारणके लिये सुलभ कर दिया है। 'श्रीदुर्गासप्तशती' की आध्यात्मिक व्याख्या 'साधन

समर' के नामसे (बंगला भाषामें) भक्तोंतक पहुँचानेवाले ब्रह्मर्षि सत्यदेव भी ऐसे ही एक साधक पुरुष हुए हैं। उक्त स्तुतिमें आनेवाले बारम्बार प्रणामके सम्बन्धमें

'साधन समर' में जो विचार व्यक्त किये गये हैं, वे अत्यन्त सारगर्भित एवं आध्यात्मिक महत्त्वके हैं।

ब्रह्मर्षि सत्यदेव बताते हैं—'इस स्तुतिके मन्त्रोंमें तीन बार 'नमस्तस्यै' शब्दका प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त एक पद 'नमो नमः' भी प्रयुक्त हुआ है। प्रथम 'नमस्तस्यै' पदद्वारा स्थूल प्रणाम अभिव्यक्त

हुआ, अर्थात् माँके आधिभौतिक स्थूल रूपका अवलम्बन करके ही प्रथम प्रणाम विहित हुआ है। वस्तुत: इस स्थलपर प्रणामरूपी कार्य भी कायिक

एवं वाचिनक दोनों ही प्रकारसे स्थूलरूपमें ही अभिव्यक्त होता है। इसके पश्चात् आता है द्वितीय 'नमस्तस्यै' यह माँके सूक्ष्म स्वरूपको लक्ष्य करके

उक्त हुआ है। जो सूक्ष्म चैतन्य शक्ति स्थूलरूपमें आकर विशिष्ट नाम एवं आकार ग्रहण करके अभिव्यक्त होती है, उसीको लक्ष्य करके—उसीकी

उपलब्धि करके जो प्रणाम किया जाता है, वह ही प्रणामकी द्वितीय या सूक्ष्म अवस्था है। इसको मानसिक

है, यह कारण स्वरूपको प्रणाम है। जिस आदि कारणसे सूक्ष्म एवं स्थूल दोनों ही अभिव्यक्त होते

प्रणाम कहा जाता है। इसके उपरान्त तृतीय 'नमस्तस्यै'

हैं। हमारी माँ, जगदम्बाके उसी कारण स्वरूपको लक्ष्य करके, उपलब्धि करके, जो प्रणाम किया जाता

है, वह ही तृतीय प्रणाम है। यह प्रणाम कारण-शरीरमें ही अभिव्यक्त होता है। यद्यपि कारण-स्वरूप

बुद्धितत्त्वके भी ऊपर अवस्थित है, फिर भी यह

| <u> </u>  |
|---|
| साधक तत्स्वरूप हो जाता है, इसी कारण इस                              |
| अवस्थाको सारूप्य कहते हैं; यहाँ भी विशिष्टता                        |
| रहती है। इसके पश्चात् सायुज्य है; इस अवस्थामें                      |
| कोई भी विशिष्टता (भेद या पार्थक्य) नहीं रहता,                       |
| जीव निर्विशेष चैतन्य स्वरूपमें उपनीत हो जाता है,                    |
| पहुँच जाता है; इसका ही अन्य नाम निर्वाण है। हे                      |
| साधको! तुम्हारी दैनिक साधनामें ही जैसे इन चारों                     |
| अवस्थाओंके प्रति लक्ष्य अन्तर्निहित रहता है। यहाँ                   |
| चार प्रणामोंके माध्यमसे इन चार स्वरूपों या                          |
| अवस्थाओंकी ओर विशेषतः लक्ष्य रखनेके लिये ही                         |
| संकेत किया है। जो साधक सम्पूर्ण चारों अवस्थाओंके                    |
| प्रति लक्ष्य रखनेमें समर्थ न हो, वे अन्ततः इनमेंसे                  |
| दो या तीनके प्रति भी विशेष लक्ष्य रखनेकी चेष्टा                     |
| करें तो वह ही यथार्थ साधना होगी। प्रतिदिन ही                        |
| अल्पाधिक मुक्तिकी अनुभूति करनी होगी, उसका                           |
| आस्वाद प्राप्त करना होगा।   |
| ऐसा करनेसे ही जीवन्मुक्तिका आस्वाद प्राप्त                          |
| होगा, उसकी उपलब्धि होगी।  |
| इस स्तुतिमें जहाँ-जहाँ <b>'नमस्तस्यै'''''</b> वाला                  |
| अंश है, सभी स्थलोंपर उसका तात्पर्य उपरोक्त प्रकारसे                 |
| ही समझना चाहिये। व्याख्याकारने इन प्रणामोंके सम्बन्धमें             |
| यह भी स्पष्ट किया है कि यद्यपि सप्तशती मन्त्र                       |
| विभागमें इस मन्त्रका शेषांश अर्थात् 'नमस्तस्यै नमो                  |
| नमः' यह अंश एक पृथक् मन्त्रके रूपमें निर्दिष्ट हुआ                  |
| है, फिर भी अन्तके ' <b>नमो नमः</b> ' अंशको तृतीय <b>'नमस्तस्यै'</b> |
| से पृथक् करके चतुर्थ प्रणामरूपसे व्यक्त करनेसे कोई                  |
| हानि नहीं है। तृतीय प्रणाम कारणभावको लक्ष्य करके                    |
| विहित हुआ है। किसी साधकके कारण-स्वरूपमें                            |
| उपनीत हो सकनेसे, उसके लिये कारणातीत क्षेत्रमें भी                   |
| प्रवेश करना अनायास साध्य हो जाता है; इसलिये कारण                    |
| स्वरूपको प्रणाम करते-करते ही 'नमो नमः' कहकर                         |
| कारणातीत क्षेत्रमें उपनीत होनेकी बात कही गयी है।                    |
| स्तुतिमें आये प्रणामोंके इस रहस्यको हृदयंगम                         |
| करनेके उपरान्त इस स्तुतिका पाठ निश्चय ही अधिक                       |
| गहन अनुभूतियोंकी उपलब्धि करायेगा।                                   |
|   |

( श्रीछैलबिहारीजी गुप्त 'छैल') रूठे ही रहोगे क्या, देव! क्या मेरी इतनी-सी भी विनती न सुनी जायगी? सुना दो न फिर वही अपनी बंसीकी रसमयी तान। संसारकी किसी भी वस्तुकी—अर्थ, धर्म, काम, यहाँतक कि निर्वाणगितकी भी कामना नहीं है, प्रभो! भक्तजन उस रसमयी तानकी मधुरता समझेंगे और मुझे चाहिये केवल आपकी निर्मल भक्ति, मेरे ईश्वर! समझकर उसीमें अन्ततक लवलीन हो जायँगे। मैं याचक हूँ, मेरे धनकुबेर! आपके लिये तो कुछ नास्तिकजन लेकिन उसे पागलका प्रलाप अथवा भी अदेय नहीं है। मेसमेरिज्म समझेंगे। फिर क्या इतनी तनिक-सी भी भिक्षा नहीं मिलेगी? वैज्ञानिक महापुरुष उसे विज्ञानद्वारा किसी राग-विशेषकी प्रतिध्वनिके रूपमें प्रमाणित करनेकी असफल इसी भक्ति-प्रेमको साथ लिये हुए मैं अपनी इस

अमानतिक्षिडीनईंDiscord Server https://dsc.gg/dharma कोलोAछट्टिफीनभेगरेटिंप्सिपे Avinash/Sha

अध्ययन किया।

केवल इसी वस्तुकी चाह है।

अधम तथा नीच हो गया हूँ!

दशापर तो दुष्टिपात करनेका कष्ट उठाओ।

भक्तका साधना

समय-पर-समय बीतता गया, मैं तुम्हें मनाता ही रहा; किंतु तुम न पसीजे, देव! तुम्हारी पुण्य-स्मृतिकी प्रकाश-रेखाके सहारे-सहारे मैं कितने समयसे भटकता फिर रहा हूँ, यह अतीतके गर्भसे पुछे कोई। समय-पर-समय बीतता गया, मैं तुम्हें मानता ही रहा, किंतु तुम न पसीजे, देव!

गद्य-काव्य-

चेष्टा करेंगे।

लेकिन अब तुम्हीं बताओ न कि तुम्हें कैसे मनाया जाय? अज्ञानी तो हूँ, फिर इतनी बुद्धि आये भी कहाँसे कि तुम्हें पिघला दुँ। यह भी तो नहीं जानता कि मेरे दीनदयालु अपने इस मुर्खाधिराज भक्तपर रीझेंगे भी क्योंकर?

अटल हूँ....और अन्ततक रहूँगा, जबतक मेरे नटवरनागर अपने भक्तपर पूर्णरूपसे अपनी कृपादृष्टि न करेंगे। आपने ही तो कहा है—'मैं भक्ताधीन हूँ।' हँ:!! भक्ताधीन-क्या यह वास्तवमें आपने कहा है अथवा वेदादिमें मनगढंत ही है?

लेकिन भूलना नहीं, प्रभो भी भ्रवकी तरह

कैसे विश्वास हो मुझे, देव! मैं तो इसे ही अत्यधिक समझँगा। जब मेरे नटवर-नागर अपने पवित्र दर्शनोंका लाभ

सहजमें ही करा दें, यही मेरी निधि होगी। हृदयके अंचलमें अपना यह सुख बटोरे अन्ततक मैं आपकी पुनीत साधनामें लीन हो जाऊँगा।

यही तो मेरी साधना है, मेरे देव!

सोचो न कि मुझे उस समय कितना दु:ख न होता होगा। लेकिन मैं इसे एक क्षण भी माननेको प्रस्तुत नहीं हूँ कि मैं तो तुम्हारी पुनीत साधनामें अनेकानेक कष्ट सहता रहूँ और तुम यहाँ क्षीरसागरमें शान्तिपूर्वक बैठे रहो।तो तुम्हीं बताओ न कि फिर किस प्रकार तुम्हारी भक्ति की जा सकती है ? तो क्यों न शीघ्र आकर मेरा इन संसारवालोंसे पीछा छुडा दो। इसी साधनाको लेकर मैं अपने दीनदयालुके दरबारतक आपका छूटेगा पिण्ड और मेरा होगा उद्धार।

नश्वर देहको त्यागकर शिवलोकको जाना चाहता हुँ, जहाँ

वेद, महाभारत तथा गीता आदिका सूक्ष्मरूपसे

फल यह निकाला कि आपने अपने अनेकों भक्तोंको

मुझे भी यही दान दे दीजिये न, प्रभो; मुझे भी तो

शीघ्र आओ, मेरे देव! और आकर तनिक मेरी

सांसारिक बन्धनोंमें पड़कर मैं कितना विषयासक्त,

आओ, भगवन्! आओ!! आकर शीघ्र तारो न मुझे!!!

इसमें आपकी भी तो निन्दा होती है, देव! जब संसार मुझे

देखकर मेरा हास्य करता है। कोई कहता है—'बगुला-भक्त

है, ''मेढक और मल्हार गाये, ''बिल्ली चली हज्जको, ' इत्यादि।

लोग अनेकों फबतियोंसे मुझे विभूषित करते हैं।

अनेक रूपोंमें अवतार लेकर तारा तथा गीताका पवित्र उपदेश

देकर तो आपने संसारको वास्तविक मार्ग दिखला दिया। अबोध बालक ध्रुवको आपने प्रसन्न होकर भक्तिदान दिया।

पहुँचकर भी मेरी आत्मा आपमें ही लीन रहे।

सरयू रामायणके हनुमान् संख्या १० ] सरयू रामायणके हनुमान् (डॉ० श्री ए० बी० साईप्रसादजी) आदिकवि वाल्मीकि जिस प्रकार अपनी रामायणको राम कहाँ कह दुखी होनेवाले हनुमान्के दुःखको दूर करनेके लिये माँ अंजनाकी प्रार्थनाको स्वीकारकर खुद **'सीतायाश्चरितं महत्'** कहकर सीताके प्रति अपनी श्रद्धा एवं भक्तिको प्रकट करते हैं, वैसे ही बेंगलूरु शिव और पार्वती रामको मनाकर किष्किन्धा लाते हैं। विश्वविद्यालयके हिन्दी विभागके पूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय हनुमान्को आश्वासन देते हुए राम कहते हैं— डॉ॰ सरगु कृष्णमूर्तिजी अपने सरयू रामायणके द्वारा हनुमान जहाँ हो राम वहीं। हर एक हमारा काम वहीं॥ **'हनुमच्चरितम्'** का गान करते हैं। अपने सरयू रामायणके ३२वें भागके अन्तमें भू-परसे उठ रही हनू पूँछकी आरम्भ (भाग १)-में इस बातकी वे पुष्टि इस प्रकार प्रशंसा वे अपने सीता-राम-संवादमें करते हैं। राम करते हैं— कहते हैं— श्री राम कथा है महोद्यान। माली मालिक हैं हनुमान॥ यह (वाल) धरा स्वर्ग का महासेतु । मानवता का है महाकेतु ॥ हुनु पूँछ कल्पतरु धरणी का। आधार काष्ठ भवतरणी का॥ मन! चलो अभी वन में चुन लो। पुण्य के फूल सौरभ धन लो।। लोकनायक रामके अत्यन्त प्रिय दूत हनुमान्जीद्वारा सरयू रामायणके आरम्भ वाक्य (पद) और अन्तिम राम-कथाका गायन सुनकर हनुमान्के परम भक्त डॉ० पद साबित करते हैं कि वास्तवमें सरयू रामायण सरगु कृष्णमूर्ति उसीका पुनर्गायन अपने सरयू रामायणमें हनुमच्चरितम् ही है। करते हैं। अपने बत्तीस खण्डोंवाले रामायणके नामकरणके डॉ॰ सरगु कृष्णमूर्तिने देश-विदेशके काव्यों, बारेमें वे लिखते हैं-रामचन्द्रकी जन्मभूमिको अमृत लोकगीतों एवं पुराणोंसे प्रेरणा ग्रहणकर कल्पनाका प्रदान करनेवाली सरिता (सरयू)-के नामपर इस कृतिका प्रश्रय लेकर औचित्यके धरातलपर नये प्रसंगोंके पुष्पोंसे रामचरितकी माला गूँथी है। हनुमान्-चरित्रको उजागर नामकरण हुआ है। प्रायः सभी रामायणोंमें कथा रामके आसपास ही करनेके लिये अनेक स्रोतोंसे डॉ॰ सरगुने कथा-संकलन मॅंडराती है, मात्र मैथिलीशरण गुप्तजीके 'साकेत' में किया है। उनकी कल्पनाके अनुसार राम-जन्मके पहले कथा 'उर्मिलायाश्चरितम्' होनेके कारण साकेतमें ही हनुमानुका जन्म हुआ था। जब पुत्रकामेष्टि याग चल रहा था, तब हुनुमान् वहाँ उपस्थित थे। अपनी माँ बहुत हदतक ठहर जाती है। सरयू रामायणमें हर कहीं हनुमान् पहले पहुँचते हैं और राम बादमें। कारण कन्नड़ अंजनासे वे कहते हैं— दास-साहित्यके सर्वश्रेष्ठ सन्त पुरन्दरदासकी तरह डॉ॰ माँ उस समय मैं भी जाकर। शतकोटि मन्त्र पढ़ता गाकर॥ सरगु कृष्णमूर्तिजी भी मानते हैं-'हनुमन मतवे हरिय जब वहाँ उपस्थित ब्राह्मण और ऋषीश्वर हनुमान्जीसे मतव् ' अर्थात् हनुमान्का मत ही हरि अर्थात् रामका मत उनके गोत्रके बारेमें पूछते हैं तो वे जवाब देते हैं—'*हरि* है। सरयू रामायणके १८वें भागमें सरगुजी कथासार देते गोत्र विमल मेरा।' हुए लिखते हैं—समूचे रामकाव्यमें रामचन्द्रजीके उपरान्त रामके नामकरण-उत्सवके समयपर भी हनुमान् वहाँ अत्यन्त दिव्य एवं सक्षम पात्र हनुमान्जी ही हैं। स्वयं उपस्थित थे। परशुराम रामको अपना नाम देते हैं। दूर खड़े श्रीहनुमान्जी कहते हैं—'*मैं सदा तुम्हारा हूँ मन में।* होकर हनुमान्जी रामय्या, रामय्या कहते हैं।'रामैया'शुद्ध तुम हो मेरे मन में, तन में॥' तेलुगु शब्द है, जिसका तात्पर्य लिये सबको रमानेवाला है। हनुमान्जीद्वारा यह शब्द सुनकर सब मुसकराते हैं। तुलसी रामायणमें कथाका आरम्भ रामावतारके कारणोंको स्पष्ट करनेके द्वारा होता है। सरयू रामायणका एक बारकी बात है, हनुमान्जी शिवजीके साथ आरम्भ अपने अनुज समेत सरयू-प्रवेश करनेवाले रामको रामके यहाँ जाते हैं। वहाँ रामजीका जूठन खाते हैं। देख दुखी होनेवाले हनुमान्से होता है। 'राम कहाँ मम शिव मदारी बनते हैं तो हनुमान् बन्दर बनकर अपने

भाग ९२ \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* नाचसे रामजीका मन बहलाते हैं। महेश—इन तीनों देवताओंमेंसे कोई हैं या आप दोनों नर हनुमान्की जन्मसम्बन्धी बातोंका जिक्र हम न और नारायण हैं। हनुमान्जीकी बातोंको सुनकर वाल्मीकिके राम लक्ष्मणसे कहते हैं—'ये मधुरभाषी हैं। इनका दक्षिण भारतीय रामायणोंमें देख सकते हैं और न ही वाल्मीकि या तुलसीके रामायणमें। सरयू रामायणके दूसरे उच्चारण शुद्ध है। इनके बोलनेकी शैली बहुत उत्तम है। ये न तो अधिक शब्द बोले न कम। ये तीन वेदोंके ज्ञाता भागमें सरगुजी लिखते हैं— रुद्रांश वायु पथमें आकर। केसरी सती आश्रय पाकर॥ मालूम पड़ते हैं। ' सरगुके हनुमान् दूरसे राम-लक्ष्मणको देखते हैं। उनको पहचान जाते हैं। तुलसीके हनुमानुकी हनुमत्स्वरूप सादर धरता। अंजना गर्भमें घर करता॥ हनुमान् ग्यारहवें रुद्रके अवतार माने जाते हैं। ही भाँति सरगुके हनुमान् भी सुग्रीवको बताते हैं— उनके शिवांश होनेकी बात स्कन्द, वराह, भविष्य, अग्नि ये हरि एवं शेष हैं, मीन-मेष। क्यों? होगा कोई शुभ विशेष॥ आदि पुराणोंके साथ-साथ महाभागवत, बृहद् धर्म आदि हनुमान्को देखकर राम लक्ष्मणसे कहते हैं-उपपुराणोंमें भी देख सकते हैं। तेलुगुके रामायण-इसका स्वरूप दिव्याभिराम। कल्पवृक्षमें इसका जिक्र है। सागर का गर्जन है स्वर में। सुरता शोभित है इस नर में॥ भाग दोमें ही एक जगह पायस-वितरणकी चर्चा आगे यह भी कहते हैं-करते हुए सरगुजी लिखते हैं-वायु का गमन, वज्र की शक्ति। सूर्य का तेज, वाणी-सदुक्ति॥ शत पर्वत बल है नर वर में। जाने क्या है इनके उर में॥ कैकई अंश खग ले जाता। केकसी सदन धरकर आता॥ तुलसीके हनुमान् राम और लक्ष्मणमें देवत्वको केकसी प्रसन्न उछलती है। गुत्थियाँ भाग्यकी खिलती हैं।। आनन्दरामायणके अनुसार एक चील पायसका देखते हैं। बुद्धिमानोंमें अग्रगण्य हनुमान्की प्रशंसा एक अंश ले जाकर घोर तपस्या करनेवाली अंजनाकी वाल्मीकिके राम करते हैं, पर सरगुके हनुमान्की प्रशंसा हथेलीमें डाल देती है। उसके ग्रहण करनेसे अंजना गर्भ वाल्मीकि और तुलसीसे एक पग आगे बढ़कर राम करते धारण करती हैं और हनुमान्को जन्म देती हैं। पर हैं। हनुमानुकी वाणी-सद्क्तिके साथ-साथ उनके शत सरगुजी अंजनाका नाम न लेकर केकसीका नाम लेते हैं। पर्वतबलकी भी प्रशंसा करते हैं। भाग १८ में 'रामकाव्यमें हनुमानुजीका स्थान' सीताकी खोजमें निकले वाल्मीकिके हनुमान् रावणके अन्त:पुरका वर्णन विस्तृत ढंगसे करते हैं। रावणके उपशीर्षकके अन्तर्गत सरगुजी लिखते हैं—अंजना एवं केसरीके नन्दन हनुमानुजी वायुपुत्र भी हैं तथा शिवजीके शयनागारमें मन्दोदरीको देख भूलसे उन्हें सीता समझ अंश भी। कतिपय रामकाव्योंमें रावण स्वयं कहता है कि लेते हैं। फिर अपनी वानर-बुद्धिपर शर्माते हैं। तुलसीके हनुमान्जी साक्षात् शंकर हैं। स्कन्दपुराणमें 'रुद्रात्मकाय' हनुमान् **'मंदिर महुँ न दीख बैदेही'** (सुन्दरकाण्ड) शब्दका प्रयोग हनुमान्के लिये हुआ है। मराठीके सन्त कह वहाँसे बाहर आ जाते हैं। सरगुके हनुमान्में तुकाराम भी कहते हैं-'तुका म्हणे रुद्रा अंजनाचि तुलसी-जैसी संक्षिप्तता भले ही न हो, वाल्मीकि-जैसा या कुमार।' किष्किन्धामें रामके आगमनके उपरान्त विस्तार भी नहीं है। सरगुके हनुमान् अपनी सोचपर रामायणकी जितनी भी घटनाएँ आती हैं, उनका पूर्ण *'रावण समीप है सीता क्या'* पछताते हैं। अपनी संचालन हनुमान्जीद्वारा होता है, अर्थात् पूरी कहानीके सोचको पाप मानते हैं-मैथिली नहीं यह हो सकती। यों राम प्रिया न सो सकती॥ सूत्रधार या मूलाधार हनुमान्जी ही हैं। वाल्मीकि, तुलसी या तेलुगुके रामायणोंमें राम और मेरे मन में छा गया ध्वान्त। हो पाप शान्त, हो पाप शान्त॥ हनुमान् एक-दूसरेके आमने-सामने पहली बार ऋष्यमूक तुलसीके हनुमान् पेड़परसे राम-मुद्रिकाको गिराकर पर्वतके पास ही आ जाते हैं। ब्राह्मणवेषधारी हनुमान् रामका गुण-गान करते हैं। श्रवणामृतकथा सुनानेवालेको राम और लक्ष्मणसे पूछते हैं—क्या आप ब्रह्मा, विष्णु, सामने आनेके लिये जब सीताजी कहती हैं तो हनुमान्

| संख्या १०] सरयू राम                                       | ायणके हनुमान् २५   |
|---|--|
| *********************************                         | **********************************                                 |
| पेड़परसे उतरकर अपना परिचय इस प्रकार देते हैं—             |  |
| राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुनानिधान की            | ॥ <i>विश्राम करो फिर कल आओ।</i> ।'यह कल आओ                         |
| यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी    | ॥ वाली बात लगता है डॉ० सरगुजीने तमिलके कम्ब                        |
| (रा०च०मा० ५।१३।९-१०                                       | ) रामायणसे ग्रहण है। कम्ब रामायणमें विरथ रावणसे राम                |
| सरगुके हनुमान् विवेकसम्पन्न हैं। सरगुके हनुमा             | न् कहते हैं— <b>'इनरु पोयि नाले वा'</b> अर्थात् आज चले             |
| अपना परिचय देते हुए कहते हैं—' <i>मैं हूँ हनुमान्। मे</i> | 🗷 जाओ और कल आओ। हनुमद्भक्त होनेके कारण                             |
| जीवन है राम गान॥ राम ने मुझे भेजा तवार्थ। त               | व सरगुजीने इस बातको रामपर नहीं हनुमान्पर लागू किया                 |
| दर्शन से मुझको नवार्थ॥' शंका करनेवाली सीतार               | ते है। इसका जिक्र हमें अन्य रामायणोंमें नहीं मिलता। यह             |
| हनुमान् कहते हैं  | सरगुजीके हनुमान्की एक खास विशेषता है।                              |
| मैं रामपुत्र हूँ हे माता। राम है मदीय विजय दाता           | ॥ हनुमान्के चरित्रको और उदात्त बनानेके लिये                        |
| चूड़ामणिको लेकर हनुमान् वापस लौटते हैं। सुग्री            | त्र लगता है थाईलैण्ड (Thailand)-के रामायणसे सुवर्णमत्स्या          |
| समझ जाते हैं कि हनुमान् अपने कार्यमें सफल हैं। इसक        | ी पात्रको सरगुने लिया है। थाईलैण्डके रामायणकी तरह                  |
| खबर रामको देते हुए तुलसीके सुग्रीव कहते हैं—'ना           | थ सरयू रामायणमें भी वह रावणकी पुत्री है। सरयू                      |
| काजु कीन्हेउ हनुमाना।' अपने सामने हाथ जोड़क               | र रामायणके भाग-२१ में सबसे पहले सरगुजी सुवर्णमत्स्याका             |
| खड़े हनुमान्से तुलसीके राम पूछते हैं—'कहहु ता             | त नाम लेते हैं। समुद्रको लॉॅंघते समय सुवर्णमत्स्या                 |
| केहि भाँति जानकी। रहति करति रच्छा स्वप्रान की।            | ।' हनुमान्को देख मोहित होती है। वह अपने-आपको                       |
| (रा०च०मा० ५।३०।८) यहाँ सरगुके हनुमान् रामक                | ो समर्पित करना चाहती है, पर बाल ब्रह्मचारी उसके                    |
| मनोदशाको समझनेवालेके रूपमें प्रस्तुत किये गये हैं         | । प्रस्तावको अस्वीकार करते हुए उसे आशीर्वाद देकर                   |
| सरगुके हनुमान् वाल्मीकिके हनुमान्की तरह मैंने सीताक       | ो भेज देते हैं। भाग-२२ में फिर सुवर्णमत्स्याका प्रस्ताव            |
| देखा है न कहकर रामसे मात्र इतना कहते हैं—'सीता            | है है। यहाँ सुवर्णमत्स्या न कहकर उसे मात्र मत्स्य-कन्या            |
| <i>लंकामें, विकल पुनीता है।</i> राम जानते हैं, कि सीत     | ॥ कहते हैं। स्वेदबिन्दुको ग्रहण करनेका प्रस्ताव भाग-२३             |
| लंकामें हैं। जो बात राम जानते हैं, उसी बातको सरगुवे       | ь में लाते हैं। भाग-२४ में प्रभंजनी नामक राक्षसी                   |
| हनुमान् दुहराते हैं। सरगुके हनुमान्में वह बुद्धिमत्ता औ   | र सेतुभंगके लिये आती है। थाईलैण्डके रामायणके अनुसार                |
| संवादशीलता नहीं है, जो वाल्मीकिके हनुमान्में है।          | वह रावणकी पुत्री सुवर्णमत्स्या है। थाईलैण्डके रामायणके             |
| शरणार्थी बनकर आये विभीषणपर सब शंका कर                     | ते अनुसार हनुमान्जी विभीषणकी पुत्री बेन्जकायी और                   |
| हैं। सब अपनी-अपनी राय सुनाते हैं। तुलसीके हनुमा           | न् रावणकी पुत्री सुवर्णमत्स्या दोनोंसे शादी कर लेते हैं।           |
| रामके मुँहसे ' <i>मम पन सरनागत भयहारी।</i> ' सुनक         | र दोनों एक-एक पुत्रको जन्म देती हैं। सरगुजीके हनुमान्              |
| हर्षका अनुभव करते हैं। हनुमान् विभीषणको अच्छ              | ो ब्रह्मचारी होनेके कारण विवाहके प्रस्तावको ठुकराते हैं।           |
| तरहसे जानते थे। फिर भी तुलसीके हनुमान् रामर               | ते हनुमान्के बारेमें शिवजी शक्तिसे कहते हैं—                       |
| खुलकर यह नहीं कहते कि आप बेफिक्र होक                      | र किप मात्र नहीं पुरुषोत्तम है। सत्य, शिव, सुन्दर संगम है॥         |
| विभीषणको शरण दे सकते हैं। सरगुके हनुमान् पृ               | रे हनु ब्रह्मचर्य शक्ति स्वरूप।श्रीराम भक्ति साम्राज्य भूप॥        |
| विश्वासके साथ रामसे कहते हैं—'ये शरण योग्यः               | हैं सरगुजी अपने सरयू रामायणमें हनुमान्की प्रशंसा                   |
| सुगुणसिन्धु। यद्यपि ये हैं पौलस्त्य बन्धु॥ द्रोह क        | ति करनेमें कभी थकते नहीं हैं। भाग २० में हनुमान्को                 |
| बात ये रच सकते। तो कौन राम से बच सकते।                    | u' समर्पित करते हुए सरगुके सुग्रीव कहते हैं—                       |
| हनुमान् और रावणके बीच युद्ध हर रामायणमें होत              |  |
| है। इस युद्धका चित्रण सरगुजी अपने एक विशिष्ट ढंगर         | ते शांति में भूमि सौर्य में सूर्य। हनु बुद्धि बृहस्पति विजय तूर्य॥ |

सरयू रामायणके ३२वें भागमें रामके राजतिलककी शक्ति में वज्र युद्ध में काल। हठता में है यह लोकपाल॥ घोषणा सरगुजी हनुमान्से करवाते हैं-हनुमान हिमालय निश्चय में। संदेह नहीं इनकी जय में॥ सरगुके जाम्बवान् हनुमान्से समुद्रको लाँघनेके कल राम तिलक है सब आये। सौभाग्य सभी अपना पाये॥ लिये प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं-सरगुजी अपने रामके द्वारा यों कहलवाते हैं— बलवान और हो बुद्धिमान। शक्तिमें वज्र हो रवि विधान॥ 'सीते हनुमान्। एकैक वीर है बल निधान॥' जाम्बवान्की बातोंको सुनकर सरगुके हनुमान्में आत्म-अपनेको मारुतिका दास माननेवाले सरगुजी अपनी विश्वास बढ़ जाता है। वे उनको आश्वासन देते हैं— मनोभावनाको इस प्रकार प्रकट करते हैं-हाँ अभी जलिध तर जाऊँगा। लंका में आग लगाऊँगा॥ मैं रहूँ मारुती के संगमें। मैं रँगू राम रस के रँगमें॥ लगाऊँगा। रावण को मार गिराऊँगा॥ किप पूजित हरिपद पद्मों में। मैं भूंग बन्ँ रस-सद्मोंमें॥ सीताका

## विरह ( श्रीइन्दरचन्दजी तिवारी )

हींकारिशंडकाने रिक्रावार Server https://dsc.gg/dhaminिक्रद । जैंVईरि रिकिशिय सिंधे विभिन्न किंग्रे हिंदि हो अ

```
मेरे विरहका कारण है कि आप कभी मुझे मिले थे।
मेरे विरहका कारण हमारा आपसे मिलना ही तो
```

घूमा-फिरा न होता तो फिर विरहका कारण ही कहाँसे उत्पन्न होता। मुझे अपने विरहपर पूर्ण विश्वास है चूँकि मुझे

है। अगर आपसे मिला न होता, आपको देखा न

होता, आपके साथ उठा-बैठा न होता, खाया-पिया,

मालूम है कि मेरे विरही बन जानेपर आप अपनेको रोक

न पायेंगे, परंतु मेरे पास आ जायँगे। मेरी विरह-वेदना मिटानेहेतु। मुझे अपने मिलनसे कृतकृत्य करनेहेतु। मीरा, सहजो, दया, सूरको आप उनके विरही

बन जानेपर ही तो प्राप्त हुए थे। गोपियोंका विरह तो आप जीवनभर भुला ही न पाये। विरही हारता नहीं, वह हमेशा जीतता ही तो है।

प्रीतम चला गया। चारों दिशाएँ अन्धकारसे घिर गयीं। विछोहकी कालिमाने मिलनसे दूर कर दिया। विरहीने कमलकी भाँति अपने नेत्र बन्द कर लिये और प्रीतमका निरन्तर ध्यान करता रहा। सुबह हुई, मिलनका प्रकाश

चारों दिशाओंमें फैल गया। पुनः कमलकी कलियोंकी भाँति विरहीने बाँहें फैलाकर उसका स्वागत किया। पुनः मिलनकी निधि पाकर वह नाच उठा, मदोन्मत्त

होकर उसके पाँवोंमें बँधे घुँघरू झंकार उठे, वह मदोन्मत्त

मादक मन्द बयार शीतल विरहाग्निका ही दिव्य सन्देश देकर तो अण्-अणुको आनन्दित करती है। उनको लुभाती है। दिव्यानन्द प्रदान करती है। आपसे मिलनेका कारण यह विरह ही तो है।

अगर विरह नहीं तो मिलन कैसा? आपको पानेका

कोयलकी कुक, भ्रमरोंका गान, पक्षियोंका कलरव,

रास्ता यह विरह-पथ ही तो है।

विश्वके निर्माणका कारण यह विरह ही तो है।

और उसी दिन तो प्रलय होती है न, जिस दिन

अणु-अणुसे मिलनेहेतु व्याकुल है। संगीत और

विरह समाप्त हो जाता है। पुष्पके खिलनेका कारण

वह विरह ही तो है।

सृजनका नृत्य समग्र ब्रह्माण्डोंमें होने लगता है।

भाग ९२

संगीतके दिव्य स्वर, काव्यकी पंक्तियाँ आदि सब विरह-सागरमें ही तो डूबी हुई हैं। अगर विरह न होता तो इन अलभ्य वस्तुओंका पाना कैसे सुलभ हो पाता। विरहका अर्थ है व्याकुलता और व्याकुलताका अर्थ है प्रेमाश्रु और प्रेमाश्रुका अर्थ है आपसे मिलन-आह्नादता, नर्तन, मदोन्मत्तता।

हे प्रभ्! कभी इस अकिंचन क्पात्र, क्चालीको भी दे देना थोड़ा-सा अमृत जिसे पानकर निरन्तर तेरे दिव्य विरहमें दग्ध होता रहूँ और गाता रहूँ — 'राधे

संख्या १० ] संत-वचनामृत संत-वचनामृत ( वृन्दावनके गोलोकवासी संत पूज्य श्रीगणेशदास भक्तमालीजीके उपदेशपरक पत्रोंसे ) ☀'राम' इस नामकी महिमा अपार है। मरा-मरा आया कि कामोंको छोड नहीं सकता है। टट्टीमें राम-कहकर भी ऋषि ब्रह्मस्वरूप हो गये। भगवानुका नाम राम करता है। हनुमान्जीने पीठपर एक लात मारी। रात्रिके समय श्रीहनुमान्जी श्रीरामजीकी सेवा करने लगे जब तन्मय होकर लिया जाता है तब हृदयमें नामी तथा उसकी लीलाएँ प्रकट हो जाती हैं। अन्त:स्थलमें दैवीगुण तो, जब श्रीरामजीकी पीठपर हाथ लगाया तो श्रीरामजी प्रकट हो जाते हैं। समस्त अयोध्यावासी रामका, राम नामका कराहने लगे, पीठमें बडी पीडा है। बहुत पूछनेपर कहा-आश्रय पाकर कृतार्थ बन गये। इसी प्रकार श्रीराधा सर्वेश्वरीने तुमने ही मारा है। हनुमान्जीकी समझमें नहीं आया। अत्यन्त प्रार्थना करनेपर श्रीरामजीने बताया। तुमने मेरे नामोंकी महिमा, उनका अर्थ कहकर श्रीयशोदा माताके प्रेमी भक्तको कीर्तन करते वक्त मारा। उस चरण-कष्टको दुर किया। उनके हृदयमें भक्तिका उल्लास प्रकट होकर अनन्त सुख देने लगा। प्रहारको यदि मैं अपनी पीठपर न लेता तो वह कोमल शरीरवाला सेठ मर ही गया होता। अत: मैंने उसकी रक्षा ★ देवता, मनुष्य, राक्षस कोई भी भगवानुके नामका आश्रय लेकर भगवानुको प्राप्त कर सकता है। की। हनुमानजीने भूल स्वीकार करके क्षमा-याचना की। मृत्यु-लोकमें मरण निश्चित है। अन्तमें भगवान्का नाम सेठको राम नामका उपासक माना, आदर किया। तात्पर्य मुखपर आये इसलिये पहलेसे ही नामका अभ्यास करना यह है कि राम नामका जप पवित्र-अपवित्र सभी चाहिये। घरके कामोंको करते समय मनमें और स्पष्ट अवस्थाओंमें किया जा सकता है। दु:ख यही है कि हम उच्चारण करते-करते जब अभ्यास बढ़ जाता है, तब नामका आश्रय लेकर उसका जप नहीं करते। अन्तमें भगवान्का नाम आता है। उससे इस लोकमें परम ★ संसारके अनेक रोग हैं और उनकी अलग-अलग कल्याण होता है, परलोकमें भगवद्भामका वास मिलता औषधियाँ हैं, परंतु राम नाम तो सभी रोगोंकी रामबाण औषध है। शोक-मोह-लोभ आदि सभी रोगोंके लिये है। भगवानुका नाम सबको आनन्द प्रदान करे, सभी रोगरहित हों। सभी निर्भय हों। जय जय श्री राधे राधे। एक राम नाम ही महान् औषध है। प्रह्लादजीने होलिकाके ★ एक संत टट्टी-पेशाबके समय जिह्वाको दाँतोंसे जल जानेपर कहा कि देखो, जिसे न जलनेका वरदान था, दबाकर रखते थे। शिष्यने पूछा तो कहा कि अभ्यास ऐसा वह भी जल गयी, मेरे चारों ओर शीतलता है। मेरा एक बन गया है कि जिह्वा रोकनेसे नहीं रुकती है, नामका रोम भी नहीं जला। रामनामके जापक निर्भय रहते हैं। उच्चारण होता है। नाम-नामीमें अभेद होनेके कारण नाम 🖈 भगवानुके नाम, रूप, लीला और धाम—ये चारों सच्चिदानन्दमय हैं। एकको पकडनेसे चारों पकडमें लेनेपर नामी प्रकट हो जाता है। मलत्याग स्थानपर प्रभुका आना ठीक नहीं, अत: जिह्वाको दाँतसे दबाकर रखा है। आ जाते हैं। सुलभ एवं शक्तिमान् होनेसे नाम ही चारोंमें शिष्यने कहा यदि उस समय शरीर छूट गया तो क्या श्रेष्ठ है। नाममें लीला भरी है। राममें रामायण, कृष्ण होगा? गुरुदेवने जिह्वाको स्वतन्त्र कर दिया। शिष्यको नाममें भागवतपुराण स्थित है। नाम पुकारनेसे रूपका धन्यवाद दिया। आकर्षण होता है। नाममें धाम=तेज और धाम=लीला-★ एक सेठ अपने घरकी दुकानके कार्योंमें इतने भूमि ये व्याप्त हैं। वट-बीजमें जैसे विशाल वृक्ष व्याप्त है, उसी प्रकार नाममें सब कुछ है। नामका आश्रय लेनेसे व्यस्त रहते थे कि उन्हें नाम लेनेकी फुरसत नहीं मिलती थी। जब टट्टीमें जाते तो उस समय उन्हें अवकाश रूप, लीला और धामका आश्रय हो जाता है। मिलता और वे राम-राम रटते। श्रीहनुमान्जीको क्रोध [ 'परमार्थके पत्र-पुष्प'से साभार ]

संत-चरित-नथ [ सन्त पुरन्दरदासका एक जीवन-प्रसंग] ( श्रीशिवचरणजी चौहान ) सैकड़ों साल हुए, महाराष्ट्रके पुरन्दर कस्बेमें एक वहाँ गयी नहीं तो यह नथ उनके पास आयी कैसे? स्वर्णकार रहता था। नाम था—श्रीनिवास नाइक। सोने-सचमुच दरिद्र ब्राह्मणके वेषमें स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण चाँदीके आभूषणोंके निर्माणमें उसका कोई जोड़ नहीं था। आये होंगे परीक्षा लेने मेरी। तभी तो चमत्कार हुआ है। उसके गढे गहनोंकी एक धाक थी। इसी कारण विजयनगर इस घटनासे सेठ श्रीनिवासका मन बदल गया। दरबारमें उसकी पहुँच थी। रानियोंके गहने श्रीनिवास ही उन्होंने अपनी करोड़ोंकी सम्पत्ति गरीबोंमें बाँट दी और गढ़ता था। करोड़ोंकी सम्पत्ति थी उसके पास। पत्नीके साथ साधु बन गये। वह प्रभुका गुणगान करते हुए गाँव-गाँव डोलने लगे। पुरन्दर कस्बेके निवासी होनेके एक दिन एक गरीब ब्राह्मण सबेरे-सबेरे उसकी दुकानपर आ गया। उसने कहा—'सेठजी! मेरी बेटीकी कारण लोग उन्हें पुरन्दरदास कहने लगे। उन्होंने विट्ठलदास (विठोबा) यानी श्रीकृष्ण, राम एवं गणेशकी भक्तिमें पद शादी है। बडी उम्मीद लेकर आया हूँ। आपको तो ईश्वरने बहुत दिया है, कुछ दान दे दें तो मेरी बेटीके लिखे तथा उन्हें संगीतबद्ध किया। पदोंमें श्रीकृष्णका हाथ पीले हो जायँ।' गुणगान दास्य तथा कहीं-कहीं सखाभावमें मिलता है। सुनकर सेठ श्रीनिवासको गुस्सा आ गया। बोहनी वेदान्त-ज्ञान भी है। कहते हैं, उनके पदोंके गायनके समय न बट्टा सबेरे-सबेरे दानका ठट्टा। उसने ब्राह्मणको बहत स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण नृत्य करने लगते थे। भला-बुरा कहा और भगा दिया। ब्राह्मणको पता नहीं पुरन्दरदासके आश्रयदाता विजयनगरके तपस्वी क्या सूझा, वह सेठजीके घर चला गया। सेठानीको व्यासराम स्वामी थे। विजयनगर राज्यकी उन दिनों पूरे उसने अपनी करुण कहानी सुनायी और बेटीकी शादीके भारतमें ख्याति थी। विजयनगरके यशस्वी राजा कृष्णदेव लिये मदद माँगी। सेठानी पसीज गयीं। उन्होंने अपनी राय, जिनके दरबारमें विद्वानोंकी भीड रहती थी, स्वयं सोनेकी नथ (नथुनी) उतारकर ब्राह्मणको दे दी। ब्राह्मण चलकर पुरन्दरदासका संगीत सुनने आते थे। परम चतुर निकला। वह नथ लेकर सेठके पास बेचने पुरन्दरदासने संगीतकी दो विधाओं—कर्नाटक संगीत पहुँच गया। सेठजीने सोनेकी नथ देखी तो पहचान गये। तथा हिन्दुस्तानी संगीतमें एक कर्नाटक संगीतकी नींव ये तो मेरी पत्नीकी है। उन्होंने नथको तिजोरीमें रखा, डाली। वे कर्नाटक संगीतके आदिगुरु माने जाते हैं। मन्दिरोंमें हरिकथाकी संगीतमय शुरुआत भी पुरन्दरदासने ताला लगाया और चल दिये सेठानीकी खबर लेने। घर पहँचकर उन्होंने सेठानीको बहुत उलटा-सीधा कहा। की। यही नहीं उन्होंने सरिल जण्डै और गौतमके रूपमें एक-दो हाथ भी जमा दिये और कहा कि ऐसी ही दानी अनेक पाठ भी तैयार करवाये। उन्हें कर्नाटक सरगमका हो तो अपने बापकी कमाई दान करती। अपमानित भी आद्यगुरु माना जाता है। उनके संगीतमें विलम्बित, सेठानीने आत्महत्या करनेकी सोची। उसने एक प्यालेमें मध्य तथा द्रुत लयमें प्रबन्ध मिलते हैं। पुरन्दरदासकी जहर घोला। जहर पीनेके लिये जैसे ही उसने प्याला बनायी संगीत-भूमिपर चलकर त्यागराज, श्यामाशास्त्री, मुत्त्रस्वामी दिक्षितारने कर्नाटक संगीतको दुनियाभरमें लोकप्रिय उठाया। उसे जहरके जलमें अपनी नथ दिखायी दी। उसने प्यालेसे नथ निकाली और सेठको दे दी। नथ कर दिया। आधुनिक कालमें भारतरत्न श्रीमती एम०एस०

सुब्बुलक्ष्मीने अपनी मीठी वाणीसे पश्चिमी देशोंके संगीत-

प्रेमियोंको कर्नाटक संगीतसे आह्लादित किया।

देखकर सेठजी हक्के-बक्के रह गये। यह नथ तो वह

तिजोरीमें रखकर ताला लगा करके आये थे। सेठानी तो

अन्तकालमें क्या करें ? संख्या १० ] अन्तकालमें क्या करें ? ( श्रीरूपचन्दजी शर्मा ) मनुष्य जब किसी यात्रामें जाता है तो कितनी पश्चात्ताप करनेके अलावा उसके पास कुछ नहीं रहता। पूर्वजन्मके पुण्यसे यदि उसको सत्संगमें जानेका तैयारी पहलेसे करता है, पर अन्तकालकी तैयारी कोई बिरला ही करता है। अन्त समयका नाम और ध्यान आते मौका मिल भी जाय फिर भी वह भक्ति-मार्गपर ही प्राणी घबरा जाता है। चलनेका कार्यक्रम स्थगित करता रहता है। अभी उमर ब्रह्मलीन स्वामी श्रीरामसुखदासजी कहते हैं कि क्या है? फिर भज लेंगे। एक सन्तने कहा है— 'शरीर अनित्य है, पर उसको धारण करनेवाला नित्य है। आये थे जिस बातको भूल गये वह बात। शरीरके मरनेपर आत्माकी सत्ता नहीं मिटती, नहीं तो आगे ले कर क्या चले खाली दोनों हाथ॥ श्राद्ध-तर्पण आदि क्यों करते ? आत्माका घर यहाँ नहीं गीता (२।७)-में श्रीकृष्णजी कहते हैं-है, अपितु परमात्माका परम धाम है।' जातस्य हि धुवो मृत्युर्धुवो जन्म मृतस्य च। जो प्राणी जन्म ग्रहण करता है, उसे समय आनेपर मानव-जीवन दुर्लभ है। यह पूर्वजन्मके पुण्यकर्मी, संस्कारों तथा ईश्वरकी अहैतुकी कृपाके फलस्वरूप मरना ही पड़ता है और जो मरता है, उसे जन्म लेना प्राप्त हुआ है। गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं— पड़ता है। मृत्युके सम्बन्धमें भिन्न-भिन्न धारणाएँ हो सकती बड़ें भाग मानुष तनु पावा । सुर दुर्लभ सब ग्रंथिन्ह गावा॥ जीव जब माताके गर्भमें नारकीय जीवन व्यतीत करता हैं, परन्तु एक विषयमें सभी एक मत हैं कि मृत्युका अर्थ आत्माका अन्त नहीं है। जन्म और मृत्यु जीवनकी है, तब वह आर्त भावसे प्रार्थना करता है कि प्रभो! मुझे इस यातनासे मुक्ति दिलाओ, मैं नित्य तेरी सेवा करूँगा शाश्वत प्रक्रिया हैं, काल मृत्युसे आक्रान्त प्राणीकी रक्षा और आवागमनके चक्रसे बचनेके लिय भक्ति करूँगा। औषध, तपस्या, दान-पुण्य, माता-पिता, पुत्र-बान्धव दुर्भाग्यकी बात है कि वह संसारमें आकर अपनी पूर्व आदि कोई नहीं कर सकते। प्रतिज्ञाको भूल जाता है। मायाके प्रभावमें आकर संसारमें जबतक मृत्यु दूर है, तबतक हमारा इन्द्रियों, मन और बुद्धिपर अधिकार है और जबतक समय, साहस, आसक्त हो जाता है। जबतक बच्चा रहा, खेल और पढाईमें डूबा रहा; जब जवान हुआ तो सांसारिक धन्धोंमें फँसा सामर्थ्य तथा स्वास्थ्य अनुकूल है, तबतक आगे जानेके साधन तत्परतासे कर लेने चाहिये। रहा और जब बूढ़ा हुआ तो चिन्ताओंने घेर लिया। कबीरदासजी कहते हैं-याद रिखये, संसार असार है। शरीर रोगोंका घर है। मन मलिन है। चित्त चंचल है और मृत्यु प्रतिक्षण रात गँवाई सोय कर, दिवस गँवायो खाय। निकट आती जा रही है। उसे सदा याद रखते हुए उस हीरा जन्म अमोल यह, कौड़ी बदले जाय॥ मनुष्यको सदा भगवन्नाम-स्मरण, भगवल्लीलाओंका चिन्तन, आये हैं सो जायँगे, राजा रंक फकीर। तीर्थयात्रा, गोदान आदि सत्कर्म करने चाहिये; साथ ही एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बँधे जंजीर॥ मनमें संसारके प्रति वैराग्यका भाव रखते हुए उसमें आसक्ति चार पहर धन्धे गया, तीन पहर गया सोय। नहीं रखनी चाहिये। एक पहर नाम बिन, तेरी मुक्ति कैसे होय॥ संसारके राग-रंगमें वह यह भूल जाता है कि एक कविका कथन है— जीवनका वास्तविक लक्ष्य क्या है ? मैं कौन हूँ ? कहाँसे अबसे तू कर तैयारी, जाना जरूर है। आया हूँ ? कहाँ जाना है ? मुझे क्या करना चाहिये ? इन तू थक चुका है भारी मंजिल भी दूर है।। बातोंका स्मरण वृद्धावस्थामें जाकर होता है, तबतक सराये फानी है दुनिया, तू क्यों डेरा लगा बैठा। बहुत देर हो चुकी होती है। शरीर शिथिल हो जाता है। बेगानी हो चली है जो, उसे अपनी बना बैठा॥

श्रीरामचरितमानसमें शक्तितत्त्वनिरूपण

## ( श्रीराधानन्दसिंहजी, एम०ए०, पी-एच०डी०, एल०एल०बी० )

श्रीरामचरितमानस मूलतः श्रीसीतारामके अभिन्न

भावमूलक दर्शनका महाकाव्य है। इसमें *'गिरा अरथ* अतः भगवान्ने आदिशक्तिसहित उन्हें दर्शन दिये।

जल बीचि' की तरह शक्ति (सीता) और शक्तिमान्

स्पष्टत: सीताजी आदिशक्ति हैं, जिनके भ्रुकृटि-

(श्रीराम)-की सर्वात्मसत्ताका सम्यकु निरूपण हुआ है।

श्रीसीताजी उद्भव-स्थिति-संहारकारिणी हैं, क्लेश-हारिणी हैं और सर्वकल्याणमयी हैं। गोस्वामी तुलसीदासजी

मानसके बालकाण्डके मंगलाचरणमें कहते हैं-

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।

सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्॥

क्लेशहारिणी और सर्वश्रेयस्करी कहकर उनकी अलग

महत्ता स्थापित की गयी है। सच तो यह है कि परमात्मा

नित्यमुक्त चेतनस्वरूप हैं। वे निर्गुण, निराकार, निर्विकार, सनातन और एकरस हैं। उनकी मायिक शक्ति अव्यक्त

रूपमें उन्हींमें लीन रहती है। लीलाका प्रारम्भ उनके प्रकटरूप

धारण करनेपर होता है। मायाशक्ति आवरण और विक्षेपसे

लीला करती है। वह अपने प्रभावसे परमात्माको एकांशमें

आवृत कर लेती है। परमात्मा योगनिद्रामें चले जाते हैं और

तब ब्रह्मादि सृष्टिका विस्तार होता है। सृष्टिका विस्तार

ही मायाकी विक्षेपशक्ति है। गोस्वामीजी मानसमें कहते हैं—

बाम भाग सोभित अनुकूला। आदिसक्ति छिबनिधि जगमूला॥ जासु अंस उपजिहं गुनखानी। अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी॥

भृकुटि बिलास जासु जग होई। राम बाम दिसि सीता सोई॥

शक्तियाँ श्रीसीताजीकी ही कला-अंश-विभूति हैं। वे

मूलप्रकृति महामाया हैं। जैसे श्रीरामजीके अंशसे नाना

शम्भु, विरंचि और विष्णु पैदा होते हैं, (*संभु बिरंचि* 

*बिष्नु भगवाना। उपजिंहं जासु अंस तें नाना॥*) वैसे

ही श्रीसीताजीके अंशसे अगणित उमा, रमा, ब्रह्माणी पैदा

होती हैं। मनुशतरूपा निर्गुण, निराकार, अखण्ड, अनादि

ब्रह्मका दर्शन करना चाहते थे, परंतु आदिशक्तिके साथ

सीताजी विश्वातीता आद्या पराशक्ति हैं। सारी

(रा०च०मा० १।१४८।२-४)

्रितालक्षांड्रण Discord Server https://dsc.gg/dharma; MADE WITH LOVE BY Avinash Sha

उद्भव, स्थिति और संहार मूल प्रकृतिके कार्य हैं। यहाँ

प्रकट होती हैं। श्रीराम कहते हैं-

विलासमात्रसे जगतुकी उत्पत्ति, पालन और संहार शक्तियाँ

आदिशक्तिके बिना सगुण-साकार हो ही नहीं सकते।

आदिसक्ति जेहिं जग उपजाया। सोउ अवतरिहि मोरि यह माया।।

सबका आदि कारण हैं। वे ही दृश्य और अदृश्यरूपसे सम्पूर्ण विश्वको व्याप्त करके स्थित हैं। प्राधानिक

रहस्यमें यह रहस्य उद्घाटित किया गया है कि

महालक्ष्मी ही महाकाली (तमोगुणरूप उपाधिके द्वारा)

तथा महासरस्वती (सत्त्वगुणरूप उपाधिके द्वारा)-का रूप धारण करती हैं। दुर्गासप्तशतीमें भी तीन चरित्र

महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वतीका है, जिसमें

महालक्ष्मीरूपा दुर्गा ही लोक और शास्त्रमें विशिष्ट हैं।

यह रूप वर्णित है। जनकपुरकी जानकीजी महालक्ष्मीरूपा

हैं, जो परब्रह्म श्रीरामकी अर्धांगिनी हैं। बारातके आगमनपर

महालक्ष्मी जानकीकी महिमाका वर्णन करते हुए गोस्वामी

जानी सियँ बरात पुर आई। कछु निज महिमा प्रगटि जनाई॥

हृदयँ सुमिरि सब सिद्धि बोलाईं। भूप पहुनई करन पठाईं॥

सिधि सब सिय आयसु अकिन गईं जहाँ जनवास।

लिएँ संपदा सकल सुख सुरपुर भोग बिलास॥

निज निज बास बिलोकि बराती । सुरसुख सकल सुलभ सब भाँती।।

बिभव भेद कछु कोउ न जाना। सकल जनक कर करहिं बखाना।।

सिय महिमा रघुनायक जानी। हरषे हृदयँ हेतु पहिचानी॥

सारी स्वर्गीय सम्पदाके साथ समुपस्थित हो गर्यी । श्रीसीताजी

महालक्ष्मी हैं, इसका प्रमाण वहाँ मिलता है, जहाँ विवाहके समय इन्द्राणी, सरस्वती, लक्ष्मी और भवानी आदि श्रेष्ठ

(रा०च०मा० १।३०६।७-८, १।३०६,।१।३०७।१—३)

स्पष्ट है कि महालक्ष्मीके संकेतमात्रसे सभी सिद्धियाँ

तुलसीदासजी कहते हैं-

श्रीरामचरितमानसमें श्रीसीताजीका अनेक प्रसंगोंमें

यहाँ सीताजी त्रिगुणमयी परमेश्वरी महालक्ष्मी ही

िभाग ९२

| संख्या १० ] श्रीरामचरितमानसमे  | शिक्तितत्त्वनिरूपण ३१  |
|--|--|
| \$ |  |
| सची सारदा रमा भवानी। जे सुरतिय सुचि सहज सयानी॥                               | करते हुए 'गुणनिधि' होनेका आशीर्वाद दिया था। विद्या,                |
| कपट नारि बर बेष बनाई। मिलीं सकल रनिवासहिं जाई॥                               | बुद्धि और निर्मल मित आदि महासरस्वतीकी ही कृपासे                    |
| स्पष्ट है, यहाँ सीताजी मात्र लक्ष्मी नहीं हैं, क्योंकि                       | सुलभ होती है। <b>'अजर अमर गुननिधि सुत होहू। करहुँ</b>              |
| लक्ष्मीसे दूसरी लक्ष्मी मिलने कहाँसे आतीं? यहाँ अनेक                         | <b>बहुत रघुनायक छोहू ॥'</b> (सुन्दरकाण्ड १७।३)                     |
| लक्ष्मी, उमा और भवानीको जन्म देनेवाली महालक्ष्मी                             | हालाँकि श्रीसीताजी महाकालीका रूप धारणकर                            |
| जानकीसे मिलने ये देवियाँ आयी हैं। प्राधानिक रहस्यमें                         | लंका गयी थीं। महाकाली विध्वंसकारिणी हैं। विभीषणजीने                |
| भी देवियाँ श्रीमहालक्ष्मीसे ही उत्पन्न बतायी गयी हैं।                        | रावणसे कहा—  |
| गोस्वामी तुलसीदासजी अन्यत्र मानसमें कहते हैं—                                | तव उर कुमति बसी बिपरीता। हित अनहित मानहु रिपु प्रीता॥              |
| बसइ नगर जेहिं लच्छि करि कपट नारि बर बेषु।                                    | कालराति निसिचर कुल केरी। तेहि सीता पर प्रीति घनेरी॥                |
| तेहि पुर कै सोभा कहत सकुचहिं सारद सेषु॥                                      | (रा०च०मा० ५।४०।७-८)  |
| (रा०च०मा० १।२८९)   | जानकीजी कालरात्रि बनकर निशिचरकुलका विनाश                           |
| यहाँ लच्छिका अर्थ लक्ष्मी लेना असंगत है,                                     | करने आयी हैं। उसी सीतापर आपकी बहुत प्रीति है।                      |
| क्योंकि जानकीजी <b>'उमा रमा ब्रह्मादिबंदिता'</b> (७।२४।                      | वाल्मीकि-रामायणमें भी ऐसा ही कहा गया है—                           |
| ९) हैं। यहाँ अंशी-अंश-अभेदसे श्रीजानकीजीको लक्ष्मी                           | यां सीतेत्यभिजानासि येयं तिष्ठति ते गृहे।                          |
| कहा है। मानसमें सभी वक्ताओंके वचन हैं—' <i>कहिअ</i>                          | कालरात्रीति तां विद्धि सर्वलंकाविनाशिनीम्॥                         |
| <b>रमा सम किमि बैदेही'</b> (१।२४७) मानसमयंककार                               | (५।५१।३४)  |
| कहते हैं कि लक्ष्य और वाच्य कारणतत्त्व और कार्यतत्त्वको                      | प्राधानिक रहस्यमें महालक्ष्मीने तामसी देवीसे उनके                  |
| कहते हैं। श्रीजानकीजी लक्ष्यरूपा हैं और महालक्ष्मी                           | नामके बारेमें कहा कि—  |
| वाच्यस्वरूपा हैं। अर्थ यह हुआ कि जिस नगरमें                                  | ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते॥                              |
| लक्ष्यस्वरूप स्वयं जानकीजी ऐश्वर्यको गूढ़भावसे माधुर्यमें                    | महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा।                               |
| छिपाकर प्राकृत स्त्रीरूपसे निवास करती हैं।                                   | निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया॥                         |
| यही महालक्ष्मीरूपा जानकी अन्यत्र महासरस्वती                                  | इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभि:।                             |
| और महाकालीका रूप धारण करती हैं। बालकाण्डके                                   | महामाया, महाकाली, महामारी, क्षुधा, तृषा, निद्रा,                   |
| प्रारम्भमें ही गोस्वामी तुलसीदासजी महासरस्वतीरूपा                            | तृष्णा, एकवीरा, कालरात्रि तथा दुरत्यया—ये तुम्हारे                 |
| जानकीजीकी वन्दना करते हुए निर्मल मतिकी याचना                                 | नाम हैं, जो कर्मींके द्वारा लोकमें चरितार्थ होंगे। स्पष्टत:        |
| करते हैं—  | यहाँ कालरात्रि महाकालीका ही नाम है। इन्हींके कारण                  |
| जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की॥                            | पूरी लंका भस्मीभूत हो गयी और 'रहा न कोउ कुल                        |
| ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मित पावउँ॥                          | <i>रोवनिहारा</i> 'की स्थिति आ गयी।                                 |
| (रा०च०मा० १।१८।७-८)  | इस प्रकार चाहे दुर्गासप्तशतीमें शुम्भ, निशुम्भ, रक्त–              |
| यहाँ जानकीजीका स्वरूप महासरस्वतीका ही है,                                    | बीज, धूम्रलोचन, चण्ड-मुण्ड या महिषासुरके वधके प्रसंग               |
| क्योंकि सरस्वती मानसमें राम-वनवासका हेतु बनकर                                | हों या श्रीरामकथामें रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाद, अतिकाय,              |
| आयी हैं। भरद्वाजजी कहते हैं—' <i>गई गिरा मित धूति।</i> '                     | अकंपन, महोदर आदिके वधके प्रसंग हों—सर्वत्र कारण-                   |
| अतः ये महासरस्वतीरूपा ही हैं।  | रूपमें महाशक्तिकी ही संहार-लीला रही है। रामकथामें वे               |
| महासरस्वतीरूपा जानकीने ही हनुमान्जीपर कृपा                                   | महाशक्ति श्रीसीताजीके रूपमें हैं तो दुर्गासप्तशतीमें दुर्गारूपमें। |
| <del></del>  | <b>&gt;+</b>   |

कहानी-निवेदिता ( श्रीशंकरलालजी माहेश्वरी ) शहरकी छोटी पुलियाके दाहिनी ओर अन्तिम कहने लगा—डॉक्टर साहब, आपके जूतोंकी यह जोड़ी सलामत रहे। कभी-कभी मुझसे इसी तरह जाँच करवा छोरपर मेरा मकान है। घरमें दादा-दादीके अलावा मेरी माँ और मैं साथ-साथ रहते हैं। पिताजी तो मेरे जन्मसे लिया करें। यदि छोटी-मोटी बीमारी हुई तो हाथों-हाथ पहले ही भगवान्के घर चले गये। मेरा नाम निवेदिता उसी समय ठीक हो जायगी। यदि बीमारी बढ़ती गयी तो फिर मेरे बसकी बात नहीं रहेगी। सही समयपर है। मेरे घरके पड़ोसहीमें मनोरोग-विशेषज्ञ डॉ० गुप्ताका क्लीनिक है, जहाँ अक्सर बड़े-बूढ़े इलाजके लिये आते इलाज नहीं करवानेपर प्राण-पखेरू भी उड़ सकते हैं। हैं। डॉ॰ गुप्ता सेवा-निवृत्तिके बाद बुजुर्गोंके रोगोपचारमें अभी तो साधारण चीर-फाड्से ही काम चल जायगा। ही सेवा-सुखका अनुभव करते हैं। यदि घसीटते ही रहे तो बीमारी लाइलाज हो जायगी। इसी क्लीनिकसे सटे हुए खाली वर्गाकार अहातेमें मेजर ऑपरेशनमें खर्चा भी अधिक होगा और जीनेकी एक छायादार वट वृक्ष है। जहाँ एक लड़का प्रात: ठीक गारण्टी भी समाप्त हो जाती है। आठ बजे आता है और वृक्षके नीचे जूते गाँठनेकी दुकान कल ही रामू दादा अपने मृतप्राय हो गये जूते सजा देता है। गीत गुनगुनाते हुए अहातेकी साफ-सफाई रखकर गये। हालत इतनी खराब है कि ऑपरेशन भी करता है और ग्राहकोंके बैठनेके लिये एक रंगीन चटाई करता हूँ तो प्राणान्तकी सम्भावना है। मैंने तो दादासे बिछा देता है। जूतोंपर पॉलिश करानी हो या फटे जूतोंपर कह दिया ऑपरेशन करना मेरा काम है। हालत इतनी खराब है कि अन्तमें तो पोस्टमार्टम-रिपोर्ट देखनेको पैबन्द लगाना हो तो शहरके लोग प्राय: इसीके पास आते हैं, क्योंकि इससे अपने कामके साथ ही मधुर मिलेगी। डॉ॰ गुप्ताने रोहितके मुँहसे जब जूतोंके सम्बन्धमें गीतोंका आनन्द भी ले सकते हैं। साथ ही वह जीवनमें यह चिकित्सकीय विश्लेषण सुना तो वे आश्चर्य करने साफ-सफाईका महत्त्व भी बताते नहीं थकता और कतिपय रोगोंके घरेलू नुस्खे भी बताता रहता है। लगे। मनोविश्लेषणके आधारपर सोचने लगे 'कुछ तो दसवीं कक्षा तो इसने अनाथालयमें रहते हुए पास है इस लड़केमें जो डॉक्टरी गुण-धर्मसे मेल खाता है।' कर ली, पर आगेकी पढ़ाई उस समय थम गयी जब रोहितमें एक डॉक्टरकी सम्पूर्ण सम्भावनाएँ भरी पड़ी हैं।

िभाग ९२

था तभी इसके माता-पिताका सड़क-दुर्घटनामें देहान्त है। उस डॉक्टरको बाहर निकालनेकी आवश्यकता है हो गया था। पहले इसने अनाथालयकी शरण ली तो बस। यह एक उच्च कोटिका डॉक्टर बनकर चिकित्सा बादमें अपने मामाके घर रहकर अपना पुश्तैनी धन्धा जगत्में अपना कीर्तिमान् स्थापित कर सकता है। इसकी सीख लिया और यहाँ अपनी यह दूकान खोल ली। अन्तर्निहित शिक्त तथा प्रतिभाको उजागर करनेकी रोहित नाम है उसका। आवश्यकता है। इसे थोड़ा सहारा चाहिये। अवश्यकता है। इसे थोड़ा सहारा चाहिये। अवश्यकता है। इसे थोड़ा सहारा चाहिये। उनके क्लीनिककी भी साफ-सफाई कर देता, स्कूलहीमें प्रवेश दिला दिया और कुछ समयके लिये विदेश-

इसके भीतरका एक कुशल डॉक्टर बाहर आनेको बेताब

अनाथालयने उसकी छुट्टी कर दी। जब यह सात वर्षका

गुप्ता उसकी दिनचर्यासे प्रभावित थे। एक दिन डॉ॰ यात्रापर चले गये। मेहनत रंग लायी और रोहित जिलेमें गुप्ता भी अपने जूतोंकी मरम्मतके लिये इसकी दूकानपर सर्वाधिक अंक अर्जितकर जिला-स्तरपर सम्मानित हुआ। बैठ गये। बातें होने लगीं तो रोहित डॉक्टर साहबसे इस कीर्तिमान्में निवेदिताका पूरा सहयोग रहा।

| संख्या १०] निवे   | दिता ३३   |
|---|---|
| <b>***********************</b>                          | <b>\$</b> |
| उस दिन यदि निवेदिता अपने जेबखर्चसे बचाकर जमा            | लगभग एक माहतक इलाज चलता रहा। रोहितको  |
| किये पैसे गुल्लकसे निकालकर नहीं देती तो रोहित           | उसके बारेमें विशेषरूपसे पता नहीं था, इलाज उसके                                    |
| परीक्षा–शुल्क नहीं जमा करा पाता और परीक्षासे वंचित      | जूनियर डॉक्टर कर रहे थे। एक माहमें निवेदिता पूर्णत:                               |
| हो जाता। रोहितकी सफलताके लिये निवेदिता छायाकी           | स्वस्थ हो गयी, परंतु इस इलाजका कुल एक लाख बीस                                     |
| तरह सहयोगी बनकर रही। डॉ० गुप्ता जब विदेशसे              | हजार रुपयोंका बिल जब उसके हाथोंमें थमाया गया तो                                   |
| लौटे तो रोहितकी शानदार सफलताकी जानकारीसे बड़े           | उसके पैरोंके नीचेकी जमीन खिसक गयी। कहाँसे लाये                                    |
| प्रसन्न हुए और उन्होंने उसके लिये सेवा-संस्थाओंके       | इतना पैसा ? इस भारी-भरकम राशिमें कुछ छूट दिलानेके                                 |
| सहयोगसे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें डॉक्टरीकी         | लिये प्रार्थना-पत्रके साथ बिल बड़े डॉक्टर रोहितके पास                             |
| पढ़ाई करनेकी व्यवस्था बना दी। रोहित प्रतिभाशाली तो      | पहुँचाया गया। निवेदिताका नाम देखते ही रोहितको अपने                                |
| था ही, विश्वविद्यालयसे वह एक कुशल डॉक्टर बनकर           | विद्यालयके समयकी स्मृति हो आयी। उसे निवेदिताद्वारा                                |
| विशेष प्रशिक्षणके लिये विदेश चला गया। वहाँसे वह         | अपने प्रति किये गये उपकारका स्मरण हो आया। वह                                      |
| कैन्सर-रोगका विशेषज्ञ बनकर लौटा तो मुम्बईके एक          | सोचने लगा कहीं यह वही निवेदिता तो नहीं है ?                                       |
| बड़े अस्पतालमें नौकरी प्रारम्भ कर दी। रोहितने मुम्बईमें | डॉक्टर रोहित जब आश्वस्त हो गया कि वही   |
| रहकर अपना नाम कमाया। वह एक प्रसिद्ध कैन्सर-             | निवेदिता है, जिसने मेरा परीक्षा-शुल्क जमा कराकर मेरी                              |
| रोग-विशेषज्ञके रूपमें विख्यात हो गया। उसकी ख्याति       | सहायता की थी तो वह स्तम्भित हो गया। उसने तत्काल                                   |
| चारों ओर फैल गयी। थोड़े ही समयमें अपार धन-              | बिलपर अंकित राशिके नीचे लिखा परीक्षा-शुल्ककी                                      |
| सम्पदा अर्जितकर उसने कोलकातामें कैन्सर हॉस्पिटल         | राशिको घटानेके बाद शेष राशि शून्य। रोहित, वही,                                    |
| खोल दिया।   | तुम्हारा सहपाठी।  |
| × × × ×   | बिलको देखकर निवेदिता रोहितसे मिलनेको आतुर   |
| उस समय भी वह निवेदिताका स्मरणकर कृतज्ञभावसे             | हो गयी। हॉस्पिटल समयकी समाप्तिके बाद निवेदिता                                     |
| रोमांचित हो जाता था कि यदि समयपर निवेदिताने             | रोहितसे मिली और उसने अपनी सम्पूर्ण रामकहानी                                       |
| सहयोग नहीं दिया होता तो वह वहीं ठहर जाता, आगे           | रोहितको बतायी तो रोहित द्रवित हो गया और उसने भरे                                  |
| बढ़कर मंजिलतक पहुँचनेमें निवेदिताकी विशेष सहायता        | गलेसे कहा कि ईश्वरने मुझे भी आज एक अच्छा कार्य                                    |
| रही। निवेदिताको भुला पाना इतना सहज नहीं था।             | करनेका अवसर प्रदान किया है, आप कृपा करके मुझे                                     |
| रोहितने अपने हॉस्पिटलका नाम 'निवेदिता कैन्सर            | उऋण हो जाने दीजिये। आप एम०बी०ए० हैं, मेरे   |
| हॉस्पिटल' रख दिया। इधर निवेदिताने भी एम०बी०ए०           | हास्पिटलको एक प्रबन्ध निदेशककी जरूरत है, कृपया                                    |
| की पढ़ाई पूरी कर ली और उसकी शादी कोलकाताके              | स्वीकारकर मुझे आभार व्यक्त करनेका अवसर दें। मैं                                   |
| एक कुलीन परिवारमें हो गयी, किंतु कुछ ही समयके बाद       | इस विषयमें पूरी तरह आश्वस्त हूँ कि मुझे आपसे                                      |
| व्यापारमें घाटा लगा तो निवेदिताका परिवार सड़कपर आ       | अच्छा अभ्यर्थी इस पदके लिये नहीं मिल सकता।  |
| गया। घरका सब कुछ चला गया। गृहस्थीकी गाड़ी धीमी          | निवेदिताने भरे गलेसे धन्यवाद देते हुए कहा—मैंने कोई                               |
| रफ्तारसे चलने लगी। थोड़े समय बाद अचानक ही मालूम         | इतना बड़ा उपकार नहीं किया था, आपने तो मेरी  |
| हुआ कि निवेदिता भी कैन्सर रोगसे पीड़ित है। कई           | जिन्दगी बचायी है। रोहितने कहा—जिन्दगी बचानेसे भी                                  |
| डॉक्टरोंसे इलाज भी कराया गया, किंतु ज्यों-ज्यों दवा की  | बड़ी बात है जिन्दगी सँवारना और आपने मेरी जिन्दगी                                  |
| गयी रोग बढ़ता ही गया। अन्तमें लोगोंके कहनेसे उसे        | सँवारी है। निवेदिताने प्रसन्न मनसे रोहितका प्रस्ताव                               |
| निवेदिता कैन्सर हॉस्पिटलमें भर्ती कराया गया।            | स्वीकार कर लिया।  |
| <b>─</b>  | <b>&gt;+</b>  |

संत-संस्मरण ( परमपूज्य देवाचार्य श्रीराजेन्द्रदासजी महाराजके गीताभवन, ऋषिकेशमें हुए प्रवचनसे साभार )

एक सज्जन सन्त-दर्शनहेत् वृन्दावन पधारे। एक होता। अतः इस संकटका मूलोच्छेद कर दिया। हमने

सन्तके पास आकर उन्होंने जिज्ञासा की-महाराज, कुछ बताइये, जिससे हमारा कल्याण हो। प्राय: सन्त-महात्माओंके पास जाकर लोग इस प्रकारकी जिज्ञासा करते रहते हैं,

यद्यपि उस विषयमें उनकी कोई गम्भीरता नहीं होती। महात्माजीका उत्तर था—'जो जानते हो, उतना कर लो। तुम्हारे कल्याणके लिये उतना पर्याप्त है।'

कुसुमादपि।' वस्तृत: आत्मकल्याणके मार्गपर जानकारीका हमारे देशमें उतना अभाव नहीं है, जितना संकल्पपूर्वक जाने केवल चैतन्य जीवोंमें ही नहीं, जड़ पदार्थोंमें भी। प्रात:-

हुएको कार्यरूपमें परिणत करनेका है। वृन्दावनकी कुटियामें एक अत्यन्त निरपेक्ष वृद्ध महात्मा निवास करते थे। उन्होंने कुछ पद्य-रचना की,

जिसे भक्तमालीजी महाराजने पुस्तकरूपसे प्रकाशित करा दिया। पद्य मनोहारी थे, जिनसे आकर्षित होकर एक कुलीन संभ्रान्त महिला किसी महानगरसे एक दिन

कुटीमें पधारीं। उन्होंने जिज्ञासावश उन पद्योंके कविसे मिलनेकी इच्छा प्रकट की। हमलोगोंने उन्हें महात्माजीके सम्मुख प्रस्तुत कर दिया। महिलाने फल-मिष्टान्न आदि आस्थापूर्वक समर्पित करते हुए प्रणाम किया। महात्माजीने

उस महिलासे पूछा कहाँसे आयी हो? उसने नगरका नाम बताकर यह भी कहा कि उसके परिवारमें कौन-कौन सदस्य हैं और स्वयं उसने विवाह नहीं किया। महात्माजी तत्काल बोल पडे-मेरी अब विवाह करनेकी

रह गयी और विचलित हुई। महात्माजीने कहा कि यह सब सामग्री वापस ले जाओ। वह अत्यन्त कृपित होकर सब सामान लेकर चली गयी।

हम विद्यार्थियोंने महाराजजीसे इस अप्रत्याशित व्यवहारका कारण पूछा और कठोरतापूर्वक फल आदि लौटानेकी शिकायत की। उन्होंने बताया कि ऐसा नहीं

उम्र नहीं है। इस अप्रत्याशित उत्तरसे वह महिला अवाक्

करनेपर उसका और कालक्रमसे अन्य महिलाओंका

कुट्टियामें आवागमन बद्ध जाता, जो भजनमें विघ्नकारी, नहीं करनी चाहिये। यह अद्योषदृष्टि दुर्लभ है। ऐसे Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE By Avinash/Sha

होकर चौकेमें लग जायँ और आठ बजेतक चालीस-पचास लोगोंको रसोई पवा दें। गिरिराजजीका एक खण्ड-विग्रह कुटीमें बाहर रखा था, उसीको भोग

स्वयंके लिये है?

उत्सुकतावश आगे पूछा कि महाराज! अगर वह स्त्री पुन: आ गयी तो आप क्या करेंगे? वे बोले, उसे

मारूँगा। हमने कहा कि वह फिर भी आ गयी तो? वे

बोले, तब उसे कन्हैयासे मिलनेका मार्ग बता दुँगा। यह सन्त-स्वभाव होता है—'वज्रादिप कठोराणि मृद्नि

भक्तमालीजी महाराज सबमें भगवद्दर्शन करते थे,

से सायंकालतक कोई कभी पढने आ जाय, उसे मना नहीं करते थे, कहते—तुम्हें जब फुरसत हो आ जाना।

भोजनके बाद जो बर्तन चौकेमें तथा इधर-उधर बिखरे

दीखें, उन सबको माँज-धोकर सजा दें। हमने पूछा,

महाराज! आप ऐसा क्यों करते हैं ? हम लोग बादमें कर

ही देंगे। वे बोले, ये सब भगवत्पात्र हैं, जड़ पदार्थ

समझकर इनके साथ उपेक्षापूर्ण व्यवहार उचित नहीं।

'**वासुदेव: सर्वं**' केवल दूसरोंको बतानेके लिये है या

महाराजजी प्रात:कालसे ही शरीर-क्रियासे निवृत्त

लगाकर पंगत बैठा दें। कहते थे, ये ठाकुर बिना पर्दाके भी भोग आरोगते हैं। एक दिन एक साधु महाराज भोग

लगनेके पहले ही दाल-रोटी उठाकर चल दिये। हमें बुरा लगा और उन्हें टोका। उन्होंने गुस्सेसे सब दाल-रोटी नालीमें फेंक दी और चले गये। कुछ समय बाद

महाराजजीने बुलाया और सारी बात पूछी। सब कुछ

सुनकर बोले—दोष तुम्हारा है पण्डितजी! सब भगवत्स्वरूप हैं, पता नहीं किस रूपमें आ जायँ। ऐसी टोका-टाकी

व्यक्तिका कल्याण और सुन्दर समाजका निर्माण संख्या १० ] व्यक्तिका कल्याण और सुन्दर समाजका निर्माण ( ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज ) 'समाज क्या है? अनेक प्रकारकी भिन्नतामें देना, मानवका निज कर्तव्य है। जैसे सुन्दर पृष्पोंसे एकता स्थापित करनेका जो परिणाम है, वही समाज है। वाटिकाकी शोभा होती है, वैसे ही कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियोंद्वारा मानव सामाजिक प्राणी है। व्यक्तिगत आवश्यकताओंकी सुन्दर समाजका निर्माण होता है। पूर्तिके लिये समाजकी माँग होती है, कारण कि कोई इस दार्शनिक सत्यके साथ यह भी ध्यान देनेकी भी व्यक्ति अपनी सारी आवश्यकताएँ अपने द्वारा पूरी बात है कि मानव होनेके नाते हर व्यक्तिका स्वरूप ही नहीं कर सकता। इसके साथ-साथ यदि वह स्वयं है, सेवा, त्याग और प्रेम। सेवाके द्वारा ही व्यक्ति दूसरोंके दूसरोंकी आवश्यकतापूर्तिमें सहयोग नहीं देता, तब भी लिये उपयोगी होता है। अत:-समाजका निर्माण नहीं होता। समाजका निर्माण एक-'व्यक्तिके कल्याण और सुन्दर समाजके निर्माणके दूसरेकी आवश्यकतापूर्तिमें सहयोग देनेके लिये है। इस लिये इस सत्यको स्वीकार करना अनिवार्य बताया गया दृष्टिसे समाज मानव-जीवनका एक अनिवार्य अंग है है कि प्राप्त योग्यता, सामर्थ्य और वस्तु अपनी नहीं है, और सुन्दर समाजके निर्माणका प्रश्न मानव-जीवनकी अपने लिये नहीं है। ऐसा जानकर समाजका प्रत्येक व्यक्ति जब प्राप्त बलको निर्बलोंकी धरोहर मानने लगता एक महत्त्वपूर्ण समस्या है।' सुन्दर समाज कहते किसे हैं? इसका उत्तर है और निर्मम, निष्काम होकर निर्बलोंकी सेवामें लग निम्नलिखित व्याख्यानसे मिलता है-जाता है, तब समाजमें सबल एवं निर्बलकी एकता 'सामाजिक विषमता और संघर्षको मिटाकर सुन्दर स्थापित होती है। उसीपर सामाजिक एकता (social समाजके निर्माणका अर्थ यह लिया गया है कि जिस integrity) टिक सकती है।' समाजमें प्रत्येक व्यक्ति कर्तव्यनिष्ठ हो जाता है, वह यह प्रश्न स्वाभाविक है कि ऊपर वर्णित भाव समाज सुन्दर हो जाता है, अर्थात् उस समाजमें सबके मनुष्यमें आये कैसे? इसका समाधान नीचे प्रस्तुत है— 'अधिकारोंकी माँगके लिये संगठित शक्तिका उपयोग अधिकार सुरक्षित हो जाते हैं। जिस समाजमें किसीके अधिकारोंका अपहरण नहीं होता प्रत्युत सबके अधिकार हिंसात्मक प्रवृत्तियोंमें करना मानवता नहीं है। कर्तव्य-सुरक्षित रहते हैं, वही सुन्दर समाज है।' निष्ठा मानवता है, जिसमें अधिकार देना सहज स्वाभाविक जब सुन्दर समाजका मूल है प्रत्येक व्यक्तिका है। ऐसी कर्तव्यनिष्ठा ऊपरी दबाव, शासन अथवा कर्तव्यनिष्ठ होना, तो यह भाव व्यक्तियोंमें कैसे जाग्रत् कानूनसे नहीं आ सकती। इसके लिये सामाजिक व्यक्तियोंको सत्संग करना चाहिये, जिसके प्रकाशमें हो—इसका उपाय इस प्रकार बताया गया है— ऐसी कर्तव्य-निष्ठाके लिये अन्तः प्रेरणाके रूपमें व्यक्ति स्वेच्छासे कर्तव्यनिष्ठ अर्थात् धर्मपरायण हो भौतिक दर्शनके सत्यको लिया गया। जगत्के नाते कोई सकता है। कर्तव्यनिष्ठा अधिकारोंकी जननी है। कर्तव्यनिष्ठ गैर नहीं है। एक धरतीपर सबका आवास है, एक व्यक्तियोंके अधिकार स्वतः सुरक्षित हो जाते हैं और जिसमें सबके अधिकार सुरक्षित हो जायँ, वही सुन्दर आकाशके नीचे सबका अवकाश तथा एक सूर्यके द्वारा सबको प्रकाश मिलता है, वायुके द्वारा सबको श्वास समाज है।' समाजके ही बलपर देश सुन्दर, समृद्धिशाली मिलती है और जलसे सबकी प्यास बुझती है। अत: और शक्तिशाली बनता है। सबके साथ सद्भाव रखना और निकटवर्तीको सहयोग ['साधन-सूत्र', प्रस्तुति—श्रीहरीमोहनजी]

गोभक्ति-कथा— गोषु दत्तं न नश्यति (पं० श्रीरामस्वरूपदासजी पाण्डेय) देवकीनन्दन और रामनाथ दोनों बालसखा थे। पास अब इतना पैसा नहीं, जो खरीदकर अच्छी गाय बचपनमें विद्यार्थी-जीवनसे आजतक मित्रताका सहज दान कर सकूँ। मेरे पास जो गाय है, वह तो बूढ़ी है। निर्वाह होता रहा। रामनाथकी पुत्रियोंका जन्म हुआ, शायद अन्तिम बार ब्यायी है। उसके बछड़ा है। उसे

दानमें कौन लेगा? शास्त्रमें भी बूढ़ी गाय दान करनेका

उनका वे विवाह कर चुके थे। सर्वप्रथम एक पुत्रका जन्म हुआ था, पर वह अधिक नहीं जिया। वृद्धावस्थामें निषेध है। यह सोचकर हमारे हृदयमें संकोच है।

रामनाथकी सेवा करनेके लिये उनकी कोई-न-कोई लड़की यहाँ बनी रहती थी। पर विवाहके बाद बेटियोंपर उनके घरका भार आ जाता है, इसलिये वे अधिक समयतक नहीं रह सकतीं। रामनाथको गोपालनका

व्यसन था। वे जीवनभर बड़े प्रेमसे गोसेवा करते रहे। अब वृद्धावस्था आ गयी, अत: उन्होंने अपनी अधिकांश गायें अपनी पुत्रियोंको दे दीं। बस, एक गाय रखी, जिसकी सेवा कर सकें। यह उनकी प्रिय गाय थी। खुब

दूध देती। बहुत सीधी-साधी थी। अब वह भी वृद्ध हो गयी थी। शायद अन्तिम बार बछड़ा हुआ है। अब उन्हें सबसे अधिक चिन्ता इस गायकी सेवाकी थी। रामनाथको मलेरिया बुखार हो गया। दवाके

नामपर बार-बार कुनैन खानेसे अधिक गर्मी बढ गयी। अधिक गर्मीसे अनिद्रा हो गयी। गर्मीसे पीलिया हुआ और अब डॉक्टरने टाईफाइड बताया है। दो-तीन

महीनेकी बीमारीसे उन्होंने खटिया पकड ली। देवकीनन्दनजी अपने मित्रसे मिलने प्राय: प्रतिदिन जाते। आज रामनाथजीने अपने मित्रसे कहा—'भैया, अब मैं बचूँगा नहीं। अब

मेरी दवा खानेकी इच्छा नहीं होती। अब तो बस एक ही दवा खानी है।' 'औषधं जाह्नवीतोयं, वैद्यो नारायणो हरि: ' 'बस, एक ही इच्छा है, आप हमें गीताजी सुना दिया करें। देवकीनन्दनजीने सान्त्वना देते

हुए अपने मित्रके विचारका समर्थन किया। वे रोज आकर उन्हें गीता सुनाने लगे। कुछ दिनोंमें गीताका पाठ पूरा हो गया। रामनाथने कहा—'भैया, एक अभिलाषा और है। देवकीनन्दनने कहा—आप उसे नि:संकोच

रामनाथने कहा—मैं गोदान करना चाहता हुँ, पर मेरे

देवकीनन्दन अपने मित्रके हृदयके भावको समझ गये। उन्होंने कहा—िमत्र, आप संकोच न करें, मैं गोदान ले लुँगा। रामनाथने भावमें भरकर अपने मित्रको गोदान कर दिया। वे गोदान लेकर घरको चले तो बूढ़ी गायको

ले जाते देखकर गाँवके लोग आपसमें हँसी करने लगे—

िभाग ९२

वाह, गजबके दाता, गजबके गृहीता, क्या कहना! घर आनेपर पत्नी और बच्चोंने भी विरोध प्रकट किया। लोग कहने लगे—देवकीनन्दनजी सठिया गये। देवकीनन्दनजी गायकी सेवा स्वयं तत्परतासे करते। वे समझ रहे थे कि यह मात्र गोदान नहीं है। यह एक

बेटी, मेरी सेवा करनेको आयी है, पर अपने घर चली जायगी। अत: मैंने मित्रका कर्तव्य-पालन किया। देवपुरमें सप्ताहमें मंगलवारको हाट-बाजार लगती है। उस दिन गाँवके कांजी हाउसमें पकड़े गये पशुओंकी जिनके मालिक छुड़ाने नहीं आते, उनकी नीलामी होती है। आज हाटमें एक बछड़ा नीलाम हो रहा है। वह बहुत

समयसे कांजी हाउसमें बन्द रहनेसे अधिक कमजोर हो

गया था। ठीकसे चल भी नहीं पा रहा था। उसकी कोई

समस्याका समाधान है। मेरे मित्र रामनाथको चिन्ता थी कि मैं असमर्थ हूँ। अब मेरी गायकी सेवा कौन करेगा?

बोली नहीं लगा रहा था। देवकीनन्दनको उस बछडेपर दया आ गयी। उन्होंने बोली लगाकर उसे ले लिया। वे बछडा लेकर धीरे-धीरे अपने घर आ रहे हैं। गाँवके लोग उसे देखकर आज पुन: उनकी हँसी कर रहे थे। लगता है,

बुढ़ापेमें देवकीनन्दनजीकी बुद्धि मारी गयी है। उनके घरके लोगोंको भी उनका यह काम अच्छा नहीं लगा। पर होकर प्रकट करें। मैं पूरी करनेकी कोशिश करूँगा।

वे मौन रह गये। बस इतना कहा—इसकी सेवा कौन करेगा? देवकीनन्दनजी स्वयं बछडेकी सेवा करने लगे।

| संख्या १०] गोषु दत्तं                                 | गोषु दत्तं न नश्यति ३७                                   |  |  |
|---|--|--|--|
| <u></u>   |  |  |  |
| कुछ दिनोंमें वह बछड़ा चंगा हो गया। अच्छी सेवा         | कुएँपर रख दिया। देवकीनन्दनके द्वारा पाले गये बछड़े       |  |  |
| करनेसे बूढ़ी गाय तथा उसका बछड़ा भी चंगा हो गया        | बड़े हो गये थे। देवकीनन्दनका अधिक पैसा खर्च नहीं         |  |  |
| था। उनके गोष्ठमें दोनों बछड़े उछलते-कूदते, चौकड़ी     | हुआ। उसमेंसे जो पैसा बचा उससे उन्होंने एक बैलगाड़ी       |  |  |
| भरते। उन्हें देखकर देवकीनन्दन प्रसन्न हो जाते।        | तैयार करवा ली। उनके दोनों बछड़े रहट और बैलगाड़ीमें       |  |  |
| देवकीनन्दनका एक पुत्र था रमेश। उसने गाँवमें ही        | काम करते। गड्ढोंमें खूब पानी भर दिया गया। फिर उन         |  |  |
| जैसे-तैसे आठवीं कक्षा उत्तीर्ण की थी। उससे आगे वह     | गड्ढोंमें पपीतोंके पौधे लगवाये। कुछ दिनोंमें ही पपीतोंके |  |  |
| पढ़ा नहीं, पण्डिताई सीखी नहीं। वह गाँवके कुछ          | पेड़ तैयार हो गये। थोड़े महीनोंमें उनमें फल लग गये।      |  |  |
| लड़कोंके साथ मजदूरी करने दिल्ली जा रहा था। किसीके     | पपीतेके पेड़ ज्यादा ऊँचे नहीं थे। पर उनमें इतने अधिक     |  |  |
| द्वारा देवकीनन्दनको पता चला। वे चिन्तित हो गये। उसे   | और बड़े-बड़े फल लगे कि पेड़ फलोंसे लद गया। एक-           |  |  |
| कैसे रोकें। उन्होंने उसे बुलाकर समझाया—बेटा, मजदूरीके | एक पेड़में सैकड़ों फल! फल पकने लगे। अब तो पके            |  |  |
| हेतु दिल्ली जाकर क्या करोगे ? जो कुछ कमाओगे खर्च      | हुए पपीतोंको बड़ी-बड़ी टोकरियोंमें घास बिछाकर रखा।       |  |  |
| हो जायगा। वहाँ बिना ठौर-ठिकानेके मारे-मारे फिरोगे।    | उन्हें गाड़ीमें रखकर बाजार भेजा। पासके कस्बेमें          |  |  |
| रमेशने कहा—पिताजी, मैं यहाँ घरपर क्या करूँ?           | फलोंकी मंडी थी। सुन्दर पके पपीतोंको खरीदनेकी             |  |  |
| देवकीनन्दनजीने कहा—मैं तुम्हारे रोजगारकी व्यवस्था     | लोगोंमें होड़-सी लग गयी। थोड़ी ही देरमें सब पपीते        |  |  |
| कर दूँगा। तुम चिन्ता मत करो। देवकीनन्दनजीके पास       | बिक गये। उनके मनमाने रुपये मिले। पहले ही दिनकी           |  |  |
| ज्यादा जमीन नहीं थी, जो थी वह भी पथरीली थी। कुआँ      | कमाई देखकर रमेश चिकत रह गया। लौटते समय एक                |  |  |
| था, पर पानी निकालनेको रहट तथा बैल नहीं थे। भाग्यसे    | बनियेकी दूकानका सामान भरकर लाया। उससे गाड़ीका            |  |  |
| एक बार गाँवमें कृषि अधिकारी आया। उसकी गाँवमें         | किराया मिल गया। कुछ दिनोंमें ही बाजारके थोक फल-          |  |  |
| मीटिंग थी। वह गाँवमें पपीतेकी खेतीका प्रदर्शन देना    | विक्रेता यह सोचकर कि यह सस्ते भावमें पपीते बेचकर         |  |  |
| चाहता था। सब्सिडीके रूपमें वह लोहेका रहट दे रहा       | हमारा बाजार-भाव खराब कर देता है, इसलिये वे खेतपर         |  |  |
| था। वह वैज्ञानिक तरीकेसे पपीतेकी खेती करनेवालेकी      | ही खरीद करनेको आने लगे।                                  |  |  |
| तलाशमें था। वह सरकारकी तरफसे बीज आदि भी दे            | रमेशको एक दिनमें हजार रुपयेतक मिल जाते।                  |  |  |
| रहा था। पर उसके बताये अनुसार पपीताकी खेती             | उसका मन प्रसन्न हो गया। उसने पिताजीके चरणोंमें           |  |  |
| करानेकी शर्त थी। इतना होनेपर भी उसे पपीतेकी खेती      | प्रणामकर रुपये दिये। देवकीनन्दनने आशीर्वाद देकर          |  |  |
| करनेवाला कोई नहीं मिला। देवकीनन्दनने पपीतेकी खेती     | कहा—बेटा, उस दिन तुम सब हमारी हँसी कर रहे थे।            |  |  |
| करना स्वीकार कर लिया। उन्हें देखकर कृषि अधिकारीने     | तुम दिल्ली जाकर क्या करते ? यह बैलोंकी जोड़ी आज          |  |  |
| कहा—पर आप तो वृद्ध हैं। आप क्या कर सकेंगे?            | वरदान सिद्ध हुई। थोड़ी-सी पूँजीमें ही घर बैठे उद्योग     |  |  |
| देवकीनन्दनजीने उत्तर दिया—मेरा जवान लड़का है, वह      | मिल गया। कुछ दिनोंमें ही रमेशने मोटरसाइकिल खरीद          |  |  |
| करेगा। उन्होंने रमेशको बुलवाया। कृषि अधिकारीने        | ली। अब वह कामका निरीक्षण करता है। दो नौकर काम            |  |  |
| रमेशके नाम पपीतेकी खेतीकी स्वीकृति दे दी।             | करते हैं। उसका अच्छे परिवारमें विवाह हो गया। अब          |  |  |
| उसे पपीतेकी खेतीका तरीका समझाया। उसने                 | धनका अभाव नहीं रहा। उसने आधी जमीनमें साग-                |  |  |
| उनकी जमीनमें चार-पाँच फुटके अन्तरसे चार गुणा चार      | सब्जी और गेहूँ बो दिया। जमीनके एक भागमें                 |  |  |
| फुट तथा पाँच फुट गहरे गड्ढे खुदवाये। उसमें उपजाऊ      | देवकीनन्दनजीने गोशाला स्थापित की है। उससे गाँवमें        |  |  |
| मिट्टीमें देशी पका खाद मिलवाया। खाद तो देवकीनन्दनजीकी | भटकनेवाली गायोंको आश्रय मिल गया। वे गोशालामें ही         |  |  |
| घरकी गायोंका ही था। फिर सब्सिडीसे लोहेका रहट          | रहकर गोसेवा और भजन करते हैं और बहुत सुखी हैं।            |  |  |
| <del></del>   | <b>&gt;+</b>   |  |  |

साधनोपयोगी पत्र निकलकर वृन्दावनमें रहकर भजन करना चाहते हैं। (8)

भजनकी इच्छाका होना तो बहुत ही उत्तम है; किंतु आजकलके समयमें घर छोडकर जानेकी सलाह तो मैं प्रिय महोदय, सप्रेम हरिस्मरण। पत्र मिला। कुछ

कारणोंसे उत्तर देनेमें विलम्ब हुआ है, कृपया क्षमा कभी नहीं दे सकता। घरमें जो घरका और दूकानका काम आपको करना पड़ता है, वह किसका काम है?

करेंगे। आपके प्रश्नोंका उत्तर इस प्रकार है— १-भगवत्प्राप्तिका सबसे अच्छा उपाय है—भगवानुके

परमार्थके साधन

प्रति प्रगाढ़ प्रेम, भगवान्से मिलनेकी प्रबल तीव्र उत्कण्ठा और भगवान्के विरहमें एक क्षण भी जीवनधारण असह्य

हो जाना। वास्तवमें यह कोई साधन नहीं है, यह तो भगवद्विरहीका लक्षण है। करोडों वर्षोंकी तपस्याके

मूल्यपर भी सच्चिदानन्दमय भगवान्के श्रीविग्रहकी क्षणिक झाँकीतक नहीं मिल सकती। कोई भी पुण्य, जप, तप,

दान अथवा यज्ञ ऐसा नहीं है, जो भगवान्को दर्शन देनेके लिये विवश कर सके। भगवान्का दर्शन तो भगवान्की कृपासे ही होता है—'सोइ जानइ जेहि देह

जनाई।' उनका दर्शन वही कर सकता है, जिसके सामने वे अपनी योगमायाका परदा हटाकर प्रकट हो जायँ। उनको कहींसे आना-जाना नहीं पडता। वे तो

सदा और सर्वत्र विराजमान हैं; किंतु हैं योगमायासमावृत।

जिसपर उनकी विशेष कृपा होती है, उसीको उनके दर्शनका सौभाग्य प्राप्त होता है। जिसे प्रभु देखते हैं कि यह मेरे दर्शनके बिना एक क्षण भी रह नहीं सकता, उसे

अधिकारी मानकर तत्काल उसके सामने प्रकट हो जाते हैं। अत: उनका दर्शन कितने दिनोंमें होगा? — यह प्रश्न ही नहीं बन सकता। उनका दर्शन एक क्षणमें भी हो

सकता है और कोटि-कोटि जन्मोंमें भी नहीं हो सकता।

दर्शन तो उनकी दयासे ही होता है। हाँ, अपनेको प्रभुकी कृपाका पात्र बनानेके लिये योग्य साधन करते रहना

मनुष्यका परम कर्तव्य है। उनमें निरन्तर प्रेम बढ़े,

मिलनेकी तीव्रतम इच्छा जाग्रत् हो और एक क्षणका भी

विरह असह्य हो जाय-ऐसी अवस्था अपने जीवनमें

२-३-अभी आपकी अवस्था नयी है, घरपर

लानेकी चेष्टा करनी चाहिये।

छोड़कर पड़े रहनेसे भगवान् जल्दी दर्शन देते हैं। सो मेरी समझसे ऐसा करना कदापि युक्तियुक्त नहीं है। इसमें कई तरहके दोष आ सकते हैं। सबसे अच्छा उपाय तो है—प्रभुकृपाकी बाट जोहते हुए उनके लिये उत्कण्ठित

रहना, अपनेको सर्वथा एकमात्र भगवान्की कृपापर छोड़ देना। फिर, भगवान् स्वयं ही अवसर देखकर हृदयसे

लगा लेंगे। खान-पान छोड़नेमें महत्त्व नहीं है, महत्त्व तो भगवान्की अनिवार्य आवश्यकतामें और उनकी कृपापर अडिग विश्वास करनेमें है।

क्या उसे आप भगवान्का काम नहीं समझते? क्या वह

संसारका काम है ? ऐसी भूल न कीजिये। घरके, आपके

तथा सम्पूर्ण जगत्के सच्चे स्वामी भगवान् हैं। सब काम

उन्हींका है। अत: उन्हींको स्वामी और अपनेको सेवक

मानकर झुठ, कपट, चोरी आदि बुरी वृत्तियोंसे बचते हुए यदि घर और दुकानका काम सँभाला जाय तो यह भी

भगवान्का भजन ही है। यही सर्वकर्मसे भगवान्की पूजा

समझनी चाहिये। घरसे बाहर जानेपर भी आदमी प्रमादमें

पड़कर साधनसे गिर जाता है। अभी आपको बाहरकी

कठिनाइयोंका अनुभव नहीं है, अतः घरपर ही रहकर

भजन-साधनका अभ्यास बढाइये और भगवानुका काम समझकर घरके कामोंको भी उत्साहके साथ कीजिये।

मालूम हुआ कि किसी मन्दिरमें जाकर भगवान्के

चरणोंमें गिर जाने और 'जबतक भगवान् दर्शन न देंगे

तबतक हम नहीं उठेंगे'-यह व्रत लेकर खाना-पीना

४-सूनने और किताबोंको देखनेसे जो आपको

िभाग ९२

५-आपने अपने मनकी जो दशा लिखी है, वही

प्राय: मनुष्यमात्रके मनकी स्थिति है। मन संसारमें अधिक रमता है और भगवानुमें कम। उसे अधिकाधिक पूर्णिश्रिक्षांद्रमान्ने । बहुकार्ट्ना Settyer ईस्सालक्ष्यं / विज्ञतः वद्यायी विद्यास्त्रिक्षे । ब्रिक्षे स्वर्धानिक विद्यास्त्रिक्षे । विद्यास्तिक्षे । विद्यासिक्षे । विद्यासिक्षे । विद्यासिक्षे । विद्यासिक्षे । विद्यासिक्से । विद्यासिक्षे । व

| ॥ १०] साधनोपयोगी पत्र ३९                                |   |  |  |  |
|---|---|--|--|--|
| ************************************                    | **************************************                      |  |  |  |
| अव्यवस्थित मनको लेकर भगवान्के मन्दिरमें धरना देना       | डालकर पूर्णत: निश्चिन्त एवं निर्भय हो जाता है। उसे          |  |  |  |
| तो बिलकुल नादानी ही है।                                 | अपने मनका भान ही नहीं रहता। उसके मन, प्राण,                 |  |  |  |
| ६–कलियुगमें अन्य युगोंकी अपेक्षा जल्दी और               | शरीर, अन्त:करण सबके लक्ष्य एक भगवान् ही होते हैं।           |  |  |  |
| सुगम साधनसे ही भगवान् दर्शन दे देते हैं, यह बात         | वह उन्हींको देखता, उन्हींकी बातें सुनता और उन्हींका         |  |  |  |
| बिलकुल ठीक है। सत्ययुगमें हजारों वर्षोंतक ध्यान,        | निरन्तर चिन्तन करता हुआ मस्त रहता है। ऐसे                   |  |  |  |
| त्रेतामें कितने ही वर्षींतक यज्ञ तथा द्वापरमें सुदीर्घ  | शरणागत भक्तके योगक्षेमका भार स्वयं भगवान् ही                |  |  |  |
| कालतक पूजा-अर्चा करनेसे जो फल मिलता है, वह              | वहन करते हैं। यदि भगवान्की मधुर स्मृतिमें प्रेमावेश         |  |  |  |
| कलियुगमें केवल भगवान्के नामोंका कीर्तन करनेसे           | होनेपर उसे खाना-पीना भूल जाय तो उसको खिलाने-                |  |  |  |
| मिल जाता है। <b>( कलौ तद्धरिकीर्तनात्)</b>              | पिलानेकी चिन्ता भी भगवान्हीको करनी पड़ती है-                |  |  |  |
| ७–आपने यह ठीक ही सुना है कि पापी–से–पापी                | 'जिमि बालक राखइ महतारी।'                                    |  |  |  |
| मनुष्य भी यदि भगवान्की शरणमें चला जाय तो उसे            | (7)   |  |  |  |
| भगवान् शीघ्र ही अपना लेते हैं। स्वयं भगवान् गीतामें     | अष्टाक्षरमन्त्र-महिमा                                       |  |  |  |
| कहते हैं—   | प्रिय महोदय, सप्रेम हरिस्मरण! आपका एक पत्र                  |  |  |  |
| अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।                    | प्राप्त हुआ। आप कल्याण नियमित पढ़ते हैं, यह बहुत            |  |  |  |
| साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः॥                | अच्छी बात है। <b>'श्रीकृष्णः शरणं मम'</b> इस अष्टाक्षर-     |  |  |  |
| क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति।         | मन्त्रका जप आप करते हैं। इस जपमें आपका मन तो                |  |  |  |
| (गीता ९। ३०–३१)   | लगता है, परंतु कुछ व्यवधानका भी अनुभव होता है।              |  |  |  |
| अर्थात् 'कोई कितना ही बड़ा दुराचारी क्यों न हो,         | <b>'श्रीहरिः शरणम्'</b> यह मन्त्र आपको ज्यादा अच्छा         |  |  |  |
| जो सबका भरोसा छोड़कर अनन्यभावसे मेरा भजन                | लगता है, इसे जपनेमें कोई आपत्तिकी बात नहीं है।              |  |  |  |
| करने लगता है, वह साधु ही माननेयोग्य है; क्योंकि अब      | दोनों मन्त्रोंके जपका एक ही फल है। आप चाहें तो              |  |  |  |
| उसने उत्तम व्रत लिया है। वह शीघ्र ही धर्मात्मा हो       | सुविधानुसार एक-दो माला 'श्रीकृष्ण: शरणं मम'                 |  |  |  |
| जाता है और सनातन शान्तिको प्राप्त कर लेता है।'          | मन्त्रकी भी जप सकते हैं तथा अधिक माला चलते-                 |  |  |  |
| सनातन शान्तिका अर्थ है—भगवान्की प्राप्ति।               | फिरते, खाते-पीते किसी भी समय 'श्रीहरिः शरणम्'               |  |  |  |
| जो भगवान्की शरणमें जाता है, उसकी अहंता                  | मन्त्रका जप करना अच्छा है, कारण छोटे मन्त्रका जप            |  |  |  |
| और ममताका त्याग हो जाता है। उसके लिये 'मैं' और          | सुविधापूर्वक हो जाता है और मन भी लगता है, अत:               |  |  |  |
| 'मेरा' कुछ नहीं रहता। उसका 'मैं' पन और 'मेरा' पन        | इसमें किसी प्रकारकी शंका नहीं रखनी चाहिये।                  |  |  |  |
| सब कुछ भगवान्के चरणोंमें समर्पित हो जाता है। वह         | अष्टाक्षर-मन्त्रका अर्थ आपने पूछा, सो इसका अर्थ             |  |  |  |
| तो भगवान्के हाथका यन्त्र बन जाता है। भगवान् जैसे        | तो यही है कि एकमात्र भगवान् श्रीकृष्ण ही मेरे शरण्य हैं।    |  |  |  |
| रखें, रहना है; जो करायें, करना है। उसकी प्रत्येक चेष्टा | 'श्रीहरिः शरणम्' का अर्थ भी इसी प्रकार है—मैं भगवान्        |  |  |  |
| भगवान्की प्रीतिके लिये होती है। अत: बुरे कर्मोंकी       | श्रीहरिकी शरणमें हूँ अर्थात् एकमात्र हरि ही मेरे शरण्य हैं। |  |  |  |
| ओरसे उसकी प्रवृत्ति स्वाभाविक ही हट जाती है। उसे        | अर्थानुसन्धानके साथ जपकी विशेष महिमा है। अत:                |  |  |  |
| तो वे ही कर्म भाते हैं, जिनसे भगवान्को प्रसन्नता हो।    | यथासम्भव ध्यानावस्थामें परमात्मप्रभुके शरणागत होनेका        |  |  |  |
| सुख हो या दुःख, उसे भगवान्का प्रसाद मानकर वह            | यह अमोघ साधन है। भगवत्कृपासे और उनकी प्रेरणासे              |  |  |  |
| सहर्ष शिरोधार्य करता है। उसे अपने लिये कोई चिन्ता       | जीव उनके शरणागत हो जाय, यही इसका फल है। शेष                 |  |  |  |
| नहीं होती है। वह तो अपनेको भगवान्की छत्रच्छायामें       | प्रभुकृपा।  |  |  |  |

कल्याण

# व्रतोत्सव-पर्व

२८ "

२९ "

30 11

,,

२ ,,

४ ,,

**३** ,,

4 ,,

ξ, ,,

9 ,,

सं० २०७५, शक १९४०, सन् २०१८, सूर्य दक्षिणायन, शरद्-ऋतु, कार्तिक कृष्णपक्ष तिथि नक्षत्र दिनांक मूल, भद्रा, पंचक तथा व्रत-पर्वादि प्रतिपदारात्रिमें १०।० बजेतक गुरु मुल दिनमें १०। ४४ बजेतक। अश्वनी दिनमें १०।४४ बजेतक |२५ अक्टू०| शुक्र भरणी 🗤 १०। ४७ बजेतक २६ " वृषराशि दिनमें ४। ४१ बजेसे।

द्वितीया '' ९।११ बजेतक तृतीया " ७।५८ बजेतक शनि कृत्तिका " १०। २३ बजेतक २७ ,,

चतुर्थी 🗥 ६। २३ बजेतक रवि

पंचमी सायं ४।२६ बजेतक सोम मृगशिरा 🗤 ८।३१ बजेतक

रोहिणी 🗤 ९। ३८ बजेतक आर्द्रा प्रातः ७। ९ बजेतक

षष्ठी दिनमें २।१८ बजेतक मंगल पुष्य रात्रिमें ३।५७ बजेतक सप्तमी '' १२।० बजेतक ब्ध

38 अष्टमी " ९।३६ बजेतक आश्लेषा "२।१५ बजेतक गुरु १ नवम्बर

मघा 🥠 १२। ४४ बजेतक शुक्र

नवमी प्रात: ७ । १३ बजेतक एकादशी रात्रिमें २।४७ बजेतक शनि पू०फा० 🕖 ११ । ११ बजेतक

रवि द्वादशी 😗 १२ ।५१ बजेतक उ०फा० 🗤 ९। ५६ बजेतक

सोम हस्त 🗤 ९। २ बजेतक त्रयोदशी 🔈 ११ ।१७ बजेतक चतुर्दशी "१०।६ बजेतक मंगल चित्रा 🕠 ८। २६ बजेतक

अमावस्या 🔈 ९ । १९ बजेतक स्वाती "८।१६ बजेतक बुध सं० २०७५, शक १९४०, सन् २०१८, सूर्य दक्षिणायन, शरद्-हेमन्त-ऋतु, कार्तिक शुक्लपक्ष

तिथि वार नक्षत्र गुरु विशाखा रात्रिमें ८। ३६ बजेतक

प्रतिपदा रात्रिमें ९।२ बजेतक द्वितीया 🗤 ९। १७ बजेतक अनुराधा 🗤 ९ । २५ बजेतक शुक्र शनि

तृतीया 辨 १०। ४ बजेतक ज्येष्ठा 🗤 १०।४५ बजेतक रवि मूल 😗 १२।३२ बजेतक

चतुर्थी <table-cell-rows> ११। १७ बजेतक पू० षा० 🕠 २।४३ बजेतक सोम पंचमी \prime १२।५६ बजेतक

षष्ठी 😗 २।५५ बजेतक मंगल श्रवण अहोरात्र

उ०षा रात्रिशेष ५। १० बजेतक बुध गुरु

श्रवण प्रात: ७।४७ बजेतक

धनिष्ठा दिनमें १०।२१ बजेतक शुक्र

शनि

सप्तमी रात्रिशेष ५ । २ बजेतक अष्टमी अहोरात्र

रवि

उ०भा० सायं ४। २८ बजेतक एकादशी 꺄 ११।५५ बजेतक सोम

मंगल

बुध

गुरु

पूर्णिमा" ११।४६ बजेतक |शुक्र | कृत्तिका 🕠 ६।१४ बजेतक

द्वादशी 🕖 १२। ४० बजेतक

त्रयोदशी 🔈 १२ । ५२ बजेतक

चतुर्दशी 🕶 १२। ३५ बजेतक

अष्टमी प्रात: ७।१० बजेतक नवमी दिनमें ९ ।७ बजेतक दशमी " १० ।४५ बजेतक

शतभिषा "१२।४६ बजेतक पु०भा० 🗤 १२।५० बजेतक

रेवती 🗤 ५। ४० बजेतक

अश्वनी रात्रिमें ६। ३० बजेतक

भरणी 😗 ६।३२ बजेतक

दिनांक ८ नवम्बर

> १२ ,,

> १३ "

88 "

१५ "

१६ "

26 11

१८ "

१९ 11

२० "

२१ "

२२ "

२३ "

9 " 20 11 **धनुराशि** रात्रिमें १०।४५ बजेसे। 28 "

**श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, मृल** रात्रिमें १२।३२ बजेतक।

रात्रिमें ९।४ बजे, **गोपाष्टमी।** 

२७ बजेसे, व्रत-पूर्णिमा।

**श्रीसूर्यषष्ठीव्रत, मकरराशि** दिनमें ९।२० बजेसे। भद्रा रात्रिशेष ५।२ बजेसे। भद्रा रात्रिमें ६।६ बजेतक, कुम्भराशि रात्रिमें ९।४ बजेसे, पंचकारम्भ

तुलसी-विवाह, मूल सायं ४। २८ बजेसे।

श्रीवैकुण्ठचतुर्थीव्रत, मूल रात्रिमें ६।२० बजेतक।

**भद्रा** दिनमें १०। ४१ बजेसे रात्रिमें ११। १७ बजेतक, **वैनायकी** 

अक्षयनवमी, वृश्चिक-संक्रान्ति रात्रिशेष ६। २१ बजे, हेमन्त-ऋतु प्रारम्भ।

भद्रा दिनमें ११। ५५ बजेतक, प्रबोधिनी एकादशीव्रत (सबका),

**मेषराशि** सायं ५ । ४० बजेसे, **पंचक समाप्त** सायं ५ । ४० बजे, **भौमप्रदोषव्रत ।** 

**भद्रा** दिनमें १२।३५ बजेसे रात्रिमें १२।११ बजेतक, **वृषराशि** रात्रिमें १२।

कार्तिकी पूर्णिमा, श्रीगुरुनानक-जयन्ती, कार्तिकस्नान समाप्त।

भद्रा रात्रिमें ११।२० बजेसे, मीनराशि दिनमें ८।१९ बजेसे।

भद्रा दिनमें ८।३५ बजेसे रात्रिमें ७।५८ बजेतक, संकष्टी (करवाचीथ)

भद्रा दिनमें २।१८ बजेसे रात्रिमें १।८ बजेतक, कर्कराशि रात्रिमें ११।

भद्रा रात्रिमें ६।४ बजेसे रात्रिशेष ४।५४ बजेतक, मूल रात्रिमें १२।४४ बजेतक।

कन्याराशि रात्रिमें ४।५२ बजेसे, रम्भा एकादशीव्रत (स्मार्त्त )।

भद्रा रात्रिमें ११। १७ बजेसे, सोमप्रदोषव्रत, धनतेरस, धन्वन्तरि-जयन्ती।

भद्रा दिनमें १०।४२ बजेसे, तुलाराशि दिनमें ८।४५ बजे, हनुमज्जयन्ती।

मूल, भद्रा, पंचक तथा व्रत-पर्वादि

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय रात्रिमें ७। ३७ बजे।

मिथुनराशि रात्रिमें ९।५ बजे।

अहोईव्रत, मूल रात्रिमें ३।५७ बजेसे।

एकादशीव्रत (वैष्णव),गोवत्सद्वादशीव्रत।

सिंहराशि रात्रिमें २।१५ बजेसे।

अमावस्या, दीपावली।

५८ बजेसे।

अन्नकृट, गोवर्धनपूजा, वृश्चिकराशि दिनमें २। ३१ बजेसे।

गोवर्धनपूजा (काशीमें), भ्रातृद्वितीया, यमद्वितीया, मूल रात्रिमें ९। २५ बजेसे।

श्रीभगवन्नाम-जपकी शुभ सूचना ( इस जपकी अवधि कार्तिक पूर्णिमा, विक्रम-संवत् २०७४ से चैत्र पूर्णिमा, विक्रम-संवत् २०७५ तक रही है ) ते सभाग्या मनुष्येषु कृतार्था नृप निश्चितम्। असगवाँ, असदपुर, असवार, अहमदाबाद, अहेरी, अहिरौली, स्मरन्ति ये स्मारयन्ति हरेर्नाम कलौ युगे॥ आऊवा, आइसन, आगरा, आगवा, आङ्गरी-रोड,आडंद, 'राजन्! मनुष्योंमें वे लोग भाग्यवान् हैं तथा निश्चय आनन्दनगर, आबूरोड, आमगाँवबड़ा, आमळा, आरा, ही कृतार्थ हो चुके हैं, जो इस कलियुगमें स्वयं श्रीहरिका आर्वी, आला (ने०), आलेफाटा, आलोट, आष्टा, आसाङ्ग, नाम-स्मरण करते और दूसरोंसे नाम-स्मरण करवाते हैं।' इंदा, इन्दिरानगर, इंदौर, इचलकरंजी, इटावा, इटौरा, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। इन्दौली, इरांग पार्ट-१, इरांग पार्ट-२, इरेल भेली-१, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ इरेल भेली-२, इलाहाबाद, इसमैला, इसौली, ईरोड, —इस वर्ष भी इस षोडश नाम-महामन्त्रका जप ईसवाना, उखुल, उज्जैन, उतरौली, उदयपुर, उन्नाव, पर्याप्त संख्यामें हुआ है। विवरण इस प्रकार है— उमलवाड, उरतुम, उसनाकला, उस्मानाबाद, ऊना ऊसरी, (क) मन्त्र-संख्या ८४,७१,७४,१०० (चौरासी ऋषिकेश, ऋषिनगर, ओडार सकरी, ओबरा, औरंगाबाद, करोड़, इकहत्तर लाख, चौंसठ हजार, एक सौ)। कंचनपुर, कघारा, कछयाना, कछला, कछुआ, कछुई, कछेवारा, कजरहवाका पोखरा, कटक, कटका, कटनी (ख) नाम-संख्या १३,५५,४६,२५,६०० (तेरह अरब, पचपन करोड़, छियालीस लाख, पचीस हजार, कटरा, कठौतिया, कड़ीला, कथैया, कनखल, कनैड, छ: सौ)। कनौसी, कन्नौज, कन्दरीडी, कपारी, कमलपुर, करनाल, (ग) षोडश नाम-महामन्त्रके अतिरिक्त अन्य करही (शुक्ल), करब गाँव, करीमुद्दीनपुर, करैयाजागीर, मन्त्रोंका भी जप हुआ है। करौदी, करौली, कर्णपुर, कर्मचारीनगर, कल्याण (वेस्ट),

श्रीभगवन्नाम-जपको शुभ सूचना

(ग) षोडश नाम-महामन्त्रके अतिरिक्त अन्य मन्त्रोंका भी जप हुआ है। (घ) बालक, युवक-वृद्ध, स्त्री-पुरुष, गरीब-अमीर, अपढ़ एवं विद्वान्—सभी तरहके लोगोंने उत्साहसे जपमें योग दिया है। भारतका शायद ही कोई ऐसा प्रदेश बचा हो, जहाँ जप न हुआ हो। भारतके अतिरिक्त बाहर फ्रामिंघम, मेलबोर्न, मिडिलटाउन, यू०के०, यू०एस०ए०,

यूनाइटेड किंगडम, नेपाल आदिसे भी जप होनेकी

सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं।

संख्या १० ]

**r**—

#### र ए । स्थानोंके नाम—

अंजुरफरटा, अंता, अंधेरी, अंबाजोगाई, अंबाला कैंट, अंबाला छावनी, अंबाला शहर, अर्की, अकोला, अगराना, अचरोल, अचानामुरली, अचारापुरा, अजनु,

अजमेर, अजीतगढ़ अमरसर, अटरिया, अडावद, अतरौलिया, अनगाँव, अनघौरा, अनूपशहर, अमजदपुर, अमरावती,

अनगाँव, अनघौरा, अनूपशहर, अमजदपुर, अमरावती, अमरावतीघाट, अमरोह, अमलनेर, अमाचन, अमिलिया, अमृतसर, अरइल अरङ्का, अरनिया जोशी, अलकनन्दा,

अलवर, अलीगढ, अलीपुरकला, अल्मोड़ा, अवरीकला,

कोहका, कौड़िया, कौड़ीहार, कौबुलेखा, कौहाकुड़ा, कौलती (नेपाल), कोरकपुरा, कौवाताल, खंडवा, खंजरपुर, खगड़िया, खजरेट, खजुरीरुण्डा, खजूरी, खडगवाँकला, खन्ना, खरखो, खरगोन, खराड़ी, खाखोली, खानपुर

फतेह, खामगाँव, खिंचलाय, खुटनिया, खुटपला, खुरपावडा,

कसारीडीह, कहली खुरद, कॉंगड़ा, कॉंग्लातोम्बी, कॉंग्पोक्पी,

कांदुला, काछीगुडा, काठिया, कादरगंज, कानपुर, कान्दीवली,

कामता (फारविसगंज), कालका, कालपी, कालाडेरा,

कालापहाड़, कालियागंज, कालीकट, कालूखाँड़, काशीपुर,

किमसी, किला, किरारी, किस्मीदेसर, कुंदल, कुचामनसिटी,

कुरमापाली, कुरुक्षेत्र, कुलमीपुर, कुशालपुरा, कुसुमसरोवर,

कृष्णनगर, केंकरा, कैथल, कैथापकड़ी, कोंच,

कोईरागै, कोईलारी, कोकलकचक, कोटद्वार, कोटडा,

कोटा, कोठार, कोठी, कोठेयाँ, कोडरा, कोडलहिया,

कोथराखुर्द, कोब्रुलैखा, कोरकपुरा, कोरबा, कोरापुट,

कोलकाता, कोलहरा, कोलिया, कोलीढेक, कोसीकला,

भाग ९२ \* खेरोट, खेलदेश पाण्डेय, खैराचातर, खैराबाद, गंगापुर ढाना, ढेगडीह, तरकेडी, तरखाऊ, तरखानवाला, तर्भा, ताक्या, तामली, तिंवरमोड़, तिसपरी तिमसिन, तेल्हारा, सिटी, गंगाशहर, गंजपारा, गंजवसौदा, गजरौला, गड़कोट, गढ़पुरा, गढ़बसई, गढ़ेरी, गणेती, गणेशपुर, गदरपुर, तीनफेडिया, तोक्या, तोला, तोरीबारी, तेलांगाना, थाणा, गनेड़ी, गम्हरिया, गया, गरौठा, गहमर, गाँधीनगर, थाणे, थुलवासा, दडीबा, दितया, दत्तनगर, दन्ततोड़िया, गाजियाबाद, गाजीपुर, गाड्रवारा, गाड़ीपुरा, गिरिडीह, दत्यारसुनी, दमोह, दरौना, दलसिंहसराय, दहमी, दहिवद, गीर, गुंडरदेही, गुड़गाँव, गुड़ाकला, गुना, गुजरात, दातामुरा, दातारामगढ, दामनजोड़ी, दामोदरपुर, दारानगर, गुरुग्राम, गुरुदासपुर, गुलबर्गा, गुवाहाटी, गोंडा, गोकुलेश्वर, दिगौड़ा, दिल्ली, दुमका, दुर्ग, दुर्गानगर, देईखेड़ा, देचू, गोपालगंज, गोपालगढ, गोपिबंग, गोपियापारा, गोरखपुर, देवखैरा, देवनगर, देवरीकलां, देवास, देशनोक, देहरागोपीपुर, गोलप, गोलाबाजार, गोवाडीहा, गौंछेड़ा, गौड़ीहाट, देहरादून, देहली, दौलतगढ़, दौलतपुरचौक, द्वारका, गौरिया वरारी, ग्वालियर, घगोंट, घघरा, घुघली, घरिया, द्वारिकेशनगर, धनबाद, धनौरा, धरमगढ़, धर्मपुरा, धर्मावाद, घरवार, घरैहली, घाटासेर, घिंचलाय, घुंसी, चंगोई, धानीखेड़ा, धार, ध्राँगधा, धाली, नदियामी, नन्हवाराकला, चंडीगढ़, चन्द्रनगर, चंदला, चंदौली, चकलोकमान, नबाबगंज, नयापुरवा, नयाबाजार, नयीदिल्ली, नरहवा चक्कीरामपुर, चतुरताई, चपकीबघार, चम्पाघाट, चम्बा, अचरजदूबे, नांदन, नागलोई, नागपुर, नागौर, नाचनी, चरघरा, चरघटा, चाँडेल, चाचौड़ा, चारहजारे, चिखलाकला, नाढ़ी, नाभा, नादकंडा, नारायणपुर, नावन, नासिक, चिचोली, चिलौली, चीनपुर, चुड़ाचाँदपुर, चुरू, चेन्नई, नाहली, निडाना, निधिपुरवा, निपनिया, निफाड़, निमाज, चैतड़, चोरबड़, चोपड़ा, चौखा, चौखुटिया, चौन्तला, नीमच, नैनपुर, नैनवा, नोएडा, नोखा, नोनापुर, नोनीहाट, नोनैती, नौगाँव, न्यू माधोपुर, न्यू शिमला, पंचकूला, चौमहला, चौरास, चौसलाकुलंबी, चौहटन, छत्ता, छपरा, पंचशीलनगर, पंडेर, पटना, पटनासिटी, पटियाला, पट्टी, छपिया, छाजाका नागल, छातागुड़ा, छोटालम्बा, पट्टीचौरा, पगा, पड़ग, पतारी, पताल घुटकुरी, पत्थरकोट जंगबहादुरगंज, जंघोरा, जंडियालगुरु, जगदलपुर, जगन्नाथपुरी, जगवन, जगदीशपुरा, जगाधरी, जगेश्वर, (नेपाल), पत्योरा, पद्मनाभ नगर, पपरौला, परलीबैजनाथ, जट्टारी, जत, जतापुर, जनौरा, जबलपुर, जमानी, परसापाली परिसया, परोख, पलेई, पार्ट्ड, पाटल, पार्ड्रियाडाँडा, जमुआव, जमुड़ी, जयनारायण (व्यासनगर), जयपुर, पालनपुर, पाला, पाली, पालीमारवाड्, पाहल, पिजड़ा, पिछोर, पिठौरागढ़, पिपरिया, पिपलगाँव वसन्त, पिलखुवा, जरुड़, जलगाँव, जलहरकुकुरमूड़ा, जलोदाखाटयान, जसपुरखुर्द, जसो, जसवंतढ, जहाँगीराबाद, जहाजपुर, पीठीपट्टी, पीपलरावा, पीलीभीत, पुखाऊ, पुणे, पुनासा, जॉजगीर, जाकरपुरा, जाखलदाधीच, जाखडवल्ली, जाजोद, पुपरी, पुरुणावान्ध्रागोडा, पुरेना, पूर्निया, पेडोंग, पोटली, पोटसो, पोलय, पोरबन्दर, पौना, प्राचीन टिकैतगंज, जानडोल, जामपाली, जालन्धर, जालना, जिहुली, जुगसलाई, जुलगाँव (नेपाल), जेमीस्थानपुर जेरई, जैतारन, जैतो, प्रतापनगर, फतेहपुर, फरीदाबाद, फागी, फाजिलनगर, जैपुर, जैपोर, जैलिधार, जैसलमेर, जोधपुर, जोरहाट, फिरोजपुर, फीला, फुलेरा, फूलपुररामा, फूलबेहड्, फैजलनग, जोस्यूड़, जौनायंचाकला, जौलजीवी, झहुराटभका, झाँसी, फैजाबाद, फ्रामिंघम, बंगलीर, बंबई, बमुरैया, बसई, झापा, झुट्ठा, झुन्झुनू, झुँसी, झुलाघाट, टटेडा, टाँगीणीगुडा, बघेरा, बढह, बड़कागाँव, बड़गाँव, बड़खेरवा, बड़ायाँव, टीकमगढ़, ट्रंगरी, टोरड़ा, टोंकखुर्द, ठकुरापार, ठकठौलिया, बडालु, बडा रावलों, बडौत, बदनेरंगाई, बनमोर, बनवारीबसंत, ठॉ, ठाँठाणी, ठाणे, ठारी, ठीकरिया, ठुटी, ठेहट, बनेड़िया, बनैल, बन्नी, बभनान, बमोरा, बमनियाकला,

<del>ु Hünde</del>jis<del>ng शिव</del>्दृor<del>g, रिव</del>ष्टु, er<del>clattaran/da</del>ç, o<del>gal</del>d ha<del>धारुगा</del>। असई Dह्नस्प्रपुर्वुन, असह हों, असीव, व्हानिस्

बरखेडा पठानी, बरडा, बरमकेला, बरवाडीह, बर्ली,

बरेली, बरीपुरा, बरोरी, बरोहा, बलरामपुर, बलिगाँव,

डंडापुरा, डकोर, डडि्हथ, डबरा, डबोक, डबारो,

डॉंगावास, डाल्टनगंज, डिग्गी, डीग, डीडवाना, ड्गली,

### श्रीभगवन्नाम-जपके लिये विनीत प्रार्थना हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।

आज सारे संसारमें जीवनकी जटिलताएँ बढती जा रही हैं। अधिकतर लोग अपनी असीमित भौतिक आवश्यकताओंकी पूर्ति करनेमें संलग्न हैं। वे अपने क्षुद्र स्वार्थकी सिद्धिके लिये दूसरोंका अहित करनेमें भी कोई संकोच नहीं करते। परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य, कलह और हिंसाके वातावरणमें अशान्त स्थिति है। देशके कुछ भागोंमें तो हिंसाका नग्न ताण्डव दिखायी दे रहा है। अधिकतर लोग मानसिक तनावके शिकार बनते जा रहे हैं। कलिका प्रकोप सर्वत्र व्याप्त है। प्रश्न यह होता है कि इस स्थितिका समाधान क्या है? ऋषि-महर्षि, मुनि और शास्त्रोंने इस स्थितिको अपनी अन्तर्दृष्टिसे देखकर बहुत पहलेसे यह घोषित कर दिया है कि 'कलिकालमें मानव-कल्याण और विश्वशान्तिके लिये श्रीहरि-नामके अतिरिक्त

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

कोई दूसरा सुलभ साधन नहीं है।' इसीलिये यह बात जोर देकर शास्त्रोंमें कही गयी है कि 'भगवान् श्रीहरिका नाम ही एकमात्र जीवन है। कलियुगमें इसके अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा-चारा नहीं है'-हरेर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम्। कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥ (ना०पूर्व० ४१।११५) हमारे शास्त्रोंके अतिरिक्त अनुभवी संत-महात्माओंने भी भगवन्नाम-स्मरण-जपको कलियुगका मुख्य धर्म (ऐहिक-

पारलौकिक कल्याणकारी कर्तव्य) माना है। इतना ही नहीं, जगतुके समस्त धर्म-सम्प्रदाय भी किसी-न-किसी रूपमें भगवान्के नाम-स्मरण-जपके महत्त्वको प्रतिपादित करते हैं। नामके जप-स्मरणमें देश-काल-पात्रका कोई भी नियम नहीं है। श्रीचैतन्यमहाप्रभुने भी कहा है—

नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति-स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः।

'हे भगवन्! आपने लोगोंकी विभिन्न रुचि देखकर

नित्य-सिद्ध अपने बहुत-से नाम कृपा करके प्रकट कर दिये। प्रत्येक नाममें अपनी सारी शक्ति भर दी और नाम-

भगवन्नाम-स्मरणसे नहीं टल सकता और ऐसी कौन-सी वस्तु है, जो नहीं मिल सकती? इस कलिकालमें

मंगलमय भगवान्के आश्रयके लिये भगवन्नामका सहारा ही एकमात्र अवलम्बन है। अतएव भारतवर्ष एवं समस्त

भाग ९२

विश्वके कल्याणके लिये, लौकिक अभ्युदय और पारलौकिक सुख-शान्तिके लिये तथा साधकोंके परम लक्ष्य एवं मानव-जीवनके परम ध्येय-भगवान्की प्राप्तिके लिये सबको भगवन्नामका स्मरण-जप-कीर्तन करना चाहिये।

अतः 'कल्याण' के भाग्यवान् ग्राहक-अनुग्राहक, पाठक-पाठिकाएँ स्वयं तथा अपने इष्ट-मित्रोंसे प्रतिवर्ष

भगवन्नाम-जप करते-कराते आये हैं। गत वर्ष पंचानबे करोड नाम-जपकी प्रार्थना की गयी थी। इस वर्ष विभिन्न स्थानोंसे जो सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं; उनके अनुसार चौरासी करोड, इकहत्तर लाख, चौंसठ

हजार, एक सौ मन्त्रके नाम-जप हुए हैं। प्रसन्नता है कि इस बार पिछले वर्षकी अपेक्षा श्रीभगवनाम जपकी संख्यामें वृद्धि हुई है। भगवन्नाम-प्रेमी महानुभावोंसे प्रार्थना है कि जपकी संख्यामें विशेष उत्साह दिखलायें, जिससे भगवन्नाम-जपकी संख्यामें और वृद्धि हो सके। आशा है, अधिक

उत्साहसे नाम-जप होता रहेगा।

जपकर्ताओंकी सूचना अभीतक लगातार आ रही है, किंतु विलम्बसे सूचना आनेपर उसे प्रकाशित करना सम्भव नहीं है। अत: जपकर्ताओंको जप पूरा होने (चैत्र शुक्ल पूर्णिमा)-के अनन्तर तत्काल सूचना प्रेषित करनी चाहिये,

जिससे उनके जपकी संख्या प्रकाशित की जा सके। आप महानुभावोंसे पुन: इस वर्ष पंचानबे करोड़ भगवन्नाम-मन्त्र-जपकी प्रार्थना की जा रही है। यह नाम-जप अधिक उत्साहसे करना तथा करवाना चाहिये, जिससे भगवन्नाम-जपकी संख्यामें उत्तरोत्तर वृद्धि हो।

आरम्भ किया जाय और चैत्र शुक्ल पूर्णिमा (वि० सं० २०७६)-तक पूरा किया जाय। पूरे पाँच महीनेका समय है। भगवान्के प्रभावशाली नामका जप स्त्री-पुरुष, ब्राह्मण-शूद्र सभी कर सकते हैं। इसलिये 'कल्याण' के भगवद्विश्वासी

निवेदन है कि पूर्ववत् कार्तिक शुक्ल पूर्णिमासे जप

पाठक-पाठिकाओंसे हाथ जोडकर विनयपूर्वक प्रार्थना स्मरणमें देश-काल-पात्रका कोई नियम भी नहीं रखा।' विपत्तिसे त्राण पानेके लिये आज श्रीभगवन्नामका की जाती है कि वे कृपापूर्वक सबके परम कल्याणकी स्मरण ही एकमात्र उपाय है। ऐसा कौन-सा विघ्न है, जो भावनासे स्वयं अधिक-से-अधिक जप करें और प्रेमके

| ख्या १०] श्रीभगवन्नाम-जपके लिये विनीत प्रार्थना ४५  |   |                              |  |  |  |  |
|---|---|------------------------------|--|--|--|--|
| *****************************   | *****************************                           | ************                 |  |  |  |  |
| साथ विशेष चेष्टा करके दूसरोंसे भी जप व  | ज् <mark>रवायें। तो उसके प्रति मन्त्र-जपकी संख्य</mark> | ॥ १०८ होती है, जिसमें        |  |  |  |  |
| नियमादि सदाकी भाँति ही हैं।   | भूल-चूकके लिये ८ मन्त्र बाद कर र                        | देनेपर गिनतीके लिये एक       |  |  |  |  |
| (१) जप प्रारम्भ करनेकी तिथि कार्तिक शुक्ल   | पूर्णिमा सौ मन्त्र रह जाते हैं। अतएव जिस ि              | दिन जो भाई-बहन मन्त्र-       |  |  |  |  |
| (दिनांक २३। ११। २०१८ ई०) शुक्रवार रखी गयी है  | । इसके जप आरम्भ करें, उस दिनसे चैत्र शुव                | ऋल पूर्णिमातकके मन्त्रोंका   |  |  |  |  |
| बाद किसी भी तिथिसे जप आरम्भ कर सकते हैं, परंतु  | उसकी हिसाब इसी क्रमसे जोड़कर हमें अ                     | ग्निमें सूचित करें। सूचना    |  |  |  |  |
| पूर्ति चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, वि० सं० २०७६ दिन-  | राुक्रवार   भेजनेवाले सज्जनोंको जपकी संख्या             | के साथ अपना नाम-पता,         |  |  |  |  |
| (दिनांक १९।४।२०१९)-को कर देनी चाहिये।इस   | के आगे) मोबाइल नम्बर स्पष्ट अक्षरोंमें लि               | खना चाहिये।                  |  |  |  |  |
| भी अधिक जप किया जाय तो और उत्तम है।   | (८) प्रथम सूचना तो मन                                   | न्त्र–जप प्रारम्भ करनेपर     |  |  |  |  |
| (२) सभी वर्णों, सभी जातियों और सभी अ  | •   |                              |  |  |  |  |
| नर-नारी, बालक-वृद्ध, युवा इस मन्त्रका जप कर स   |   | -,                           |  |  |  |  |
| (३) एक व्यक्तिको प्रतिदिन उपरिनिर्दिष्ट   |   | न्त्र पूर्णिमातक हुए कुल     |  |  |  |  |
| कम-से-कम १०८ बार (एक माला) जप अवश्य ह   |   |                              |  |  |  |  |
| चाहिये, अधिक तो कितना भी किया जा सकता है  | 3(  |                              |  |  |  |  |
| (४) संख्याकी गिनती किसी भी प्रकारकी   | 51  | ति समय सदस्य-संख्या          |  |  |  |  |
| अथवा अंगुलियोंपर या किसी अन्य प्रकारसे भी र   |   |                              |  |  |  |  |
| सकती है। तुलसीजीकी माला उत्तम होगी।   | (१०) जप करनेवाले स                                      | • (                          |  |  |  |  |
| (५) यह आवश्यक नहीं है कि अमुक   |   |                              |  |  |  |  |
| आसनपर बैठकर ही जप किया जाय। प्रात:काल   |   |                              |  |  |  |  |
| समयसे लेकर चलते-फिरते, उठते-बैठते और का   | 9   |                              |  |  |  |  |
| हुए सब समय—सोनेके समयतक इस मन्त्रका जप  | <del>-</del>  |                              |  |  |  |  |
| जा सकता है।   | (११) जापक महानुभावोंक                                   |                              |  |  |  |  |
| (६) बीमारी या अन्य किसी कारणवश ज  | •   |                              |  |  |  |  |
| सके और क्रम टूटने लगे तो किसी दूसरे सज्जन   |   | •                            |  |  |  |  |
| करवा लेना चाहिये। पर यदि ऐसा न हो सके ते  | 3,  |                              |  |  |  |  |
| अधिक जप करके उस कमीको पूरा कर लेना  |   |                              |  |  |  |  |
| (७) संख्या मन्त्रकी होनी चाहिये, नामक   |   |                              |  |  |  |  |
| उदाहरणके रूपमें—  | गीताप्रेस, पो०—गीताप्रेस—२५                             | •                            |  |  |  |  |
| हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे   |   | प्रार्थी—                    |  |  |  |  |
| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे   |   | राधेश्याम <sub>,</sub> खेमका |  |  |  |  |
| —सोलह नामके इस मन्त्रकी एक माला प्रतिर्ा  | इन जपें   | सम्पादक—'कल्याण'             |  |  |  |  |
| ——————————————————————————————————————  |   |                              |  |  |  |  |
| राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे   |   |                              |  |  |  |  |
| एक ही साधन सब रिद्धि-सिद्धि साधि रे । ग्रसे किल-रोग जोग-संजम-समाधि रे॥  |   |                              |  |  |  |  |
| भलो जो है, पोच जो है, दाहिनो जो, बाम रे । राम-नाम ही सों अंत सब ही को काम रे॥   |   |                              |  |  |  |  |
| जग नभ-बाटिका रही है फलि फूलि रे । धुवाँ कैसे धौरहर देखि तू न भूलि रे॥<br>राम-नाम छाड़ि जो भरोसो करै और रे । तुलसी परोसो त्यागि माँगै कूर कौर रे॥ [विनय-पत्रिका] |   |                              |  |  |  |  |
|   |   |                              |  |  |  |  |
| श्रीभगवन्नाम-जपके जापक महानुभावोंको अपनी स्थायी सदस्य-संख्या एवं नाम-पता ( मोबाइल नम्बरसहित )   |   |                              |  |  |  |  |
| साफ-साफ अक्षरोंमें लिखना चाहिये, जिससे उनके ग्राम⁄नगरका शुद्ध नाम दिया जा सके। —सम्पादक   |   |                              |  |  |  |  |

कृपानुभूति भगवान् श्रीकृष्णकी कृपा यह सच्ची घटना वर्ष २०१३ माह जूनकी है, मुझे केदारनाथ, उत्तरकाशी तथा गंगोत्री, यमुनोत्रीमें भीषण बारिश होनेके कारण भयंकर तबाही हुई, जिसमें बहुत

परमात्मा परमेश्वर श्रीकृष्णकी साक्षात् कृपाका अनुभव

हुआ है। भगवान् जब अपने भक्तपर किसी प्रकारका कोई विषम संकट आता है तो वे किस प्रकार निराकरण करते

हैं, यह भक्तको बादमें अनुभव होता है। सन् २०१३ के मईके महीनेमें मैंने परिवारसहित गंगोत्री तथा यमुनोत्री

जानेकी योजना बनायी। मैं धार्मिक यात्राएँ करता रहता हूँ और प्राय: हरिद्वार जाता रहता हूँ, इसी क्रममें इस

बार घटित हुई घटनाका विवरण इस प्रकार है— में चीफ फार्मेसिस्टके पदपर १५ वीं वाहिनी

पी॰ए॰सी॰ चिकित्सालयमें कार्यरत हूँ। दिनांक ७ जून २०१३ को मुझे विभागकी ओरसे एक आदेश प्राप्त हुआ कि 'आपका स्थानान्तरण मुख्य चिकित्सा-अधिकारी

हाथरसके अधीन किया जाता है।' स्थानान्तरण-आदेशको पानेके बाद मैंने धार्मिक यात्राका कार्यक्रम रद्द कर दिया। यह स्थानान्तरण नीतिके तहत गलत हुआ था। मैंने

स्थानान्तरण-आदेशको निरस्त करानेकी प्रक्रिया आरम्भ कर दी। स्थानीय चिकित्सा-अधिकारियोंसे प्रार्थना-पत्र

तैयार कराकर मैं अपने महानिदेशक कार्यालय, लखनऊ पहुँचा। वहाँपर निदेशक महोदयके समक्ष उपस्थित होकर अपने गलत हुए स्थानान्तरणको निरस्त करनेके सम्बन्धमें

प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया। निदेशक महोदयने प्रार्थना-पत्र पढ़कर जाँच कराकर आदेशको निरस्त करानेके लिये सम्बन्धित लिपिक महोदयको निर्देशित कर दिया। सम्बन्धित बाबूने आदेशको निरस्त करनेके लिये ३०,०००

रुपयेकी माँग की। मैंने रुपये देनेसे मना कर दिया तथा कहा—मेरा स्थानान्तरण गलत हुआ है। मैं अब उच्च

अधिकारियोंसे मिलूँगा, इतना कहकर मैं वापस आगरा

सारे मकान, सड़क, यात्रीगण बह गये और लोग जहाँ-तहाँ फँस गये। कई-कई दिनोंतक लोगोंको भूखे रहना

पड़ा तब हमने सोचा कि इस स्थानान्तरणने हमको भयंकर तबाहीसे बचा दिया। यह तबाही खत्म होनेके कुछ दिनोंके बाद पोस्टमैन एक रजिस्टर्ड डाक घर लेकर आया। मैंने उस रजिस्ट्रीको खोलकर देखा कि

उसमें मेरे स्थानान्तरणको निरस्त करनेका आदेश था। मुझे प्रसन्नता हुई कि बिना रुपये लगे स्थानान्तरण निरस्त हो गया, अन्यथा मेरे लगभग ५०,००० रुपये खर्च होते।

यह घटनाक्रम गुजरनेके एक माह बाद मैं एक बार गीताका पाठ कर रहा था तो अचानक वह वर्णन मिला कि भगवान् श्रीकृष्ण अपने भक्तोंके कष्टको सहन नहीं कर सकते। वे किसी-न-किसी रूपमें भक्तको संकटसे

उबार देते हैं। अब मुझे वास्तविक रूपसे भगवान्की कृपाका अनुभव हुआ कि मेरी रक्षा भगवान् श्रीकृष्णने स्वयं की है: क्योंकि धार्मिक आस्था होनेके कारण मैं बदरीनाथ, केदारनाथ, उत्तरकाशी, गंगोत्री एवं यमुनोत्रीकी यात्रापर सपरिवार जाता और बाढ़की विभीषिकामें फँस

गलतीसे आदेश आ गया, जिससे मैं उक्त यात्रापर न जा सका। यदि क्लर्कने स्थानान्तरण निरस्तीकरणके पैसे न मॉॅंगे होते और निरस्तीकरण हो जाता तो में पुन: उपर्युक्त यात्रापर चला जाता, अतः उसमें भी मुझे प्रभुकी ही लीला लगती है, उन्हें मेरी रक्षा जो करनी थी।

जाता, परंतु प्रभुकी कृपासे उसी समय मेरे स्थानान्तरणका

इन तीन घटनाओंसे स्पष्ट है कि परमात्मा परमेश्वर अपने भक्तोंपर दया करते हैं। मैंने तथा मेरे परिवारने इस

आ गया और आदेशका इंतजार करने लगा। घटनाके माध्यमसे उनकी कृपाका अनुभव कर लिया। मैं दिनांक १३-१४ जून २०१३ ई०को बदरीनाथ, हृदयसे भगवान श्रीकृष्णको नमन करता हूँ ।—रामवीर सिंह Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sha

पढो, समझो और करो संख्या १० ] पढ़ो, समझो और करो नेशनल ब्रेन रिसर्चके विद्वानोंके साथ मिलकर विशेषज्ञोंकी (१) सफाई ही खुदाई है एक टीम बनायी। उन्होंने वेदपाठी विद्यार्थियोंपर प्रयोग एक बार खन्ना (पंजाब)-में सिद्ध सन्त स्वामी किये और वे इस परिणामपर पहुँचे कि वैदिक मन्त्रोंके त्रिवेणीपुरीजीने एक भव्य धार्मिक समारोहका आयोजन सस्वर उच्चारण एवं कण्ठस्थ करनेसे स्मरणशक्ति, किया। विख्यात सन्त श्रीहरिबाबा एवं स्वामी अखण्डानन्द विचारशीलता तथा ज्ञानका विकास होता है। उन्होंने इस सरस्वती आदि भी समारोहमें पधारे। श्रीहरिबाबाने शोधको संस्कृतका प्रभाव (The Sanskrit Effect)-की देखा कि संकीर्तन-स्थलके आसपास गन्दगी व्याप्त संज्ञा दी है और इसे साइंटिफिक अमेरिकन (Scientific है। उन्होंने तुरन्त हाथमें फावड़ा लिया और सफाईमें American) नामक जर्नलने प्रकाशित किया है। जुट गये। उन्हें सफाई करते देखकर एक रियासतके आजके वैज्ञानिकोंद्वारा किया हुआ यह अनुसन्धान राजा श्रीबहादुरसिंह तथा पंडित छविकृष्ण दीक्षित हमारे प्राचीन ऋषियोंके आध्यात्मिक चिन्तन, अपरिमित भी झाड्से सफाई करने लगे। स्वामी त्रिवेणीपुरीजीको ज्ञान एवं विज्ञानका परिचायक है। यह भारतीय संस्कृतिके जब यह पता चला तो वे भागे-भागे वहाँ पहुँचे तथा लिये गर्व एवं गौरवका विषय है। धन्य हैं हमारे हाथ जोड़कर बोले, 'बाबा, आप यह क्या कर रहे हैं? मन्त्रद्रष्टा ऋषि एवं उनका अक्षय ज्ञान। में सफाईकर्मियोंसे यह काम कराये देता हूँ।' —डॉ० रामानन्द तोष्णीवाल श्रीहरिबाबा बोले, 'महाराज, यदि हम अपने (3) माँकी निशानी हाथोंसे सफाई करनेमें हिचकेंगे तो भगवान् हमारे दिलोंमें झाड़ क्यों लगायेंगे ? यह समझ लेना चाहिये कि सफाई विजय अपने माता-पिताका ज्येष्ठ पुत्र था। उससे ही खुदाई है।' बाबाके इन शब्दोंको सुनकर सभी छोटे चार भाई थे। पिताका स्वर्गवास हो जानेके बाद उपस्थित जनोंने अपने-अपने हाथोंसे सफाई करनेका परिवारका मुखिया विजय ही था। उसकी माँ अपने पाँचों पुत्रोंको पाँचों पाण्डवके समान समझती थी। सभी संकल्प किया।-शिवकुमार गोयल अपने परिश्रम और लगनसे सरकारी नौकरियोंमें लग गये (२) वैदिक मन्त्रोंके उच्चारणसे थे। वे हर कार्यमें सक्षम थे। सम्पन्न थे। माँ विधवा स्मरणशक्तिमें अभिवृद्धि होनेपर भी अपने पुत्रोंकी तरक्कीसे खुश थी। धीरे-धीरे भारतीय मान्यताके अनुसार वैदिक मन्त्रोंके सस्वर मॉॅंकी उम्र भी अस्सी वर्षके ऊपर हो गयी थी। अक्सर उच्चारण करने एवं उन्हें कण्ठस्थ करनेसे स्मरण-शक्ति, माँ बीमार रहने लगी थी। वे डॉक्टरकी दवा और पथ्यके विचारशीलता तथा ज्ञान (Cognition)-में अभिवृद्धि सहारे रहने लगी थीं। एक दिन पाँचों पुत्र माँके पास पहुँचे। हाल-होती है। अधिकांशत: आधुनिक विद्वान् इसे एक विश्वासमात्र ही मानते थे, परंतु न्यूरो साइंटिस्ट डॉ॰ समाचार, सुख-दु:खके साथ पुरानी स्मृतियाँ दोहरायी जाने लगीं। इसी बीच चौथे नम्बरके पुत्र रामजीने माँसे जेम्स हार्टजेल (Neuro Scientist Dr. James Hartzell)-ने विभिन्न प्रयोगोंद्वारा शोधकर इस विचारधाराकी कहा—'माँ! आप अपनी ओरसे मुझे अपनी कोई स्मृति भेंटमें दे दें। वह यदि सोने-चाँदीका होगा तो मैं उसका सत्यताको सिद्ध किया है। डॉ॰ हार्टजेलने इटलीकी ट्रेन्टो यूनिवर्सिटी (Uni-मूल्य भी दुँगा, ताकि अन्य भाइयोंको बुरा न लगे।' माँने versity of Trento, Italy)-के अपने मित्र तथा भारतस्थित खुशी-खुशी अपने गलेमेंका सोनेका चेन उतारकर

भाग ९२ \$ चिकित्साकी दृष्टिसे उपयोगिता लोकमें प्रत्यक्ष है। इस रामजीको दे दिया। रामजीने तुरंत अनुमानके आधारपर उसका मूल्य जेबसे निकालकर दे दिया। फिर तो दूसरे समय बेरकी विविध प्रजातियाँ तथा संकर प्रजातियाँ प्राप्त पुत्र कृष्णकुमारने भी किसी निशानीकी माँग कर दी। होती हैं, जिनमें देशी प्रजातिकी उपयोगिता सर्वाधिक है। मॉॅंने अपना संदूक मॅंगाया। उसमेंसे एक कीमती शाल आजके अव्यवस्थित जन-जीवनमें आहार-विहारकी निकालकर उस पुत्रको दे दिया। फिर इसी तरह माँ अन्य अनियमितता तथा अत्यधिक भाग-दौडके कारण नानाविध पुत्रोंको भी स्नेहपूर्वक किसीको अँगूठी तो किसीको रोग संक्रान्त होते जा रहे हैं, जिनमें उदर रोग प्रमुख हैं। कपड़ा अपनी निशानीके तौरपर निकालकर देने लगीं। उदरकी अव्यवस्थितिके कारण ही बहुधा नाना प्रकारके सभीने उसे सिर झुकाकर प्रेमपूर्वक ले लिया। किंतु अन्य रोगोंका भी उद्भव देखा जाता है। बार-बार शौच विजय यह देखकर आँसू भरकर बोला—'माँ! क्या तुम होना, अरुचि होना, दूषित डकारें आना, पेटमें वायुका हम सबको छोड़कर जा रही हो?' बढ़ना आदि समस्याओंके निवारणका अति सरल एवं 'नहीं, लेकिन इतनी अधिक उम्र हो गयी है कि सुलभ उपाय इस प्रकार है—देशी बेरकी दस-बारह हरी पता नहीं कब ऊपरवाला बुला ले। इसलिये मैं चाहती कोमल पत्तियाँ पानीसे धो लेना चाहिये, तदुपरान्त तीन हूँ कि तुम लोगोंको अपनी कोई यादगार निशानी दे दूँ।' अथवा पाँच कालीमिर्च एवं आधा तोला शक्करके साथ माँने समझाते हुए कहा। उन्हें सिलपर भली-भाँति पीस ले। तत्पश्चात् उसे एक कप विजय बोला—'नहीं, मुझे कोई निशानी नहीं पानीमें घोलकर पीना चाहिये।यह प्रयोग वयस्कोंको दिनमें चाहिये। मैं चाहता हूँ कि तुम हमेशा हमारी आँखोंके तीनसे चारबारतक करना चाहिये। बालकों आदिके लिये सामने रहो।' उसने माँका एक फोटो निकाला और औषधिकी मात्रा आधी देना उचित है। एकाएक उत्पन्न हुई उसके नीचे माँसे अपना नाम लिखनेको कहा। माँ साक्षर व्याधिके निवारणार्थ प्राथमिक तौरपर यह प्रयोग सर्वथा निरापद एवं स्वानुभूत है।—डॉ० श्रीनिवास पाण्डेय थीं। उन्होंने अपना नाम उसपर लिख दिया। विजय उस फोटोको चूमते हुए बोला—'माँ! मैं केवल इसी निशानीको अपने पास रखूँगा। आपका कपड़ा, जेवर सिर्फ आपका अपरिचित युवकोंकी नि:स्वार्थ सहायता है। वह मुझे नहीं चाहिये।' घटना ३१ अगस्त, सन् २०१५ ई० की है। मेरे सभी भाइयोंको अब अपना-अपना सामान हलका पूज्य पिताजी एवं पूज्या माताजीका चौथका श्राद्ध था, लगने लगा और सभी भाई कहने लगे कि माँकी असली दोनोंकी श्राद्धतिथि एक ही थी। मरनेसे पूर्व पिताजी मुझे बता गये थे कि हम दोनोंकी एक ही तिथि होगी ताकि निशानी तो विजय भैयाको ही मिली। - केदारनाथ 'सविता' तुझे श्राद्ध करनेमें परेशानी न हो। मैं कालेजसे लगभग (8) अतिसारकी सुगम चिकित्सा ११ बजे घरके लिये चला; जिससे समयपर पहुँचकर सुदीर्घकालसे ही भारतीय जन-जीवन प्रकृतिके श्राद्ध कर सकूँ, घरपर पण्डितजीको बुलावा दिया हुआ विभिन्न उपादानोंपर अवलम्बित रहा है। इनमें वनस्पतियोंने था, वह घर पहुँच भी गये थे। मानवको पोषणके साथ-साथ नैरुज्य भी प्रदान किया जब मैं रास्तेमें आ रहा था तो मेरी नजर दाबके पौधेपर पड़ी। मैं गाड़ीको किनारे लगाकर दाब तोड़नेके है। भारतीय चिकित्साशास्त्रका यह दृढ़ विश्वास है कि ऐसी कोई वनस्पति है ही नहीं, जो औषधिके रूपमें लिये उतर गया, किंतु जब दाब तोड़कर मैंने अपनी स्वीकार न की जा सके। इन वनस्पतियोंमें एक प्रसिद्ध गाडीकी ओर दुष्टि दौडायी तो मेरे पाँवके नीचेसे धरती

खिसक गयी। गाडी अपनी जगहपर न होकर धीरे-धीरे

खिसकती हुई सड़कके दूसरे किनारेपर जा रही थी, और

वनस्पति 'बदरी' है, जिसे लोकभाषामें 'बेर' कहा जाता

है। बेरके पत्ते, फल, फुल तथा काष्ठ—इन सभीकी

| संख्या १०] पढ़ो, समझं                                   | पढ़ो, समझो और करो ४९                                   |  |  |  |  |
|---|--|--|--|--|--|
| ************************************                    |  |  |  |  |  |
| इस प्रकार खिसक रही थी, जैसे कोई उसे खींच रहा            | आरामसे घर आया, प्रेमसे श्राद्ध किया, और सोचने लगा      |  |  |  |  |
| हो, भागकर जब गाड़ीके पास पहुँचनेकी कोशिश की,            | कि आज पितरोंकी कृपाका प्रत्यक्ष प्रमाण मिल गया।        |  |  |  |  |
| तबतक गाड़ी दो पेड़ोंके बीचसे होते हुए नीचे खेतोंमें     | साथ ही उन अपरिचित नवयुवकोंको भी धन्यवाद दिया,          |  |  |  |  |
| उतर गयी। मैं हैरान-परेशान सोच रहा था, कि अब क्या        | जिन्होंने निष्काम भावसे मेरी सहायता की।                |  |  |  |  |
| करूँ?   | —डा० देबी प्रसाद भट्ट                                  |  |  |  |  |
| वहाँपर एक मजदूर खड़ा था, वह कहने लगा अब                 | $(\xi)$  |  |  |  |  |
| तो आपको क्रैन बुलवानी पड़ेगी या कोई ट्रैक्टर जो         | पूजा-उपासनाके साथ दान भी दिया करो                      |  |  |  |  |
| गाड़ीको खींचकर ऊपर ला सके। घर भी अभी १२                 | कौशांबीपुरका राजा विष्णुश्री प्रजापालक एवं             |  |  |  |  |
| कि॰मी॰ दूर था। मैंने मन-ही-मन स्वर्गीय आत्माओंसे        | धर्मनिष्ठ था। राजकाजसे समय निकालकर वह भगवान्की         |  |  |  |  |
| प्रार्थना की कि हे पितरो! मैं तो आप सबके श्राद्धके लिये | पूजा-उपासनामें लीन रहता था। भगवान्की उपासना            |  |  |  |  |
| घर जा रहा था, किन्तु यह क्या रुकावट पड़ गयी, अब         | एवं तीर्थोंकी यात्राके बाद भी उसे लगता था कि भगवान्    |  |  |  |  |
| क्या करूँ ?   | उसपर कृपा नहीं कर रहे हैं। इसी सोच-विचारमें उसका       |  |  |  |  |
| अचानक एक सैन्ट्रो गाड़ी जिसमें चार नवयुवक               | मन अशान्त रहने लगा।                                    |  |  |  |  |
| सवार थे, आकर मेरे पास रुक गयी, ड्राइवर सीटपर बैठे       | एक बार समाधिगुप्त नामक सन्तका राज्यमें                 |  |  |  |  |
| युवकने मुझसे पूछा—'अंकल! यह गाड़ी आपकी है ?'            | पदार्पण हुआ। राजाने रानी एवं राजकुमारसहित उद्यानमें    |  |  |  |  |
| मैंने सारी घटना उसको बता दी, उसने कहा कि 'यह            | सन्तके दर्शन किये। उनके लिये भोजनादिकी सम्यक्          |  |  |  |  |
| घासका आपने क्या करना है ?' उसको भी मैंने दाबके          | व्यवस्था की। सत्संगके दौरान राजाने कहा—'महाराज!        |  |  |  |  |
| बारेमें बताया, तो वह कहने लगा कि आपको श्राद्ध           | मैं प्रजाका पूरा ध्यान रखता हूँ। उसे कोई कष्ट नहीं     |  |  |  |  |
| करना है, इतना कहते हुए उसने अपने साथियोंसे              | पहुँचने देता। पूजा–उपासनामें खूब मन लगाता हूँ, इसके    |  |  |  |  |
| कहा—'आओ रे! गाड़ी निकालते हैं।' उनमेंसे एक              | बाद भी मनमें पूर्ण शान्तिकी अनुभूति नहीं होती। क्या    |  |  |  |  |
| खेतसे फावड़ा उठा लाया तथा एक जगहपर खुदाईकर              | करना चाहिये?   |  |  |  |  |
| रास्ता प्लेन बना दिया, ड्राइवर लड़केने कहा—'लाओ,        | सन्त समाधिगुप्तने पूछा—'क्या उपासनाके साथ-             |  |  |  |  |
| अंकल! चाबी दो'। मैंने चाबी उसको पकड़ा दी, उसने          | साथ सुपात्र, गरीबों एवं जरूरतमन्दोंको दान देते हो?'    |  |  |  |  |
| अपने साथियोंसे कहा—'तुम लोग पीछेसे गाड़ीको उठा          | राजाने कहा—'दान तो मैंने कभी नहीं दिया।'               |  |  |  |  |
| देना, बाकी मैं देख लूँगा।'                              | सन्तने कहा—'सेवा-परोपकारके लिये दान देनेसे             |  |  |  |  |
| उसने गाड़ी स्टार्ट की तथा इधर-उधर जगह                   | ही शान्ति प्राप्त होगी।'                               |  |  |  |  |
| बनाकर उस जगहपर लाकर कहने लगा, कि आओ, जोर                | सन्तकी प्रेरणासे राजाने प्रतिदिन रातके समय             |  |  |  |  |
| लगाओ। मैं तो तब होशमें आया, जब वह युवक मेरे             | गरीबोंकी झोपड़ियोंमें जाना शुरू कर दिया। वे उन्हें     |  |  |  |  |
| पास आया और बोला—'लो, अंकल! आपकी गाड़ी                   | अन्न, कपड़ा एवं अन्य सामग्री देने लगे। कुछ ही दिनोंमें |  |  |  |  |
| सड़कपर आ गयी है और गाड़ी ठीक है' मैंने उसका             | राजाको पूर्ण मानसिक शान्तिकी अनुभूति होने लगी।         |  |  |  |  |
| नाम जानना चाहा तो उसने कहा—'अंकल! घर जाकर               | एक दिन उन्हें लगा कि भगवान् सामने खड़े आशीर्वाद        |  |  |  |  |
| श्राद्ध करो और श्याम बाबाकी जय बोलो', और इतना           | दे रहे हैं। राजा विष्णुश्रीने राजपाट पुत्रको सौंपकर    |  |  |  |  |
| कहते ही अपनी गाड़ीमें बैठ चारों युवक चले गये। मैं       | साधु-वेश धारण कर लिया।—धर्मेन्द्र गोयल<br>•••          |  |  |  |  |

मनन करने योग्य गर्भस्थ शिशुपर माताके जीवनका प्रभाव भक्तश्रेष्ठ प्रह्लादजीको दैत्यराज हिरण्यकशिपु दैत्य अपने नायकके अभावमें पराजित हो गये और अपने भगवानुके स्मरण-भजनसे विरत करना चाहता था। स्त्री-पुत्रादिको छोडकर प्राण बचाकर इधर-उधर भाग उसकी धारणा थी कि 'प्रह्लाद अभी बालक है, उसे गये। देवताओंने दैत्योंके सूने घरोंको लूट लिया और किसीने बहका दिया है। ठीक ढंगसे शिक्षा मिलनेपर उनमें आग लगा दी। लूट-पाटके अन्तमें देवराज इन्द्र उसके विचार बदल जायँगे।' इस धारणाके कारण मेरी माता कयाधूको बन्दिनी बनाकर अमरावती ले चले। मार्गमें ही देवर्षि नारद मिले। उन्होंने देवराजको डाँटा-दैत्यराजने प्रह्लादको शुक्राचार्यके पुत्र षण्ड तथा अमर्कके आश्रममें पढनेके लिये भेज दिया था और उन दोनों 'इन्द्र! तुम इस परायी साध्वी नारीको क्यों पकडे लिये आचार्योंको आदेश दे दिया था कि वे सावधानीपूर्वक जाते हो? इसे तुरंत छोड़ दो।' उसके बालकको दैत्योचित अर्थनीति, दण्डनीति, राजनीति इन्द्रने कहा—'देवर्षि! इसके पेटमें दैत्यराजका बालक है। हम दैत्योंका वंश नष्ट कर देना चाहते हैं। आदिकी शिक्षा दें। इसका पुत्र उत्पन्न हो जाय तो उसे मैं मार डालूँगा और आचार्य जो कुछ पढ़ाते थे, उसे प्रह्लाद पढ़ लेते थे, स्मरण कर लेते थे; किंतु उसमें उनका मन नहीं तब इसे छोड़ दुँगा।' लगता था। उस शिक्षाके प्रति उनकी महत्त्वबृद्धि नहीं नारदजीने बताया—'भूलते हो, देवराज! इसके थी। जब दोनों आचार्य आश्रमके काममें लग जाते, तब गर्भमें भगवान्का महान् भक्त है। तुम्हारी शक्ति नहीं कि प्रह्लाद दूसरे सहपाठी दैत्य-बालकोंको अपने पास बुला तुम उसका कुछ भी बिगाड़ सको।' लेते। एक तो वे राजकुमार थे, दूसरे उन्हें मारनेके देवराजका भाव तत्काल बदल गया। वे हाथ जोड़कर बोले—'देवर्षि क्षमा करें! मुझे पता नहीं था कि दैत्यराजके अनेक प्रयत्न व्यर्थ हो चुके थे; इससे सब इसके गर्भमें कोई भगवद्भक्त है।' इन्द्रने मेरी माताकी दैत्य-बालक उनका बहुत सम्मान करते थे। प्रह्लादके परिक्रमा की। गर्भस्थ शिशुके प्रति मस्तक झुकाया और बुलानेपर वे खेलना छोड़कर उनके पास आ जाते और ध्यानसे उनकी बातें सुनते। प्रह्लाद उन्हें संयम, सदाचार, मेरी माताको छोडकर चले गये। नारदजीने मेरी मातासे कहा—'बेटी! मेरे आश्रममें जीवदयाका महत्त्व बतलाते; सांसारिक भोगोंकी निस्सारता समझाकर भगवानुके भजनकी महिमा सुनाते। बालकोंको चलो और जबतक तुम्हारे पतिदेव तपस्यासे निवृत्त होकर न लौटें, तबतक वहीं सुखपूर्वक रहो।' देवर्षि तो यह सब सुनकर बड़ा आश्चर्य होता। दैत्य-बालकोंने पूछा—'प्रह्लादजी! तुम्हारी अवस्था आश्रममें दिनमें एक बार आते थे, किंतु मेरी माताको छोटी है। तुम भी हमलोगोंके साथ ही राजभवनमें रहे वहाँ कोई कष्ट नहीं था। वह आश्रमके अन्य ऋषियोंकी हो और इन आचार्योंके पास पढ़ने आये हो। तुम्हें ये सेवा करती थी। देवर्षि नारदजी उसे भगवद्धक्तिका सब बातें कैसे ज्ञात हुईं?' उपदेश किया करते थे। देवर्षिका लक्ष्य मुझे उपदेश प्रह्लादजीने बतलाया—भाइयो! इसके पीछे भी एक करना था। माताके गर्भमें ही वे दिव्य उपदेश मैंने सुने। इतिहास है। मेरे चाचा हिरण्याक्षकी मृत्युके पश्चात् मेरे बहुत दिन बीत जानेके कारण और स्त्री होनेसे घरके पिताने अपनेको अमरप्राय बनानेके लिये तपस्या करनेका कामोंमें उलझनेके कारण माताको तो वे उपदेश भूल

अवापिक्यविमें देनावर्रोंने देन्द्रपूरीय https://dec.gg/bharma | MADE WITH LOVE BY A शीमाना मार्गिक करा कि कार्य

गये; किंतु देवर्षिकी कृपासे मुझे उनके उपदेश स्मरण हैं।

निश्चय किया और वे मन्दराचलपर चले गये। उनकी

#### गीता-दैनन्दिनी — गीता-प्रचारका एक साधन

(प्रकाशनका मुख्य उद्देश्य—नित्य गीता-पाठ एवं मनन करनेकी प्रेरणा देना।)

व्यापारिक संस्थान दीपावली/नववर्षमें इसे उपहारस्वरूप वितरित कर गीता-प्रचारमें सहयोग दे सकते हैं।

गीता-दैनन्दिनी (सन् २०१९) अब उपलब्ध-मँगवानेमें शीघ्रता करें।

पूर्वकी भाँति सभी संस्करणोंमें सुन्दर बाइंडिंग तथा सम्पूर्ण गीताका मूल-पाठ, बहुरंगे उपासनायोग्य चित्र, प्रार्थना,

कल्याणकारी लेख, वर्षभरके व्रत-त्योहार, विवाह-मृहर्त, तिथि, वार, संक्षिप्त पञ्चाङ्ग, रूलदार पृष्ठ आदि। <mark>पस्तकाकार—विशिष्ट संस्करण (कोड 1431)—दैनिक पाठके लिये गीता-मुल, हिन्दी-अनुवाद</mark> मुल्य ₹ ८०

सुन्दर प्लास्टिक आवरण (कोड 503)—गीताके मुल श्लोक एवं सुक्तियाँ मुल्य ₹६५ पॉकेट साइज— रंगीन सजिल्द आवरण (कोड 506)— गीता-मुल श्लोक मुल्य ₹ ३५ बँगला ( कोड 1489 ), ओडिआ ( कोड 1644 ), तेलग ( कोड 1714 ) पुस्तकाकार—विशिष्ट संस्करण, अक्टूबर

मासमें उपलब्धि सम्भावित प्रत्येकका मुल्य ₹ ८०

आदर्श जीवन-मूल्योंको रेखाङ्कित करते हैं। मूल्य ₹२६०

### नवीन प्रकाशन-छपकर तैयार

## श्रीमद्भागवतमहापुराण ( श्रीधरीटीका एवं गुजराती व्याख्या )-के विभिन्न खण्डोंका विवरण

| कोड  | विवरण                                 | मूल्य ₹ | कोड  | विवरण  | मूल्य ₹ |
|------|---------------------------------------|---------|------|--|---------|
| 2156 | श्रीमद्भागवतमाहात्म्य, प्रथम, द्वितीय |         | 2158 | सप्तम, अष्टम एवं नवम स्कन्ध खण्ड ३           | ३५०     |
|      | एवं तृतीय स्कन्ध खण्ड १               | 340     | 2159 | दशम स्कन्ध [ पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध] खण्ड ४ | ३५०     |
| 2157 | 2                                     |         | 2160 | एकादश, द्वादश स्कन्ध एवं                     |         |
|      |                                       |         |      | श्लोकानुक्रमणिका खण्ड ५                      | ३५०     |

<mark>श्रीभक्तमाल (कोड 2161) गुजराती, ग्रन्थाकार</mark>—भक्तमाल परमभागवत श्रीनाभादासजी महाराजकी काव्यमयी रचना है। इसमें चारों युगों, विशेषकर कलियुगके भक्तोंका बडे ही रोचक ढंगसे वर्णन हुआ है। मुल्य ₹ २६० **(कोड 2066)** हिन्दीमें मुल्य ₹ २३० भी उपलब्ध।

सरल गीता (कोड 2149) मराठी, श्लोकार्थसहित, [पुस्तकाकार]—प्रस्तुत पुस्तकको <mark>गीताजीका सही उच्चारण सीखनेवाले सामान्य पाठकोंकी सुविधाके लिये प्रत्येक चरणके कठिन शब्दोंको</mark> सामासिक चिह्नोंसे अलग करके दो रंगोंमें छापा गया है। इससे श्लोकके प्रत्येक चरणको समझनेमें सहायता मिलेगी। (कोड 2099) हिन्दी, (कोड 2136) ओडिआ, (कोड 2163) नेपाली। प्रत्येकका मुल्य ₹ ३५, **(कोड 2152)** अंग्रेजी सजिल्द। मुल्य ₹ ६०

अब उपलब्ध — संत–अङ्क (कोड 627) ग्रन्थाकार—इसमें उच्चकोटिके अनेक संतों—प्राचीन, अर्वाचीन, मध्ययुगीन एवं कुछ विदेशी भगविद्वश्वासी महापुरुषों तथा त्यागी-वैरागी महात्माओंके ऐसे आदर्श जीवन-चरित्र हैं, जो पारमार्थिक गतिविधियों, सार्वभौमिक सिद्धान्तों, त्याग-वैराग्यपूर्ण तपस्वी जीवन-शैलीको उजागर करके

गीताभवन आयुर्वेद संस्थान पो० स्वर्गाश्रमद्वारा गंगाजलसे निर्मित ओषधियाँ गीताप्रेस, गोरखपुरकी अनेक शाखाओंमें एवं अनेक स्टेशन-स्टालोंपर भिन्न-भिन्न परिमाणमें उपलब्ध हैं। पो० — स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश ( उत्तराखण्ड ), पिन 249304; फोन नं० 0135-2440054

खुल गया है— ग्वालियर [ मध्यप्रदेश ] रेलवे स्टेशन प्लेटफार्म नं० 1 पर गीताप्रेस, गोरखपुरका पुस्तक-स्टाल



प्र० ति० २०-९-२०१८ रंजि० समाचारपत्र—रजि०नं० २३०८/५७ पंजीकृत संख्या—NP/GR-13/2017-2019

LICENSED TO POST WITHOUT PRE-PAYMENT | LICENCE No. WPP/GR-03/2017-2019

जनवरी सन् २०१९ ( कल्याण-वर्ष ९३ )-का विशेषाङ्क <sup>'</sup>श्रीराधामाधव-अङ्क सच्चिन्मयी जगदम्बा श्रीराधा सच्चिदानन्दघन परमात्मप्रभु श्रीमाधवकी चिद्विलासरूपा आह्लादिनी शक्ति

<mark>हैं। श्रीराधारानी श्रीकृष्णकी जीवनरूपा हैं और श्रीकृष्ण ही श्रीराधाके जीवन हैं। श्रीराधारानी महाभावस्वरूपा</mark> <mark>हैं और प्रियतम श्रीकृष्णको आह्</mark>बाद प्रदान करती रहती हैं। उपासना-जगत्में भक्तोंकी अभिलाषापूर्तिके लिये

<mark>श्रीराधामाधवका युगल अवतरण हुआ है। भगवान् श्रीकृष्ण ही अपने नित्य सौन्दर्य-माधुर्य-रसका समास्वादन</mark>

करनेके लिये स्वयं अपनी ह्लादिनीशक्तिको श्रीराधास्वरूपमें अभिव्यक्त किये हुए हैं। सुहृद् पाठकों—श्रद्धाल् भक्तोंको श्रीराधामाधवकी मधुरातिमधुर लीलाओंका दर्शन करानेहेतु परमात्मप्रभुकी

कुपासे इस बार विशेषाङ्क रूपमें [जनवरी २०१९ में] 'श्रीराधामाधव-अङ्क' प्रकाशित करनेका निर्णय लिया <mark>गया है। इसमें मुख्य रूपसे राधामाधव-तत्त्वविचार, राधामाधवकी उपासनाके विविध रूप, भक्तिजगत्के</mark> <mark>श्रीसर्वस्व राधामाधव, श्यामसुन्दर एवं राधारानीकी अन्तरंग तथा बाह्यलीला, लीलाके सहचर, वृन्दावन एवं</mark> <mark>मथुराधाम तथा राधामाधवके भक्तवृन्दों</mark>की रोचक, कलात्मक, लीलात्मक एवं भक्तिरसकी सामग्री<mark>की प्राथिमकता</mark> रहेगी जो आत्मकल्याणकारी साधकों तथा आस्तिकजनों—सभीके लिये परम मंगलमय एवं हितकारी होगी।

> वार्षिक शुल्क ₹ २५०, पञ्चवर्षीय शुल्क ₹ १२५० ♦ अवधि-जनवरीसे दिसम्बर ♦ अब 'कल्याण'के मासिक अङ्क Kalyan-gitapress.org पर निःशुल्क पढ़ें।

#### कल्याणके पाठकोंसे नम्र निवेदन

कल्याणके मासिक अङ्क आपको निश्चित मिले इसके लिये आपका मोबाइल नम्बर हमारे पास होना आवश्यक है। कृपया अपना मोबाइल नं० ग्राहक संख्याके साथ हमें मो०नं० 9648916010 अथवा 6306193176 पर WhatsApp अथवा SMS द्वारा अवश्य सूचित करें। जिससे आपको डिस्पैचके साथ ही SMS द्वारा सूचना दी जा सके और आप पोस्टमैनसे जानकारी करके अङ्क प्राप्त कर सकें।

#### आवश्यक सूचना

पिछले कुछ समयसे हमें इस प्रकारकी सूचनाएँ प्राप्त हो रही हैं कि गीताप्रेसकी पुस्तकोंको बेचनेवाले <mark>कुछ विक्रेता गीताप्रेस प्रकाशनोंके साथ-साथ अपनी दुकान, स्टॉल या प्रचार-वाहनपर गीताप्रेसकी नकली</mark> <mark>पुस्तकें तथा विभिन्न प्रकारकी वस्तुएँ—जैसे तुलसी एवं रुद्राक्षकी माला, अँगूठी, शंख तथा धूप आदि</mark> भी बेचते हैं और उसे गीताप्रेसकी बताकर ग्राहकोंको भ्रमित करते हैं।

हम अपने सभी प्रेमी-श्रद्धालु पाठकोंको सावधान करना चाहते हैं कि वे इस प्रकारके किसी भी झुठे <mark>दावेसे भ्रमित होकर ठगे न जायँ; क्योंकि</mark> गीताप्रेस अपने प्रकाशनके अतिरिक्त किसी भी <mark>प्रकारकी पूजा-सामग्री</mark> <mark>न तो स्वयं बनाता है और न उसे प्रचारित करता है। गीताप्रेसद्वारा अपना कोई प्रचार-वाहन भी नहीं चलाया</mark> <mark>जा रहा है। अतः विशेष सावधान रहना चाहिये।</mark> व्यवस्थापक—गीताप्रेस, गोरखपुर